पंचसार - दुग्ध, शर्करा, पिप्पली, शहद, घृत

तुलनात्मक अध्ययन

A.H.C शा.

- त्रिसूत्र – हेतु, लिंग, औषध, त्रिजात - इलायची, दालचिनी, तेजपत्र
  त्रिदण्ड – सत्व, आत्मा, शरीर
  त्रिस्थूण – वात, पित्त, कफ VPK
  त्रिस्तम्भ – वात, पित्त, कफ VPK
  त्रयउपस्तम्भ – आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य
  त्रिस्कन्ध – हेतु, लिंग, औषध
  स्कन्धत्रय – हेतु,, दोष, द्रव्य

। धात्वात्मक - चेतना = आत्मयुक्तपुरुष
षड्धात्वात्मक - पंचमहाभूत + आत्मा
चतुर्विंशति 24 - पंचज्ञानेन्द्रिय
15 पंचकर्मेन्द्रिय
पंचविषय
8 - अष्टप्रकृति

- **धूमपान भेद –**
  चरक – 3
  सुश्रुत – 5
  शार्गंधर – 6
  च.सू.शा. - 356

- **धूमनैत्र प्रमाण (अंगुल प्रमाण में)** मन - 1

चरक	सुश्रुत	शार्गंधर
प्रायोगिक–36	48	शमन–40
स्नेहिक–32	32	मृदु–32
वैरैचनिक 24	24	तीक्ष्ण–24
	कासघ्न–16	कासघ्न–16
	वामक–16	वामक–10
	नेत्रव्रण धूपन - 8	व्रण धूमपान–10

– सुश्रुत ने व्रणधूपन नैत्र की लम्बाई 8 अंगुल मानी है।
– वाग्भट ने व्रण धूपन नेत्र की लम्बाई 10 अंगुल मानी है।

- **प्रायोगिक धूमपान के काल –**
  चरक – प्रायोगिक (8) – (स्नान, भोजन, वमन, छींक, दात्तौन, नस्य, अंजन एवं निद्रा के पश्चात)
  वाग्भट (8) – प्रा० – 8, मृदु – 11, तीक्ष्ण – 5
  सुश्रुत –(12)
  प्रायो – (4) दन्तप्रक्षालन, स्नान, भोजन व शस्त्रकर्मोपरान्त
  स्नेहिक – (5) मूत्रत्याग, मैथुन, क्ष्वथु, हंसने एवं क्रोध के बाद
  वैरैचनिक – (3) स्नान, दिवास्वाप व छर्दि के पश्चात

- **निद्रा के भेद –**
  चरक (6) – तमोभवा, श्लेष्म समुदभवा, मनः शरीरश्रमसंभवा, आगन्तुकी, व्याध्यनुवर्तिनी, रात्रिस्वभाव प्रभवा
  सुश्रुत (3) – वैष्णवी, वैकारिकी व तामसी, स्वाभाविक
  वाग्भट (7) – चरकोक्त मनः शरीश्रमसंभवा को अलग–अलग करके सात भेद माने है।

- **दधी भेद –** सुश्रुत – 7, भाव प्रकाश – 5

- **अधारणीय वेग –**
  चरक – 13
  वाग्भट – 13 (चरकोक्त उदगार के स्थान पर कास का वेग माना है)

- **स्नेह की प्रविचारणाएें –**
  चरक – 24, 64 वाग्भट – 64 (रसानुसार), काश्यप – 20.
- **स्वेदन भेद –**
  साग्नि स्वेद – चरक–13, सुश्रुत – 4, वाग्भट – 4, काश्यप – 8
  निराग्नि स्वेद – चरक – 10, सुश्रुत – ~~7~~, 8 10
- **शिरोरोग –** चरक (5) – (वा0, पै0, श्ले0, सान्निपातिक व कृमिज) VPKS
  सुश्रुत – 11 (वा0, पै0, क0, सान्निपातिक, क्षयज, कृमिज
  R, सूर्यावर्त, अनन्तवात, अर्धावभेदक, शंखक)
  माधवकर – 11, वाग्भट – 10
- **हृद रोग –** चरक – 5 (वा0 पै0, श्ले0, सा0, कृमिज) VPKSKu
  सुश्रुत – 4 (सान्निपातिक नहीं माना हैं)
- **प्रमेह पिडिका –**
  चरक – 7 (कफज–3, पित्तज–4), सुश्रुत – 10, वाग्भट – 10,
  काश्यप – 8 (चरकोक्त 7 + अरूंषिका), भोज – 9 (कुलत्थिका भी मानी है)
- **शोथ के उपद्रव –** चरक–7, सुश्रुत – 9
- **अर्न्तविद्रधि के स्थान –**
  चरक –9, सुश्रुत – 10 (चरक से अतिरिक्त गुदा को भी माना है।
- **अग्रय द्रव्य –** चरक – 152, अ0स0 – 155, अ0हृ0 55
- **कल्पनाऐं –**
  चरक–5 (स्वरस, कल्क, श्रृत, शीत, फाण्ट)
  सुश्रुत – 6 (चरकोक्त 5+क्षीर कल्पना)
  काश्यप – 7 (चरकोक्त 5+ चूर्ण व अभिषव)
- **मधुभेद –**
  चरक–4 (भ्रामर, पौत्तिक, माक्षिक, क्षौद्र)
  सुश्रुत 8 (चरकोक्त + दाल, आर्ध्य, औददालक, छात्र)
- **आहारभेद –**
  चरक–4 (अशित, खादित, पीत, लीढ़)
  भावप्रकाश – 6
  शार्गंधर – 6 (चौष्य व चर्व्य पृथक से माने है)
- **कुक्षि के भेद –**
  चरक – 3, वाग्भट – 4, काश्यप – 4,
- **उदावर्त –** चरक–6, सुश्रुत – 13, काश्यप – 6, वा - 14
- **शुक्रदोष –** चरक – 8
  सुश्रुत–11 (साध्य 4, कष्टसाध्य–5, असाध्य–2)
- **आर्त्तव काल –** चरक – 5 रात्रि, सुश्रुत – 3 दिन, वाग्भट – 3 दिन
  हारीत – 7 दिन, आधुनिक – 3–5 दिन

- नपुंसक भेद – (क्लैब्य + नपुंसक) = 8

चरक – 4 (ध्वजोपघात, बीजोपघात, वृद्धावस्थाजन्य, शुक्रक्षयजन्य)

सुश्रुत – 5 (4 सशुक्र–आसेक्य, सौगन्धिक, कुम्भीक व ईर्ष्यक)

8 | 1–अशुक्र – षण्ड (नर षण्ड, नारीषण्ड)

- क्लैब्य –

सुश्रुत – 6 (मानसिक, शुक्रक्षयज, अतिमैथुनजन्य शुक्रवेगावरोधज, मेढ्ररोगजन्य व सहज)

– मेढ्ररोगजन्य व सहज असाध्य

चरक – 4

- बलवृद्धिकर भाव – 13

शरीर वृद्धिकर भाव – (चरक–4, वाग्भट–17)

आहारपरिणामकर भाव–6 (अष्टांग हृदय में वर्णित नहीं)

- कोष्ठांग –

चरक – 15 (फुफ्फुस को कोष्ठांग नहीं माना हैं।)

सुश्रुत – 8, वाग्भट – 8, काश्यप – 13

- आशय – सुश्रुत – 7 (स्त्री में 8), काश्यप – 7

- त्वचा भेद

चरक – 6

सुश्रुत – 7

अष्टांग संग्रह – ~~7~~ 6

अष्टांग हृदय – 6 7

आधुनिक – 7

धमनियाँ

चरक – 200

सुश्रुत – 24

- कुष्ठ –

चरक – 7, 18 व असंख्य भेद

सुश्रुत – 18

भेल – 18 (9 साध्य, 9 असाध्य)

- उन्माद भेद –

चरक – 5 (वा0, पै0, श्ले0, सा0 व आगन्तुज) VPKSA

सुश्रुत–6 (चरकोक्त 5 + विषज)

माधवकर – 6 (सुश्रुतानुसार ही)

- शोथ भेद –

चरक – 2 व 3,

वाग्भट – 3 व 9,

सुश्रुत – 2, 5 व 6

माधवकर – 9

- ग्रंथि भेद –

चरक – 6 (वातिक, पै0, श्ले0, सिराज, मांसज, मेदोज)

सुश्रुत – 5 (वा0, पै0, श्ले0, सिराज, मेदोज) मांसज

वाग्भट – 9 (चरकोक्त 6 + अस्थिज, व्रणज, रक्तज)

- **वृद्धि भेद –**
  चरक – 3 (व्रघ्न, मूत्रवृद्धि, मेदोजवृद्धि)
  सुश्रुत – 7
- **श्लीपद –**
  चरक – 1, सुश्रुत – 3
- **भगन्दर –**
  चरक – भेद वर्णित नहीं है।, सुश्रुत – 5 भेद, वाग्भट – 8 भेद
- **अर्शभेद –**
  चरक – 2 (सहज व उत्तरकालज/आर्द्र व शुष्क)
  सुश्रुत – 6
- **अर्श के दूष्य –**
  चरक – 3 (मेद, मांस व त्वक), सुश्रुत – 2 (त्वक व मांस)
- **पाण्डु भेद –**
  चरक – 5 (वा0, पै0, श्ले0, सा0 व मृद्भक्षणजन्य)
  सुश्रुत – 4 (पानकी, लाघरक व अलसाख्य पाण्डु के पर्याय बताये है।)
  माधव – 5 (चरकोक्त)
  हारीत – 8 (चरकोक्त 5 + 2 कामला + 1 हलीमक)
- **कामला के दूष्य –**
  चरक – रक्त, मांस व त्वचा, सुश्रुत – केवल रक्त
- **हिक्का भेद –**
  चरक – 5 (अन्नजा, व्यपेता, क्षुद्रहिक्का, महाहिक्का, गंभीराहिक्का)
  सुश्रुत – 5 (चरकोक्त व्यपेता के स्थान पर यमला मानते है)
- **अतिसार भेद –**
  चरक – 6 (वा0, पै0, श्ले0, सा0, भयज व शोकज)
  सुश्रुत – 6 (चरकोक्त भयज के स्थान पर आमज अतिसार माना है)
  वाग्भट – 6 (चरकोक्त माने है)
  माधव – 6 (सुश्रुतोक्त माने है)
- **विसर्प भेद –**
  चरक – 7 (वा0 पै0, श्ले0, सा0, आग्नेय, ग्रंथि व कर्दम)
  सुश्रुत – 5
- **तृष्णा भेद –**
  चरक – 5 (वा0, पै0, आमज, उपसर्गज व क्षयज)
  सुश्रुत – 7 (वा0, पै0, श्ले0, आमज, क्षतज, क्षयज, भक्तनिमित्त)
- **विषवेग –**
  मनुष्य में – चरक – 8
  सुश्रुत – 7
  जानवरो में – 4, पक्षियो में – 3

- **स्थावर विष संख्या –**
  चरक – 21, सुश्रुत – 55, भा0प्र0 – 9
- स्थावरविष के अधिष्ठान – 10
- जांगम विष के अधिष्ठान – 16
- **विष के गुण –**
  चरक – 10 (अर्निदेश्य रस गुण चरक ने माना है)
  सुश्रुत – 10 (अपाकी गुण सुश्रुत मानते है)
  वाग्भट – 11 (अर्निदेश्य रस एवं अपाकी गुण दोनों माने है)
  शार्गधर – 8 (छेदी, मदावह, योगवाही आदि गुण माने है)
- **सर्पभेद –**
  चरक (3) – दर्वीकर, मण्डलीन व राजीमान – 26 : 22 : 10 DMR
  सुश्रुत (5) – दर्वीकर, मण्डलीन, राजीमान, निर्विष, वैकरञ्ज– 26:22:10:12:(3+7)
- **सर्पदंश भेद –**
  सुश्रुत – 3 (सर्पित, रदित, निर्विष)
  वाग्भट – 5 (तुण्डाहत, व्यालीठ, व्यालुप्त, दंष्ट्रक व दंष्ट्रानिपीडित)
- **अरिष्टा बंधन –**
  चरक – मंत्र व अरिष्टा दोनों से विष को बांधने का निर्देश है।
  सुश्रुत – 1 (दंश स्थान से 4 अंगुल ऊपर)
- **शस्त्रकर्म –**
  सुश्रुत – 8 (छेदन, भेदन, लेखन, वेधन, एषण, आहरण, सीवन, विस्रावण)
  चरक – 6 (सुश्रुतोक्त एषण व आहरण कर्म नहीं माने है)
  वाग्भट – 13 (सुश्रुतोक्त 8 + उत्पाटन, कुट्टन, मन्थन, ग्रहण व दहन)
- **व्रणबंधन भेद –**
  चरक – 2 (दक्षिणावर्त्त व वामावर्त्त)
  सुश्रुत – 14
  वाग्भट – 15 (उत्संग बंध वाग्भट की मौलिक देन है)
- **उदावर्त भेद –**
  चरक – 6, सुश्रुत – 13, काश्यप – 6, भेल – 4
- **अश्मरी भेद –**
  चरक – 1, सुश्रुत – 4
- **आवरण भेद –**
  चरक – 42, वाग्भट – 22, सुश्रुत – 13
  माधवकर – आवरणों का वर्णन नहीं किया है।
- **शुक्रदोष**
  चरक – 8
  सुश्रुत – 11 (साध्य–5, कृच्छ्र सा0 – 4, असाध्य – 2)

- **आर्त्तव दोष** – 8
- **औषध काल** –

  चरक – 10, सुश्रुत – 10

  वाग्भट – 11 (निशी को अतिरिक्त माना है)

  शार्गंधर – 5, काश्यप – 10
- **शरीर की लम्बाई** –

  चरक – 84 अंगुल, सुश्रुत – 120 अंगुल

  अष्टांग संग्रह – 84 अंगुल, अष्टांग हृदय – 3½ हाथ
- **क्षौरकर्म** –

  चरक, सुश्रुत व वाग्भट – पक्ष में तीन बार करवाने का निर्देश

  क्षारपाणि – तीन मास में एक बार करवाने का निर्देश + हारीत
- **रोगज्ञानोपाय** –

  चरक – 3 (प्रत्यक्ष, अनुमान व आप्तोपदेश)

  सुश्रुत – 6 (पंचभि श्रोतादिभि प्रश्नेनच)
- **यन्त्र संख्या** –

  सुश्रुत – 101

  वाग्भट – 116 या असंख्य

नाम यंत्र	सुश्रुत	वाग्भट	प्रमाण
स्वस्तिक	24	24	18 अंगुल
संदंश	2	4	16 अंगुल
ताल	2	2	12 अंगुल
नाडी	20	23	आवश्यकतानुसार
शलाका	28	34	आवश्यकतानुसार
उपयंत्र	25	29	आवश्यकतानुसार
कुल	101	116	

- **शस्त्र संख्या** –

  सुश्रुत – 20

  वाग्भट – 26 (सुश्रुतोक्त 20 + कर्णवेधन, खज, कूर्च, सर्पमुख, लिंगनाशवेधनी व कर्त्तरी)
- **मूल नाडी यंत्र** – 12

  डल्हण – 20
- **ऐषणी भेद** –

  चरक – 2, सुश्रुत – 3
- **अनुशस्त्र संख्या** –

  सुश्रुत – 14, वाग्भट – 12
- **क्षार** –

  भेद – चरक – (2) पानीय, प्रतिसारणीय

  सुश्रुत (2) पानीय, प्रतिसारणीय

Pranit

प्रतिसारणीय के मृदु, मध्य व तीक्ष्ण तीन भेद है।

गुण – चरक – 10

सुश्रुत – 8

दोष – 8

- **अग्निकर्म विधि –**

सुश्रुत – 4 (वलय, बिन्दु, विलेखा, प्रतिसारण)
वाग्भट – 7 (सुश्रुतोक्त 4 + अर्द्धचन्द्र, स्वस्तिक, अष्टापद)

- **शल्यकी गतियाँ**

सुश्रुत – 5, अष्टांग संग्रह – 3, अष्टांग हृदय – 5

- **ऋतुकाल**

चरक व सुश्रुत – 12 दिन (गणना मासिक स्राव के अन्तिम दिन से)
वाग्भट व भा0प्र0 – 16 दिन (गणना मासिक स्राव के प्रथम दिन से ही)
मनुस्मृत्ति व विदेह में – 16 दिन

- **रजोदर्शन आयु –**

सुश्रुत – 12 वर्ष
काश्यप – 16 वर्ष
भा0प्र0 – 16 वर्ष

- **मैथुन निषिद्ध दिन**

सुश्रुत – प्रथम तीन दिन एवं 13वीं रात्रि
वाग्भट– प्रथम तीन दिन एवं 11वीं व 13 वीं रात्रि

- **अस्थि संख्या –**

चरक व काश्यप – 360, आयुर्वेद विज्ञान – 264
सुश्रुत व भेल – 300 – शाखा में –120,
मध्य शरीर में –117,
ग्रीवा से ऊपर – 63

आधुनिक – 206

- **संधि संख्या –**

चरक – 200
सुश्रुत – 210 – शाखा में – 68
मध्य शरीर में – 59
ग्रीवा से ऊपर – 83

- **स्नायु –**

चरक – 900
सुश्रुत – 900 – शाखा में – 150X4 = 600
मध्य शरीर में – 230
ग्रीवा से ऊपर – 70

- **पेशी संख्या –**

– चरक – 400
– सुश्रुत – 500 शाखा में – 400
मध्य शरीर में – 67
ग्रीवा से ऊपर – 33

स्त्रियों में 20 पेशियाँ अधिक मिलती है

5–5 स्तनो में

4 – अपत्य पथ में

3 – शुक्र व आर्त्तव प्रवेशिनी

3 – गर्भ छिद्र पर

– आधुनिक – 519 / 639

- **गर्भस्राव संज्ञा –**

  सुश्रुत – 4 मास तक

  वाग्भट व भोज – 3 मास तक

  गर्भपात संज्ञा –

  सुश्रुत – 5–6वाँ मास तक

- **नाडीरोग –** सुश्रुत – 8

  माधव व भा०प्र० –5

- **शूक दोष –**

  सुश्रुत – 18 (साध्य–14, असाध्य–4 मांसार्बुद, मांसपाक, तिलकालक व विद्रधि)

- **क्षुद्ररोग –** चरक – वर्णित नहीं है।

  सुश्रुत – 44, माधव – 43,

  वाग्भट – 36 शार्ंगधर – 60

- **मुखरोग –**

  चरक – 4/94 64

  सुश्रुत – 65

  भोज – 65

  वाग्भट – 75

  शार्ंगधर – 74

  भा०प्र० – 67

  योगरत्नाकर – 67

- **कर्ण रोग –**

  चरक – 4

  सुश्रुत – 28

  वाग्भट – 25

- **नासारोग –**

  चरक – 4, सुश्रुत – 31, वाग्भट – 18

  योग रत्नाकर व भा०प्र० – 34

- **नैत्ररोग –**

  चरक – 4/96

  सुश्रुत – 76 (साध्य – 52, याप्य–7, असाध्य – 17)

  वाग्भट – 94, माधव – 78

- **नैत्रमण्डल –**

  सुश्रुत – 5, वाग्भट – 4

- **हृदय रोग –**

  चरक – 5, सुश्रुत – 4 (सान्निपातिक नहीं माना है)

मूर्च्छा –
चरक – 4
सुश्रुत – 6
माधव – 6

- **मद्य के गुण**
चरक – 10
सुश्रुत – 8
वाग्भट – 10

स्वरभेद –
चरक – 6, सुश्रुत – 6

मूत्राघात –
चरक – 8 / 13, माधव – 13,
सुश्रुत – 12, वाग्भट – 20
(सुश्रुत ने चरकोक्त वस्तिकुण्डल एवं विडविद्यात को नहीं मानकरके मूत्रशुक्र अलग से माना हैं)

- **तंत्रयुक्ति –**
चरक – 36, सुश्रुत – 32
वाग्भट – 36, भा0 प्र0 – 42
भट्टार हरिशचन्द्र – 40

- **मूत्र भेद –**
चरक – 8
सुश्रुत – 9

- **मांसवर्ग**
चरक – 8
सुश्रुत – 6

- मूत्रकृच्छ्र – 8 (चरक) वा0, पै0, श्ले0, सा0, रक्तज, शुक्रज, अश्मरी, शर्करा
मूत्रोपघात – 8 (सुश्रुत) वा0, पै0, श्ले0, सा0, अभिघातज, शकृद, अश्मरी व शर्करा

- **बर्हिमुख स्रोतस –**
सुश्रुत – 9
शार्गधर – 10 (स्त्रियों में 13)
योगवाही स्रोतस – 11 जोड़े (सुश्रुत)

- **मद्यावस्थाएँ**
चरक, सु0 – 3, माधव – 4

- **कृमि –**

चरक	सुश्रुत	वाग्भट
चार भेद	तीन भेद	बर्हिमलजन्य – 2
मलज – 2	पुरीषज – 7	कफज – 7
पुरीषज – 5	रक्तज–7	रक्तज – 6
रक्तज–6	कफज – 6	पुरीषज–5
कफज–7		
20	20	20

- **वय विभाजन –**

चरक (क) बाल (0–30 वर्ष तक) –
(1) 1–16 वर्ष तक – अपरिपक्व धातु बाल
(2) 16–30 वर्ष तक – परिपक्व धातु बाल
(ब) मध्यम – 30–60 वर्ष तक
(ग) जीर्णावस्था – 60–100 वर्ष तक

सुश्रुत – (क) बाल (1–16 वर्ष) – (1) क्षीरप – 1 वर्ष तक
(2) क्षीरान्नाद – 2 वर्ष तक
(3) अन्नाद 2–16 वर्ष तक
(ख) मध्यम (16–70 वर्ष) (1) वृद्धि – 20 वर्ष तक
(2) यौवन – 30 वर्ष तक
(3) पूर्णता – 40 वर्ष तक
(4) हानि–40–70 वर्ष तक
(ग) वृद्ध > 70 वर्ष

अष्टांग संग्रह – वृद्धावस्था > 60 वर्ष
अष्टांग हृदय – वृद्धावस्था > 70 वर्ष

- **सार –** -च का 89

चरक – 8
काश्यप – 9 (ओज सार अतिरिक्त माना हैं)

- **योगियों की शक्तियाँ –**

चरक – 8
योगशास्त्र – 23 (क्षुद्र–5, गुण प्रधान – 10, ब्राह्य प्रधान–8)

- **स्वप्न भेद –**

चरक– 7 (दृष्ट, श्रुत, कल्पित, प्रार्थित, अनुभूत, भाविक, दोषज़)
काश्यप–10

- **भूतोन्माद भेद –**

चरक – 8
सुश्रुत – 8 (चरकोक्त शापोन्मत्त व ब्रह्मराक्षसोन्मत्त के स्थान पर देवशत्रु एवं नाग ग्रह माना है।)
वाग्भट – चरक व सुश्रुत का अनुसरण करते हुए पाँच अधिक बताये है – कुष्माण्ड, निषाद, वैताल, प्रेत व औकिरण

- **मदनफल के योग –**

चरक – 133, सुश्रुत – 31

- **आन्तरिक्ष जल भेद –**

चरक – 3 – धार, कार, हेम
सुश्रुत – 4 – धार, कार, तौषार, हेम

- **औष्ठ रोग –**
  सुश्रुत – 8
  वाग्भट – 11 (सुश्रुतोक्त 8 + खण्डौष्ठ, औष्ठार्बुद व जलार्बुद)
- **गर्भिणी को यवागु देने का विधान –**
  चरक – 8 वे मास में
  सुश्रुत – 6वें मास में
- सुश्रुत – अष्टम मास में – आस्थापन व अनुवासन वस्ति दे
  चरक – नवम मास में – अनुवासन वस्ति का विधान
- प्रसूतागार में स्त्रियों की संख्या (परिचर्या हेतु)
  सुश्रुत – 4 स्त्रियाँ
  चरक – अनेको स्त्रियाँ
- **विषवर्णन –**
  चरक – चिकित्सा स्थान 23वां अध्याय विषचिकित्सा
  सुश्रुत – कल्प स्थान
  भा० प्र० – चिकित्सा स्थान में
  काश्यप – सर्वविष प्रतिपादक अध्याय में
- **उपविष संख्या –**
  भा०प्र/RRS रसतरंगिणी – 7 RT, यो.र; शा – 11
  र०र०स०, योगरत्नाकर, भा०प्र०, शार्ंगधर – 11
- **स्वरभेद –**
  चरक – 6 (वा०, पै०, श्ले०, सा०, रक्तज, मेदोज) VPKS(R)Me
  सुश्रुत – 6 (वा०, पै०, श्ले०, सा०, क्षयज, मेदोज) VPKS क्षयज Me
- **अरोचक (भक्तोपघात)**
  चरक – 5 (वा०, पै०, श्ले०, सा०, मानसिक) VPKS मानसिक
- **दौहृदावस्था –**
  चरक – तृतीय मास में 3
  सुश्रुत – चतुर्थ मास में 4
  वाग्भट – 3 पक्ष से 5 मास तक 3 - 5
  काश्यप – तृतीय मास में 3
- **गर्भनालच्छेदन – (अर्द्धधार नामक शस्त्र से)**
  चरक, सुश्रुत – 8 अंगुल पर
  वाग्भट – 4 अंगुल पर
- **अन्नप्राशन काल –**
  वाग्भट – षष्टम मास 6
  काश्यप – 10वां मास 10
- **कर्णवेधन काल –**
  सुश्रुत – 6, 7 वे मास के शुक्ल पक्ष में
  वाग्भट – 6, 7, 8 वे मास में (शिशिरागम पर)

- **नाभिनाल कर्त्तन जन्य व्याधियाँ –**
  चरक – 4 (उत्तुण्डिका, पिण्डलिका, विनामिका, विजृम्भिका)
  वाग्भट – 2 (विनामिका, विजृम्भिका)
- **दन्तोदभेद काल –**
  काश्यप – 4–8 मास, वाग्भट – 8 मास
- **वमन–विरेचन व्यापद –**
  चरक – 10, सुश्रुत – 15, वाग्भट – 12
- **वस्ति नैत्र प्रमाण –**

चरक –

आयु	नेत्र लम्बाई	छिद्र का आकार
6 वर्ष	6 अंगुल	मूँग प्रमाण में
12 वर्ष	8 अंगुल	सतीन (मटर) प्रमाण में
20 वर्ष	12 अंगुल	कर्कन्धु प्रमाण

सुश्रुत –

आयु	लम्बाई	मोटाई	छिद्र प्रमाण	मात्रा
1 वर्ष	6 अंगुल	कनिष्ठिका	मूँग तुल्य	2 प्रसृत
8 वर्ष	8 अंगुल	अनामिका	उड़द तुल्य	4 प्रसृत
16 वर्ष	10 अंगुल	मध्यमा	मटर तुल्य	8 प्रसृत
25 वर्ष	12 अंगुल	अंगुष्ठोदर	कोलास्थि तुल्य	12 प्रसृत
> 70 वर्ष	12 अंगुल	अंगुष्ठोदर	कोलास्थि तुल्य	8 प्रसृत

- व्रणनैत्र हेतु लम्बाई – 8 अंगुल – मुदग तुल्य छिद्र
- वाग्भट –
  1 वर्ष से कम – 5 अंगुल प्रमाण में
  1–6 वर्ष तक – 6 अंगुल प्रमाण में
  7 वर्ष तक – 7 अंगुल प्रमाण में
  12 वर्ष तक – 8 अंगुल प्रमाण में
  16 वर्ष तक – 10 अंगुल प्रमाण में
  20 वर्ष तक – 12 अंगुल प्रमाण में
-

नाम दोष	चरक	सुश्रुत	का
वस्ति नैत्र दोष	8	11	6
वस्ति पुटक दोष	8	5	
वस्तिदाता दोष	10	6	10
वस्ति दोष	12	–	9

- **सुश्रुतमतानुसार कुल वस्तिदोष – (76)**
  वैध व आतुरनिमित्त उपद्रव – 44
  आतुरनिमित्त उपद्रव – 15
  वैध निमित्त उपद्रव – 8 वैद्यकातुर उपद्रव – 9
  स्नेह वापस न आने के कारण उपद्रव – 9 8

कुल – 76

(76)

- **निरूह वस्ति निर्माणार्थ मात्रायें –**
  औषध द्रव्य क्वाथ – 1/5 भाग
  V वातज विकृति में स्नेह – 1/4 भाग
  P पैत्तिक विकृति में स्नेह – 1/6 भाग
  K श्लैष्मिक विकृति में स्नेह – 1/8 भाग

- **निरूहवस्ति की मात्रा –**
  6 महीने से 1 वर्ष तक – ½ प्रसृत (तदन्तर 12 वर्ष तक प्रतिवर्ष ½–½ प्रसृत की वृद्धि करते हैं)
  12वें वर्ष में – 6 प्रसृत (तदन्तर 18वें वर्ष तक प्रतिवर्ष 1–1 प्रसृत की वृद्धि करते है)
  18वें वर्ष में – 6+6–12 प्रसृत
  18–70 वर्ष तक – 12 प्रसृत
  70 वर्ष से अधिक पर – 16 वर्ष वाली मात्रा – 10 प्रसृत
- **उत्तरवस्ति –**
  पुष्पनैत्र प्रमाण –

	चरक	**सुश्रुत**
स्त्री	10 अंगुल	10 अंगुल (कर्णिका 4 अंगुल पर)
पुरूष	12 अंगुल	14 अंगुल (कर्णिका मध्य में)

- **वस्तिनैत्र छिद्र (चरक)**
  स्त्री – मुदग प्रमाण का
  पुरूष – सर्षप प्रमाण
  – **नैत्र प्रवेश (चरक)**
    स्त्री – योनिमार्ग में – 4 अंगुल प्रवेश
    मूत्रमार्ग में – 2 अंगुल प्रवेश
    बाला – योनिमार्ग – उत्तर वस्ति नहीं देते है
    मूत्रमार्ग – 1 अंगुल नैत्र प्रवेश
    सुश्रुत– पुरूष में 6 अंगुल उत्तरवस्ति नैत्र प्रवेश
  – **उत्तरवस्ति मात्रा –**
    चरक – ½ पल
    सुश्रुत –

	पुरूष	**स्त्री**
स्नेह	1 प्रकुंच	1 प्रसृत
क्वाथ	1 प्रसृत	2 प्रसृत

मगर स्त्री में भी वस्तिशोधनार्थ क्वाथ की मात्रा 1 प्रसृत ही लेने का विधान है।

V - 1000
P - 800
K - 600
स्वस्थ नेत्र - 500

- **तर्पण हेतु काल (सुश्रुत) –**
  स्वस्थ नैत्र में – 500 मात्रा काल तक,
  पितज व्याधि में – 800 तक,
  कफज व्याधि में – 600 तक
  वातज व्याधि में – 1000 तक
  दोष भेद से

  अधिष्ठान भेद से –
  वर्त्मगत व्याधि में – 100 मात्रा काल
  संधिगत व्याधि में – 300 मात्रा काल
  शुक्लगत व्याधि में – 500 मात्रा काल
  कृष्णगत व्याधि में – 700 मात्रा काल
  दृष्टिगत व्याधि में – 800 मात्रा काल
  सर्वगत व्याधि में – 1000 मात्रा काल

  न्युन दोष – 1 दिन
  मध्यम दोष –3 दिन
  प्रबल दोष – 5 दिन

- **पुटपाक –**
  दोषानुसार
  V - 3D
  P - 2D
  K - 1D
  कफज रोग में – 1 दिन, पैत्तिक रोग में – 2 दिन
  वातज रोग में – 3 दिन
  कर्मानुसार –
  LSR-123D
  लेखन पुटपाक 1 दिन तक – 100 मात्रा काल तक
  स्नेहन पुटपाक 2 दिन तक – 200 मात्रा काल तक
  H
  रोपण पुटपाक 3 दिन तक – 300 मात्रा काल तक
- **सेक (पुटपाक से दो गुना काल)**
  लेखन – 200 मात्रा काल तक
  LSR-246
  स्नेहन – 400 मात्रा काल तक
  रोपण – 600 मात्रा काल तक
- **आश्च्योतन –**
  LSR-7,10,12
  लेखन – 7 या 8 बूँद
  स्नेहन – 10 बूँद
  रोपण – 12 बूँद
- **शिरोवस्ति**
  शिरोवस्ति धारण काल तर्पण से दस गुना होता है।
- **अंजन –**
  गुटिकांजन व रसांजन की मात्रा –
  LPR-
  1, 1½, 2
  2, 3, 4
  लेखन – 1 हरेणु
  प्रसादन – 1½ हरेणु
  रोपण – 2 हरेणु

  चूर्णांजन मात्रा
  2 शलाका
  3 शलाका
  4 शलाका

  अंजन पात्र –

रस	पात्र
मधुर	स्वर्ण
अम्ल	रजत
लवण	मेषश्रृंग
कटु	वैदुर्य
तिक्त	कांस्य
कषाय	ताम्र / लौह

- अंजन शलाका –
  - मल्लिका पुष्प सदृश्य व कलाय के परिमाण में मोटी
  - लम्बाई – 8 अंगुल
  - रोपणार्थ – लौह शलाका का प्रयोग
  लेखनार्थ – ताम्र शलाका का प्रयोग LSR - LTS
  प्रसादनार्थ – स्वर्ण शलाका का प्रयोग
- **श्रेष्ठ काल –**
  तर्पण हेतु – पूर्वान्ह व अपरान्ह
  सेक व आश्च्योतन हेतु – पूर्वान्ह, मध्यान्ह व सांयान्ह
  शिरोवस्ति – सायंकाल
- **शुद्ध शुक्र के लक्षण –**
  स्फटिकाभ – चरक, सुश्रुत व शार्गंधर
  मधुगन्धि – चरक, सुश्रुत, वाग्भट व शार्गंधर
  तैलवर्णी – वाग्भट
- **शुद्धार्त्तव लक्षण –**
  चरक – गुञ्जाफल सवर्ण पद्मालक्त सन्निभम ....
  सुश्रुत – शशासृक प्रतिमं यत्तु यद्वा लाक्षा रसोपमम् ....
- **मानस प्रकृत्तियाँ –**

	चरक	सुश्रुत	काश्यप
सात्विक	7 (शुद्ध प्रकृति)	7	8
राजस	6	6	7
तामस	3	3	3
(16)	16 (763)	16	18 (873)

- **गर्भ की गर्भाशय में स्थिति –**
  चरक – गर्भस्तु खलु मातुः पृष्ठाभिमुख उर्ध्वशिराः संकुच्यांगान्यास्तेऽन्तःकुक्षौ।
  सुश्रुत – आभुग्नोऽभिमुख शेते........ स योनिं शिरसा याति स्वभावात् प्रसवं प्रति।
- **धात्री लक्षण –**
  चरक – समानवर्ण यौवनायां
  सुश्रुत – श्यामवर्णी धात्री श्रेष्ठ
- **नवजात शिशु चर्या में प्रथम उपक्रम –**
  चरक – प्राणप्रत्यागमन
  सुश्रुत – मुखविशोधन उल्वपरिमार्जन
  वाग्भट – उल्वा परिमार्जन
- आहार मात्रापुनरग्निबलापेक्षिणी – च0सु0 5
  मात्रा पुनरग्निबलाहार द्रव्यापेक्षिणी – अ0स0सू0 11/4
- **मूत्र के गुण –**
  चरक – कफशामक व वातानुलोमक, कर्षेपित्तमधोभाग KP↓
  वाग्भट – पित्तवर्धक, सुश्रुत – त्रिदोषशामक KVक

- **नस्यकर्म भेद –**

  चरक – 5 भेद

  सुश्रुत – 2 भेद (5 पर्याय)

  वाग्भट – 3 भेद

- **वर्धमान पिप्पली**

  रोगाधिकार – चरक – रसायन

  सुश्रुत – वातरक्त VR

  काश्यप – राजयक्ष्मा व शोथ

मात्रा –	चरक	सुश्रुत	कल्पना
उत्तम	10	10	पीसकर दे
मध्यम	6	7	क्वाथ रूप में दे
हीनबल	3	5	चूर्ण रूप में दे

  आचार्य जैज्जट व्यक्ति की प्रकृति के अनुसार पिप्पली सेवन का निर्देश किये हैं।

- **ज्वर की संज्ञा –**

  सर्वरोगाग्रज – चरक

  रोगराज – सुश्रुत

  रोगपति – वाग्भट

- **विषम ज्वर के अधिष्ठान –**

नाम	चरक	सुश्रुत
सन्तत	रस	रस
सतत	रक्त	रक्त
अन्येद्युष्क	मेद (मांस=x)	मांस
तृतीयक	अस्थि	मेद
चतुर्थक	मज्जागत	अस्थि, मज्जा

  – चरक केवल चतुर्थक विपर्यय मानते है

  – सुश्रुत तृतीयक व अन्येद्युष्क विपर्यय भी मानते हैं।

  – रस, रक्त, मांस, मेदोगत – साध्य

  अस्थि, मज्जागत – कृच्छ्रसाध्य

  शुक्रगत – असाध्य

- **विषम ज्वर भेद –**

  चरक – 5

  काश्यप – 7

- **गुल्म भेद –**

  चरक, सुश्रुत व काश्यप – 5

  वाग्भट – 8

- **रक्त गुल्म की चिकित्सा का निर्देश –**

  चरक – 10 मास पश्चात

  काश्यप – ~~12~~ मास पश्चात 10

- **रक्तपित्त में गंध (पूर्वरूप में)**

  मत्स्यगंधता – चरक, वाग्भट,

  लोहगंधिता – चरक, सुश्रुत

- **प्रमेह भेद –**

चरक – स्थूल व कृश

सुश्रुत – सहज (कृश) व अपथ्य निमित्तज (स्थूल)

(क) **कफज प्रमेह –**

- सुश्रुत ने सुरामेह, पिष्टमेह, लवणमेह व फेनमेह चरक से पृथक माने हैं।
- वाग्भट ने चरकोक्त शीतमेह व लालामेह को मानते हुए शेष सुश्रुत का अनुसरण किया है।
- माधवकर ने वाग्भट का अनुसरण किया है।

(ख) **पित्तज प्रमेह**

- सुश्रुत ने चरकोक्त कालमेह नहीं मानकर अम्लमेह माना है।
- वाग्भट् ने चरक का ही अनुसरण किया है।
- भेल – क्षारमेह को भस्म मेह कहते है।

(ग) **वातज प्रमेह –**

- सुश्रुत ने चरकोक्त मज्जामेह एवं मधुमेह के स्थान पर सर्पिमेह एवं क्षौद्रमेह माना है।
- वाग्भट ने चरक का ही अनुसरण किया है।

- **प्रमेह पिडिका चिकित्सा –**

चरक – शस्त्र साध्य

सुश्रुत – धान्वन्तर घृत, नवायस लौह, लौहारिष्ट का प्रयोग (पिडिका की अवस्थानुसार औषध या शस्त्र प्रयोग)

- **कुष्ठ –**

प्रकार– चरक – 7, 18 व असंख्य

सुश्रुत – 18

- सुश्रुत ने चरकोक्त ~~मण्डल~~ व सिध्ममहाकुष्ठ को क्षुद्रकुष्ठ में माना है तथा दद्रु एवं अरूण कुष्ठ को महाकुष्ठ में माना है।

चरक	**सुश्रुत**
कपाल–वात	अरूण–वाताधिक V
ओदुम्बर – पित्त	पुण्डरीक व दद्रु – श्लेष्माधिक K
मण्डल – कफ	शेष महाकुष्ठ – पित्ताधिक्य से होते है P
ऋष्यजिव्ह – वात+पित्त	
पुण्डरीक – पित्त+कफ	
सिध्म – वात+कफ	
काकणक – त्रिदोषज	

क्षुद्र कुष्ठ –

चरक –

- एककुष्ठ, चर्माख्य, किटिम, विपादिका व अलसक – वातकफज VK
- दद्रु, चर्मदल, पामा, विस्फोट व शतारू – पित्तकफज PK
- विचर्चिका – कफज K

सुश्रुत –

- एककुष्ठ, रकसा, महाकुष्ठ, अरूष्क व सिध्म – कफज
- परिसर्प – वातिक
- शेष अन्य क्षुद्र कुष्ठ – पैत्तिक

असाध्यमहाकुष्ठ –

चरक – काकणक कुष्ठ
सुश्रुत – पुण्डरीक व काकणक कुष्ठ

- गर्भिणी सर्प के काटने पर लक्षण –

चरक – मुख, पाण्डु, ओष्ठशोथ, नेत्र कृष्णवर्ण
सुश्रुत – मुख पाण्डु वर्ण, ध्यमात

- प्रसूता सर्प के काटने पर लक्षण

चरक – उपजिह्विका रोग, मुत्ररक्तवर्ण, जृम्भा, क्रोध
सुश्रुत – उपजिह्विका रोग + रक्तमूत्रता, उदरशूल

- **स्नेह की मात्रायें –**

चरकमतानुसार –

(1) प्रधान मात्रा – जो दिन व रात में पच जावें
- शमनार्थ प्रयुक्त होती है
- गुल्म, सर्पदंश, विसर्प, उन्माद व मूत्रकृच्छ्र में निर्दिष्ट

(2) मध्यम मात्रा – जो दिन में पच जावें
- शोधनार्थ प्रयुक्त होती है
- इसे स्नेह की "मन्दविभ्रंशा" भी कहते है
- अरूष्क, स्फोट, पिड़का, कण्डु, पामा, कुष्ठ, प्रमेह व वातरक्त में निर्दिष्ट

(3) हीन मात्रा – जो आधे दिन में ही पच जावें
- ज्वर, अतिसार व कास में निर्दिष्ट हैं।

सुश्रुतमतानुसार –

(1) चतुर्थभागगतेऽहनि – एक प्रहर में पचने वाली – अग्निदीपक, अल्पदोषो में हितकर
(2) अर्द्धकोदिवस– 6 घन्टे में पचने वाली–वृष्य व वृंहण, मध्य दोषों मे देय
(3) चतुर्थभागावशेष–9 घन्टे में पचने वाली–स्निग्धकारक, अधिक दोषों में देय
(4) सम्पूर्ण दिन – 12 घंटे में पचने वाली – ग्लानि, मूर्च्छा व मद को छोडकर सभी रोगों में हितकर
(5) दिन व रात – 24 घंटे में चलने वाली – कुष्ठ, विष, उन्माद, अपस्मार व ग्रह रोगों में उपयोगी।

- **सर्पि संज्ञा –**

चरक – पुराण धृत – 10 वर्ष तक – उग्र गंध वाला
प्रपुराण धृत – 100 वर्ष तक – लाक्षा रस के समान, सर्वरोगापहं, मेध्यं, विरेचनेपु अग्रयं
सुश्रुत – कुम्भसर्पि – 111 वर्ष तक – रक्षोध्न

महासर्पि – 111 वर्ष से पुराना धृत – तिमिर व वात नाशक
भाव प्रकाश – पुराण धृत – 1 वर्ष पुराना

- **गर्भ की वर्णोत्पत्ति में महाभूत –**

चरक –
(अवदात) गौरवर्ण – तेज + जल + आकाश महाभूत से TAJ
कृष्ण वर्ण – पृथिवी + वायु महाभूत PV
श्याम वर्ण – आकाश + वायु + पृथिवी + तेज सभी महाभूतो के समरूप में मिलने से (समसर्वधातुप्रायः) AVPT

सुश्रुत –
– तेज महाभूत सभी वर्णों में उपस्थित रहता है –
गौरवर्ण – तेज + जल TJ
कृष्णवर्ण – तेज + पृथिवी TP
कृष्णश्याम वर्ण – तेज + पृथिवी + आकाश TPA
गौर श्याम वर्ण – तेज + जल + आकाश महाभूत से TAJ

- **सूतिकाकाल –** 45

सुश्रुत – 45 दिन
वाग्भट – 45 दिन
भावमिश्र – 45 दिन या 4 माह
काश्यप – 30 दिन या 6 माह
हारीत – 45 दिन
शार्गंधर – 1½ माह या पुनः आर्त्तव दर्शन तक
आधुनिक – 45 दिन

– सूतिका परिचर्या – 45 दिन
– सूतिका की धातुऐं साम्यावस्था में आ पाती हैं – 6 मास पश्चात

- गुडहरीतकी – चरक – अर्श
सुश्रुत – वातरक्त
- इन्द्रायुधा जलोका से दष्ट होने पर होने वाला रोग – असाध्य
- जलौका को रक्तमोक्षण के बाद होने वाला रोग –
सुश्रुत – इन्द्रमद, वाग्भट – रक्तमत्ता
- **ओज –**

सर्वशरीर में व्याप्त – सुश्रुत
हृदय में स्थित – चरक व वाग्भट
ओज शुक्र का सार है – अष्टांग संग्रह
ओज शुक्र का मल है – अष्टांग हृदय
ओज शुक्र का स्नेह है – डल्हण
ओज शुक्र की उपधातु है – शार्गंधर
ओज के पर व अपर भेद किये – चक्रपाणि ने
ओज व बल में अन्तर किया – डल्हण ने
ओज को सर्वप्रथम "पंचरस" कहा है – काश्यप ने

- **विभिन्न शिरोरोगों में दोष सम्बन्ध –**

अर्धावभेदक –

चरक – वातज / वातकफज

सुश्रुत – त्रिदोषज

सूर्यावर्त –

चरक – वात + रक्त

सुश्रुत – वात + पित्त + कफ

काश्यप – प्रतिश्याय से सूर्यावर्त्त की उत्पत्ति मानी है

शंखक –

चरक – वात, पित्त, रक्त

सुश्रुत – पित्त, कफ, रक्त

अनन्तवात – सुश्रुत – त्रिदोषज, चरक – त्रिदोषज

- **मूत्रभेद – चरक –** 8

  सुश्रुत – 9

- **विभिन्न मूत्रों के गुण धर्म –**

चरक मतानुसार

आविमूत्र – आविमूत्रं सतिक्तं स्यात पित्त अविरोधि च

गौमूत्र – मधुर, क्रिमीकुष्ठनुत्त, उदररोग नाशक

बकरी – आजं कषायं मधुरं पथ्यं ....

भैंस – अर्शशोफोदरघ्नं तु सक्षारं माहिषं सरम ....

हाथी – हास्तिकं लवणं मूत्रं हितं तु क्रिमीकुष्ठनुत ....

उष्ट्र – तिक्त, कास, श्वासनुत

घोडे – तिक्त, कुष्ठ, व्रण, विषापहं

खर – खर मूत्रं अपस्मारो उन्मादग्रहहरं परम्

सुश्रुत मतानुसार –

घोडी व गधी का मूत्र – मनोरोगों में उपयोगी

ऊँटनी – उन्माद में उपयोगी

हस्तिनी मूत्र – क्षारकर्मार्थ, कुष्ठ व किलास में उपयोगी

गधी का मूत्र – गरविष में उपयोगी

- **अजीर्ण –**

भेद 4 – आमाजीर्ण, विदग्धाजीर्ण, विष्टब्धाजीर्ण, रसशेषाजीर्ण

माधव – (6) सुश्रुतोक्त 4 + दिनपाकी व प्राकृत अजीर्ण

सुश्रुत

आमाजीर्ण – लंघन

विदग्धाजीर्ण – वमन

विष्टब्धाजीर्ण – स्वेदन

रसशेषाजीर्ण – शयन

वाग्भट व काश्यप

विदग्धाजीर्ण – दिवाशयन

श्लेष्माजीर्ण – स्वेदन

रसशेषाजीर्ण – शोषण

अश्मरी लक्षण –

सुश्रुतानुसार –

कफज – कुक्कुटाण्डप्रतीकाशा, मधूकपुष्पवर्णी (मा०नि०– मधुवर्णी अथवा सितावर्णी)

पित्तज – भल्लातकास्थि प्रतिमा, मधुवर्णी (मा०नि० – भल्लातकास्थि संस्थाना)

वातज – कदम्बपुष्पवत कण्टकचिता (मा०नि० – कण्टक वत)

- **आर्त्तवकाल में मैथुन का परिणाम**

	सुश्रुत	काश्यप
प्रथम दिन मैथुन से	पुरूष का आयुष्यनाश व बालक की जन्मते ही मृत्यु	वातगर्भ, फलशून्य
द्वितीय दिन	बालक की प्रसूतागृह में ही मृत्यु	गर्भपात
तृतीय दिन	~~बालक की प्रसूतागृह~~ में ही मृत्यु (अल्पायु व अतंपुष्ठि)	सूतिकागृह में मृत्यु
चौथे दिन	बालक दीर्घायु	दीर्घायु

- **कोष्ठ में दोषो की स्थिति –**

सुश्रुतानुसार –

मृदुकोष्ठ – पित्त बहुल P

मध्यम कोष्ठ – समदोष

क्रूर कोष्ठ – बहुवात श्लेष्मा (चरक व वाग्भट – वात प्रधान)

- **सम्यक शुद्धि के लक्षण –**

वमन – प्रसेक औषध कफपित्तऽनिल (सुश्रुत) प्रसेक औषध KPV

– औषध कफ पित्तऽनिल (चरक) औषध KPV

विरेचन – मूत्र पुरीष पित्त औषध कफ (सुश्रुत)

विट पित्त कफ अनिल (चरक) विट PKV

- सुश्रुत – **वमन द्रव्यों की कार्मुकता – प्रभाव से**

विरेचन द्रव्यों की कार्मुकता – गुण प्राधान्य से

चरक – वमन व विरेचन दोनों की कार्मुकता में प्रभाव कारण

- **पंचकर्मोपरान्त परिहार काल –**

चरक – द्विगुण काल

सुश्रुत – 1 मास या पुनः बलवान होने तक

- **अलर्क विष में दोष –**

चरक – त्रिदोष T

सुश्रुत – वातकफज VK

- **समसान्निपातिक अतिसार में चिकित्सा –**

प्रथमतः वात की – चरक V

प्रथमतः पित्त की – सुश्रुत P

समसान्निपातिक ज्वर – प्रथमतः कफ की चिकित्सा – चरक
प्रथमतः पित्त की चिकित्सा – सुश्रुत

त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्र – वायोस्थानानुपूर्वी चि0 – चरक

मदात्यय – प्रथमतः कफ की चिकित्सा – चरक

- **पाण्डू में दूष्य –**
  चरक – रस, सुश्रुत – रक्त
- **मद्यावस्थाऐं –**
  चरक व सुश्रुत – 3 , माधव – 4
- **हिक्का के मूल –**

		चरक	सुश्रुत
1.	अन्नजा	–	–
2.	यमला	नहीं माना	शिरोग्रीवा
3.	व्यपेता	जत्रुमूल	नहीं माना
4.	क्षुद्रा	कण्ठ	जत्रुमूल
5.	गंभीरा	नाभि, पक्वाशय	नाभि
6.	महति	मर्म	मर्म

- **पुरूष की उत्पत्ति में कारण –**
  चरक – 5, सुश्रुत – 6
- **नाडी स्वेदार्थ नाडी की लम्बाई –**
  चरक – 1 व्याम, सुश्रुत – ½ व्याम
- **प्रमेह पिडिका –**
  चरकानुसार – 7
  – सुदुःसह – कफ व मेदाधिक्य वाली –(3) शराविका, कच्छपिका व जालिनी
  – साध्य – पित्तोल्बण –(4) सर्षपी, अलजी, विनता व विद्रधि
  शराविका – शराव सदृश्य
  कच्छपिका – अवगाढार्ति न बड़े परिग्रह वाली
  जालिनी – सिराजाल, रूजानिस्तोदबहुला, अनेक छोटे–छोटे छिद्रो से युक्त
  सर्षपी – शीघ्रपाकी एक बड़ी पिडिका जिसके चारों ओर अनेको छोटी–छोटी पिडिकाऐ।
  अलजी – दाह, मोह व ज्वरदायक, अग्निदंग्धवत पीड़ादायक
  विनता – पीठ व उदर पर होने वाली नीलवर्णी पिडिका
  विद्रधि – बाह्या व आभ्यान्तर दो प्रकार की
- सुश्रुतानुसार – 10

कुछ प्रमुख पिडिकाओं के लक्षण –
जालिनी – तीव्रदाहा तु मांसजालमावृता
विनता – महती पिडका नीला पिड़का

हृदय तर्पयती - अम्ल रस
हृदय पीडयति - कषायरस

Pranit

पुत्रिणी – महत्यल्पाचिता ज्ञेया पिडका
अलजी – रक्तासिता स्फोटवती दारूणा

- विभिन्न रसों के कर्म –

चरकानुसार –

मधुर रस – शरीरसात्म्य, प्रह्मालादनकर, आयुष्य, षडिन्द्रियप्रसादनों
अम्ल रस – भक्तं रोचयति, देहं वृंहयति, मनोबोधयति, हृदयं तर्पयती, भुक्तं अपकर्षयति, इन्द्रियाणी दृढ़ीकरोति, रक्तं दूषयति, श्वयथुर्मापादयति
लवण रस – सर्वरसप्रत्यनीकभूत, मार्गानविशोधयति, आहारयोगी, विषवर्धक, कुष्णाति मांसानि, प्रगालयति कुष्ठानि, रक्तंवर्धयति
कटु रस – वक्त्रशोधक, स्रोतोविस्फारक, उदर्दकण्डु नाशक विपाक से पुंसत्वनाशक हैं, शोणितसंघातभिनत्ति
तिक्त – स्वयम् अरोचक मगर अरोचक नाशक, विषघ्न, रक्त पूय व लसिका शोषक, कृमिघ्न, ज्वरघ्नो, स्तन्यशोधन
कषाय रस – संशामक, ग्राही, संधानकर, शोषण, रोपण, स्तम्भन, हृदयं, पीडयति, उदरमाध्मापयति, श्यात्वमापादयति, पक्षवधग्रहापतानंकार्दित प्रभृतींश्च उत्पादयति।

- **सुश्रुतानुसार –**

मधुर रस – प्रह्मालादयति, भग्नास्थिसंधानकर – गलगण्ड, श्लीपदोत्पादक
अम्ल रस – श्रद्धाउत्पादयति, कोष्ठविदाही, बहिःशीता, प्रायशोःहृध – पाक कारक
लवण रस – भक्तरूचिउत्पादयति, संशोधन, सर्वरसप्रत्यनीको, मार्गविशोधन, सर्वशरीरावयव मार्दवकृत – रक्तपित्त, वातरक्त व अम्लिकाजनक
कटु रस – जिह्वाग्रंबाधते, नासिकाच्च स्रावयति
तिक्त रस– भक्तरूचिंचापादयति – मन्यास्तम्भ, आक्षेप, अर्दित व शिरःशूल जनक
कषाय – वक्त्रं परिशोषयति, हृदयं कर्षयति – मन्यास्तम्भ, आक्षेपजनक

- पामा – सास्राव, कण्डुयुक्त

रकसा – निस्राव, कण्डुरहित

-

चरक	सुश्रुत
यत् कुर्वन्ति तत कर्म	यत कुर्वन्ति तदधिकरणं
येन् कुर्वन्ति तत वीर्यम	यत निष्पादयति ततफलम्
यत्र कुर्वन्ति तत अधिकरणं	यदा कुर्वन्ति तदा काल:
यदा कुर्वन्ति सा कालः	यथा कुर्वन्ति सा उपायः
यथा कुर्वन्ति सा उपाय	

- **दुग्ध –**

चरक – 8 भेद, सुश्रुत – 8 भेद

गुणधर्म –

चरकानुसार –

एकशफ दूध – शाखागतवातहर
भेड़ का – हिक्का व श्वास उत्पादक

गौ दुग्ध – प्रवरं, जीवनीयानां रसायनम्

सुश्रुतानुसार –

सामान्य लक्षण – सर्वप्राणभृतां सात्म्यं

गौदुग्ध – अल्पाभिष्यन्दि, रसायन

माहिष दुग्ध – अभिष्यन्दि, निद्राकारक

आज दुग्ध – शोषिणां हितं, सर्वव्याधिहर

आवि दुग्ध – वातज रोगनुत, वातजकास उत्पादक

एकशफ – उष्णवीर्य, शाखागतवातनाशक

ऊँटनी – लवण रस, कृमि, अर्श व उदर रोग नाशक

करेणु – मधुर, कषाय व चक्षुष्य

स्त्री दुग्ध – मधुर रस, नस्य व आश्च्योतनार्थ उपयोगी

– प्रातःकालीन दुग्ध – गुरु व विष्टम्भी
– सायंकालीन दुग्ध – लघु
– कच्चा दूध – गुरू व अभिष्यन्दी
– उबला दुग्ध – लघु
– स्त्री दुग्ध को गर्म करने का निषेध है

- **मांस में उत्तरोत्तर गुरूता का क्रम –**

चरक – (क) सक्थि < स्कन्ध < छाती < उदर < शिर

(ख) मांसरस < अण्ड < चर्म < मूत्रेन्द्रिय < श्रोणि < वृक्क < यकृत < गुदा < मध्य देह < अस्थियाँ

सुश्रुत – सक्थि < स्कन्ध < हृदय < सिर < पाद < हस्त < कटि < पीठ < चर्म < कालेयक (वृक्क) < यकृत < आंत्र

चरक – पुरूष का मांस गुरू व स्त्री का लघु होता है

सुश्रुत – चौपायो में पुरूष का मांस गुरू एवं स्त्री का लघु होता है मगर पक्षियों में स्त्री का मांस गुरू व पुरूष का लघु होता है इसिलिए लघु होने के कारण चौपायों में स्त्री का तथा पक्षियों में पुरुष का मांस श्रेष्ठ माना गया है।

- **सुश्रुतानुसार अन्य गुण –**

– अल्प शरीर वालों में बड़े जानवर का मांस ग्राह्या है।
– वृहत शरीर वालों में छोटे जानवर का मांस ग्राह्या है।
– पुरूष का ऊपरी भाग गुरू होता है व स्त्री का अधोभाग
– फल भक्षी पक्षियों का मांस रूक्ष, मांस भक्षि पक्षियों का वृंहण एवं मत्स्य भक्षी पक्षियों का मांस पित्तकारक होता है।

- **इक्षु विकारों में उत्तरोत्तर श्रेष्ठता –**

धौतगुड < मत्स्यण्डिका < खाण्ड < शर्करा (चरक, सुश्रुत)

- **मधु भेद** – चरक – 4 (भ्रामर, माक्षिक, पौत्तिक, क्षौद्र)

सुश्रुत – 8 (भ्रामर, माक्षिक, पौत्तिक, क्षौद्र, छात्र, आर्घ्य, औद्दालक व दाल)

गुणधर्म –

चरकानुसार –

माक्षिक – तैलवर्णी (श्रेष्ठ). भ्रामर – श्वेतवर्णी
पौत्तिक – धृतवर्णी. क्षौद्र – कपिलवर्णी

सुश्रुतानुसार –

माक्षिक – (श्रेष्ठ) श्वास कास नाशक
छात्र – कुष्ठ व प्रमेहहर
आर्घ्य – नैत्र रोगों में उपयोगी
औद्दालक – स्वरविकार, कुष्ठ व विषनाशक
दाल – वमन व प्रमेह नाशक
– मधुवातकारक व कफनाशक – चरक
– त्रिदोष नाशक – सुश्रुत
– प्रमेह में मधुनिषिद्ध नहीं है।

दश प्राणायतन – (च. शा. मूर्धा → माथी) (वा. मूर्धा - जाभी)

चरक – सूत्र स्थान में – शंखौ मर्मत्रयोकण्ठौ रक्तं शुक्र औजसी गुदम
शारीर स्थान में–शंख के स्थान पर मूर्धा व मांस का समावेश किया है।
वाग्भट – शंख के स्थान पर मूर्धा व जिव्हा बंधन को माना है।

महाकुष्ठ लक्षण –

चरकानुसार –

कपाल – विषमविसृतानि, जन्तुमन्ति, कृष्ण अरूण कपाल वर्णानि।
औदुम्बर – ताम्रवर्णी, पक्वगूलर सदृश्य
मण्डल – श्वेत रोमो से व्याप्त
ऋष्यजिव्ह – परूषाणप्यरूणवर्णानि, बर्हिरन्तरश्यावानि
पुण्डरीक– किनारे लाल, मध्य में रक्त श्वेतवर्णी (सुश्रुत–कमलपत्र सदृश्य)
सिध्म – बहुनि अल्प वेदना, अलाबुपुष्पवत
काकणक – काकणन्ति (गुंजा) प्रभं (सुश्रुत–सिध्मकुष्ठ – अतसी पुष्पवर्णी)

कुछ प्रमुख क्षुद्रकुष्ठो के लक्षण – (चरकानुसार)

एककुष्ठ – अस्वेदनं , यनमत्स्यशकलोपम्
चर्मकुष्ठ – हस्तिचर्मवत
किटिम – श्याववर्णी, व्रण सदृश्य
दद्रु – खुजली व लालिमायुक्त पिडकाये
चर्मदल – स्पर्शासहत्व
पामा – कण्डु आधिक्य, स्राव अधिक
विचर्चिका – श्याववर्णी पिडका, शुष्काधिक्य

कृमि लक्षण व आश्रय (चरकानुसार)

भेद – चरक

बाह्य कृमि – (2) यूका, लिक्षा (2)

पुरीषज – (5) ककेरूक, मकेरूक, लालह, सशूलक, सासुराद
रक्तजकृमि – (6) केशाद, लोमाद, लोमद्वीप, सौरस, औदुम्बर, जन्तुमाता
कफजकृमि – (7) अन्त्राद, उदराद, हृदयाद, महागुद, सौगन्धिक, चुरू, दर्भपुष्प

नाम कृमि	निदान	आश्रय	स्वरूप	उत्पादक लक्षण
मलज	मृजावर्जन से	केश, श्मश्रु व लोम	तिलाकार	कोठ, कण्डु
रक्तज	कुष्ठ के निदान	रक्तवह धमनियाँ (सुश्रुत–धमनियाँ)	ताम्रवर्णी, सूक्ष्म व पैर रहित	केशश्मश्रु नखलोमपतन, तरूणास्थिनाश
श्लेष्मज	गुड, तिल व दधी	आमाशय (सुश्रुत– आमाशय)	पृथु, चपटे व गण्डुपदाकार	ज्वर, अरूचि क्षवथु
पुरीषज	गुड, तिल, दधी	पक्वाशय (सुश्रुत – पक्वाशय)	उणांशु संकाश (ऊन के समान)	गुदकण्डु अतिसार

– कृमिसंशोधनार्थ उपक्रम – (4) (अनुवासन को छोड़कर – चरक)
– रक्तज कृमि अदृश्य होते हैं व शेष दृश्यमान (सुश्रुत)
– क्रिमी नाशनार्थ सुश्रुत ने पलाशबीज स्वरस व वंग का दधी के पानी के साथ प्रयोग निर्दिष्ट किया हैं।

- **चरक**
  कारण–भिषक
  करण – भैषज
  कार्य योनि – धातुवैषम्य
  कार्यफल – सुखावाप्ति
  अनुबन्ध – आयु
  देश – भूमी / आतुर
  काल – संवत्सर / आवस्थिक
  प्रवृत्ति – प्रतिकर्मसमारम्भ
  उपाय – कारण, करण व कार्य योनि का सौष्ठव एवं अभिविधान

  सुश्रुत
  कर्त्ता – भिषक
  करण – रस
  कारण – दोष
  कार्य – आरोग्य

- **गर्भ विकार –**

	चरक	वाग्भट
उपविष्टक	गर्भोवृद्धि न प्राप्नोति	वृद्धिमप्राप्नुवन, सस्फुरः
नागोदर	कालमवतिष्ठतेऽतिमात्रं, अस्पन्दनश्च	उदरंवृद्धिऽप्यत्रहीयते, स्फूरणं चिरात
लीनगर्भ	प्रसुप्तो, न स्पन्दते	प्रसुप्तो, न स्पन्दते

चरकानुसार – उपविष्टक – स्पन्दन के संदर्भ में निर्देश नहीं।
नागोदर – अस्पन्दनश्च, चिरात स्पन्दनश्च
लीन – न स्पन्दते

वाग्भटानुसार –

उपविष्टक – गर्भ की वृद्धि रूक जाती है (न च कुक्षिविर्वधते), पर गर्भ में स्पन्दन होता है।

उपशुष्क / नागोदर – आर्त्तव की अतिप्रवृत्ति से गर्भ का आकार घटने लगता है व लम्बे समय पश्चात कभी–कभी स्पन्दन होता है (परिहीयमाणा गर्भश्चिरात किंचित स्पन्दते)

लीनगर्भ – गर्भ में स्पन्दन का अभाव (गर्भ प्रसुप्तो न स्पन्दते)

चिकित्सा –

उपविष्टक व नागोदर – जीवनीय, वृंहणीय, व भौतिकघृत का प्रयोग, यान में बैठाकर क्षोभ कराना, अवजृम्भण, अवमार्जन (बार–बार स्नान करवाना)

लीनगर्भ – श्येन, गौ, मत्स्य व ताम्रचूड के मांस का प्रयोग, मूली का यूष + उड़द की दाल + उदर, वंक्षण कटि आदि पर अभ्यंग

- **किलास भेद –**

चरकानुसार – 3 भेद

(3)

दारूण – रक्ताश्रित – रक्तवर्णी R

चारूण – मांसाश्रित – ताम्रवर्णी Ma

श्वित्र – मेदाश्रित – श्वेतवर्णी Me

– दु:साध्यता का क्रम – दारूण < चारूण < श्वित्र

सुश्रुतानुसार – 3 भेद

(3)

वातज – अरूणवर्णी, परिध्वंशी (केश पतन करने वाला)

पैत्तिक – पद्मपत्र प्रतीकाशं

श्लैष्मिक – श्वेत व कण्डुयुक्त

माधवनिदान – 3 भेद

(3)

वातिक – रूक्ष व अरूणवर्णी – रक्ताश्रित

पैत्तिक – कमलपत्रवत:, ताम्रवर्णी, रोमविध्वंसी – मांसाश्रित

कफज – मेदोश्रित

- **कछ प्रमुख न्याय –**

क्षीरदधि न्याय / सर्वात्मपरिणामपाक / क्रमपरिणाम पक्ष न्याय – दृढबल प्रतिपादित

केदारीकुल्या न्याय – भाव प्रकाश प्रतिपादित।

एक काल धातू पोषण न्याय – अरूणदत्त प्रतिपादित

चरक – क्षीर दधि न्याय के समर्थक

सुश्रुत – केदारीकुल्या न्याय व खले कपोत न्याय समर्थक

वाग्भट – एककाल धातु पोषण न्याय समर्थक

नाम धातु	उपधातु		मल	
	चरक	शार्गंधर	चरक	शार्गंधर
रस	स्तन्य व आर्त्तव	स्तन्य	कफ	जिव्हा, नैत्र, कपोलानां जल
रक्त	कण्डरा व सिरा	रज	पित्त	रंजक पित्त
मांस	वसा व षटत्वचा	वसा	खं मल	कर्णविड
मेद	स्नायु	स्वेद	स्वेद	दन्त, कक्षा व मेढ्र का मल
अस्थि	×	दाँत	केश, लोम	नख
मज्जा	×	केश	अक्षिविड् व त्वचा का मल	नैत्र का मल
शुक्र	×	ओज	×	वक्त्रे स्निग्धता व युवानपिडिका

- **तीक्ष्णाग्नि (भस्मक) में हितकर**
  चरक–नारीक्षीर
  सुश्रुत – माहिषक्षीर
- **कास रोग में –**
  चरक – अपानवायु, उदानवायु की तरह कार्य करती है।
  सुश्रुत – प्राण वायु व उदानवायु की विकृति होती है।
- **वमनविरेचन शुद्धि –**

चरकानुसार –

शुद्धि प्रकार	वेग संख्या		निर्हरत दोष मात्रा	
	वमन	विरेचन	वमन	विरेचन
जघन्य (अवर)	4	10	1 प्रस्थ	2 प्रस्थ
मध्यम शुद्धि	6	20	1½ प्रस्थ	3 प्रस्थ
प्रवर शुद्धि	8	30	2 प्रस्थ	4 प्रस्थ

– वमन पितान्त एवं विरेचन कफान्त सम्यक माना जाता है
– वमन में निर्हरत दोषो का मापन ली गयी औषधि के निकलने के पश्चात करते है तथा विरेचन में निर्हरत दोषो का मापन विरेचन के 2–3 वेगों के पश्चात करते हैं।

सुश्रुतानुसार –
प्रवर शुद्धि– 1 आढक (4 प्रस्थ) दोष निर्हरण – 3 बार यवागु सेवन करावें
मध्यम शुद्धि– 1/2 आढक (2 प्रस्थ) दोष निर्हरण– 2 बार यवागु सेवन करावें
अवर शुद्धि – 1 प्रस्थ दोष निर्हरण – 1 बार यवागु सेवन करावें

काश्यपानुसार –
वमन वेग –
कनिष्ठ शुद्धि – 2–3 वेग
मध्यम शुद्धि – 4–5 वेग
उत्तम शुद्धि – 6–7 वेग
विरेचन वेग –
कनिष्ठ शुद्धि – 2 वेग – 1 प्रस्थ दोष निर्हरण
मध्यम शुद्धि – 3 वेग – 2 प्रस्थ दोष निर्हरण
उत्तम शुद्धि – 4 वेग – 3 प्रस्थ दोष निर्हरण

- सुश्रुतोक्त "प्लुष्ट" दग्ध को वाग्भट ने "तुत्थ" दग्ध नाम दिया है तथा सुश्रुतोक्त "इतरथादग्ध" को वाग्भट ने "प्रमाद दग्ध" नाम दिया है।
- **शुद्ध रक्त का लक्षण –**
  चरक – तपनीयेन्द्रगोपाभं पद्मालक्त संन्निभम
  सुश्रुत – इन्द्रगोप प्रतीकाशं असंहतम
- **आलेप –**
  सुश्रुतानुसार –
  (क) प्रलेप – शीत, तनु
  (ख) प्रदेह – उष्ण / शीत, बहल (गाढा) – वातश्लेष्म प्रशमन कारक VK↓
  (ग) आलेप – मध्यम – अविदग्ध शोफ एवं रक्तपित्त में हितकर
  – व्रण पर लगाये गये प्रदेह की कल्क या निरूद्धालेप भी संज्ञा है
  – आलेप में स्नेह की मात्रा – पित्तज में – 1/6 भाग V - 1/4 भाग
  वातिक में – 1/4 भाग P - 1/6 भाग
  कफज में – 1/8 भाग K - 1/8 भाग

  वाग्भटानुसार –
  प्रलेप – गाढा व उष्ण, वात कफनाशक VK↓
  प्रदेह – तनु व शीतल, पित्तनाशक P↓

  आलेप की मोटाई –
  सुश्रुत – आर्द्र माहिष चर्मोत्सेध (भैंस के गीले चमडे के समान मोटा)
  चरक – त्रिभागांगुष्ठ (अंगुष्ठ के 1/3 भाग जितना मोटा)

  शार्गंधरानुसार लेप की मोटाई –
  दोषघ्न लेप – 1/4 अंगुल मोटा
  विषघ्न लेप – 1/3 अंगुल मोटा
  वर्ण्यकर लेप – 1/2 अंगुल मोटा
- **अष्टमहागद –**
  चरक – वातव्याधी अपस्मारी गुल्मी शोफी तथा उदरी।
  कुष्ठी च मधुमेही च राजयक्ष्मी च यो नरः (च0ई0)
  सुश्रुत – वातव्याधी प्रमेहश्च कुष्ठमर्शो भगन्दरम् ।
  अश्मरी मूढगर्भश्च तथैवोदरं अष्टमम् ।। (सु0सू0 33)

- **चतुष्पादक क्रम –**
  चरक – भिषक द्रव्याणुपस्थाता रोगी पाद चतुष्टयम् ।
  सुश्रुत – वैधौ व्याध्युपसृष्टश्च भेषजं परिचारक
  भेल – भिषक को अन्त में माना है।
- **बल का अनुमान –**
  चरक – व्यायाम से
  सुश्रुत – व्यायाम + स्थिरता से
- **अक्रियायां ध्रुवं मृत्यु क्रियायां संशयो भवेत सन्दर्भ है–**
  चरक – सान्निपातिक उदर रोग में
  सुश्रुत – अश्मरी प्रकरण में
  हारीत – जलोदर में
- **फलों में श्रेष्ठ है –**
  चरक – द्राक्षा
  सुश्रुत – आमलकी
  वाग्भट – द्राक्षा
- विलेपी बहुसिक्थाः स्याद् यवागुर्विरलद्रवा – सुश्रुत
  यवागु बहुसिक्था स्याद विलेपिर्विरलद्रवा – शार्गधर
- **क्लोम है –**
  फुफ्फुस व उंडुक – गंगाधर, हृदय – चक्रपाणि
  पित्ताशय – डल्हण, कण्डनाड़ी व श्वासनाड़ी – गणनाथसेन
- सर्पांगभिहत – सुश्रुत – वात का प्रकोप
  शंकाविष – चरक – वात का प्रकोप
- **सर्पविष आचूषणार्थ –**
  चरक – मुख में मिट्टी/आटा भरकर करे
  सुश्रुत – मुख में वस्त्र भरकर करें
- **नवायस लौह का रोगाधिकार –**
  चरक – पाण्डु + अनुपान मधु सर्पि   शोथ + मधु (का)
  सुश्रुत – प्रमेह पिड़िका
- **महास्नेह प्रयोग –**

चरकानुसार –

P सर्पि – पित्त अनिलहर, रसं शुक्र ओजसां हितं, निवार्पणं, मृदुकर, स्वरवर्णप्रसादक

V तैल – वातशामक मगर कफ वर्धक नहीं, बलवर्धक, त्वच्य, उष्मा व मांस को स्थिर रखने वाला, योनिविशोधक

वसा– विद्ध एवं भग्न में, योनिभ्रंश में, कर्ण व शिरःशूल नाशक, पुरूषार्थ वृद्धि हेतु व नित्य व्यायाम करने वाले पुरूषो में उपयोगी

मज्जा – बल, शुक्र, रस, श्लेष्मा, मेदा व मज्जा का वर्धन करने वाला

सुश्रुतानुसार –
सर्पि – विषार्त, हीनबुद्धि व वातपैत्तिक विकारों में उपयोगी
तैल – उव्यसन्न कफमेद एवं कृमिकोष्ठ में उपयोगी
वसा – तीव्राग्नि वाले एवं वायु हो जिसका प्राण है ऐसे लोगों में उपयोगी
मज्जा – क्रूरकोष्ठ में एवं वातज विकारों में उपयोगी।

- **रोगानुसार स्नेह पाक का प्रयोग –**

	चरक	सुश्रुत
मृदु पाक	नस्य	पान
मध्य पाक	पान व वस्ति में	नस्य, अभ्यंग
खर पाक	अभ्यंग	वस्ति व कर्णपूरण में

– शार्गंधर ने मध्य पाक सर्वकर्म हेतु उपयोगी बताया है शेष चरकवत ही कहा है।

- **स्नेहसिद्धि के लक्षण –**

चरक व शार्गंधर	सुश्रुत & शा.
फेन आगम – सर्पिसिद्धि	फेन आगम – तैल सिद्धि
फेन शान्ति – तैल सिद्धि	फेन शान्ति – सर्पि सिद्धि

- **गर्भ का मासानुमासिक विकास –**

प्रथम मास – चरक – खेटभूत, सत व असत रूप
सुश्रुत – कलल रूप
द्वितीय मास – चरक – धन स्वरूप (धन–पुरूष, पेशी–स्त्री, अर्बुद–नपुंसक)
सुश्रुत – महाभूतों से पाक, घन, अर्बुद, पेशी स्वरूप
तृतीय मास – चरक – सुःख दुख की वेदना, दौह्रद उत्पत्ति, सर्वेन्द्रियां एवं सर्वावयवो की उत्पत्ति, स्पन्दन प्रारम्भ
सुश्रुत – हस्त, पाद, शिर व पंचपिंड़को का निर्माण, अंग प्रत्यंग विभाग सूक्ष्म
चतुर्थ मास : चरक – गर्भ की स्थिरता बढ़ती है
– गर्भिणी का शरीर भार बढ़ जाता है
सुश्रुत – गर्भ ह्रदय व चेतना का प्रार्दुभाव, गर्भिणी की दौह्रद संज्ञा
– अंग प्रत्यंग विभाग प्रव्यक्त
पंचम मास – चरक – गर्भ के मांस व रक्त की अधिक वृद्धि, गर्भिणी कृश हो जाती है।
सुश्रुत – मनः प्रतिबुद्धतंर भवति।
षष्टम मास – चरक – बालक के बल वर्णादि की वृद्धिः फलतः गर्भिणी के बल व वर्ण की हानि होती है
सुश्रुत – षष्ठे बुद्धिः
सप्तम मास – चरक – गर्भ सम्पूर्ण भावों से पुष्ट, गर्भिणी क्लान्ततम
सुश्रुत – सर्वांग प्रत्यंग विभाग प्रव्यक्ततरः
काश्यप – गर्भ त्रिदोषयुक्त

अष्टम मास –

चरक – ओज का आदान प्रदान

सुश्रुत – ओज की अस्थिरता नैऋत को बलि

नवममास –

चरक – आठवें मास के 1 दिन पश्चात से ही प्रसव काल प्रारम्भ जो कि 10 मास तक विघ्नरहित माना जाता है।

सुश्रुत – 9–12 वे मास तक प्रसवकाल

- **आधुनिक मतानुसार गर्भ का मासानुमासिक विकास –**

प्रथम मास – लम्बाई – 4 मिली0मी0

भार – 1.25 से 1.50 ग्राम

– एम्ब्रयो, जाइगोट से 1000 गुना बड़ा हो जाता है।

– तीसरे सप्ताह में ह्रदय में सूक्ष्म स्पन्दन प्रारम्भ

– तंत्रिका तंत्र, पाचन तंत्र एवं वृक्कों का निर्माण प्रारम्भ हो जाता है

द्वितीय मास – लम्बाई – 4 सेमी0

नाक, कान व पलकों की आकृति परिलक्षित

तृतीय मास –

लम्बाई – 7–9 सेमी0

भार – 20 ग्राम

– स्वरयंत्र, ओष्ठ एवं बन्द नैत्र पलकों का निर्माण हो जाता है।

– गर्भ निगरण व श्वसन क्रिया कर सकता है।

– ऑसिफिकेशन सेन्टरों का निर्माण प्रारम्भ हो जाता है।

– हाथ पैर की अंगुलियाँ स्पष्ट हो जाती है एवं उन पर नाखूनों के निशान बनने लगते है।

– गर्भ का लिंग स्पष्ट हो जाता है।

चतुर्थ मास –

लम्बाई – 22 सेमी0

भार – 240 ग्राम

– गर्भरोमों (लेनुगो) का प्रादुर्भाव

– वर्निक्स केसिओसा का निर्माण प्रारम्भ

– चेहरे की आकृति स्पष्ट हो जाती है।

– माता को गर्भ स्पन्दन की अनुभूति प्रारम्भ

पंचम मास –

लम्बाई – 30 सेमी0

भार – 480 ग्राम

– फेट डिपोजिशन प्रारम्भ

– ऑतो में मिकोनियम का प्रादुर्भाव प्रारम्भ

षष्टम मास –

लम्बाई – 33 सेमी0

भार – 1 किलों ग्राम
- भौहों का प्रादुर्भाव
- वृषणों की स्थिति वृक्कों के समीप
- आँखे खोल व बन्द कर सकता है।
- चिल्लाने का सामर्थ्य भी आ जाता है।

सप्तम् मास –

लम्बाई – 40 सेमी0
भार – 1.5 किलो0 ग्राम
- प्रायः सभी तंत्रिकीय रिफ्लेक्स स्थापित हो जाते है।
- वृषणों का इन्गवाइनेल केनाल में प्रवेश
- लेनुगो अदृश्य होना प्रारम्भ हो जाते है।
- फुफ्फुस परिपक्व हो जाते है।

अष्टम मास –

लम्बाई – 43 सेमी0
भार – 2 किलो ग्राम0
- वृषण वृषणकोष में उतर जाते है।

नवम मास –

लम्बाई – 47 सेमी0
भार – 2.5 किलो ग्राम
- सभी अंग प्रत्यंग पूर्ण

- सुश्रुत – तृतीय मास – इन्द्रियाँ सूक्ष्म
  चतुर्थ मास – इन्द्रियाँ प्रव्यक्त
  सप्तम मास – इन्द्रियाँ प्रव्यक्ततर

- **दौहृदावस्था –**

चरक – तृतीय मास 3
सुश्रुत – चतुर्थ मास 4
वाग्भट – 3 पक्ष से 5 मास तक 3-5
काश्यप – तृतीय मास 3

	लंबाई	वजन
1	4MM	1.25-1.50gm
2	4cm	
3	7-9cm	20gm
4	22cm	240gm
5	30 cm	480 gm
6	33cm	1 kg
7	40 cm	1.5kg
8	43cm	2kg
9	47 cm	2.5kg.

- **गर्भ में सर्वप्रथम उत्पत्ति –**

	चरक	**सुश्रुत**
शिर	कुमार शिराभरद्वाज	शौनक
हृदय	कांकायन	कृतवीर्य
नाभि	भद्रकाप्य	पाराशर
गुदा	भद्रशौनक	पाणिपाद – मार्कण्डेय
हाथ पैर	बडिश	मध्य शरीर – सुभूति गौतम
इन्द्रियाँ	वैदेह जनक	सर्वांग – धन्वतरी
अचिन्त्य	मरीच काश्यप	
सर्वांग	आत्रेय	

- **त्वचा वर्गीकरण**

चरकानुसार –

प्रथम – उदकधरा

द्वितीय – असृकधरा

तृतीय – सिध्म व किलास का अधिष्ठान

चतुर्थ – दद्रु व कुष्ठ का अधिष्ठान

पंचम – अलजी व विद्रधि का अधिष्ठान

षष्ठी – इसके कटने पर तमःप्रवेश व स्थूल मूल की पिडिकाओं की उत्पत्ति हो जाती है।

सुश्रुतानुसार –

A प्रथम–अवभासिनी–ब्रीही के 1/18 प्रमाण में – सर्ववर्ण व छाया की प्रकाशक, सिध्म, पद्म व कंटक का अधिष्ठान

L द्वितीय–लोहिता – ब्रीही के 1/16 प्रमाण में – तिलकालक, न्यच्छ व व्यंग का अधिष्ठान

S तृतीया–श्वेता – ब्रीही के 1/12 प्रमाण में – चर्मदल, अजगल्ली व मशकाधिष्ठाना

T चतुर्थी–ताम्रा – ब्रीही के 1/8 प्रमाण में – विविधकिलास, कुष्ठाधिष्ठाना

V पंचमी–वेदिनी – ब्रीही के 1/5 प्रमाण में – कुष्ठ, विसर्पाधिष्ठाना

R षष्टी – रोहिणी – ब्रीही भाग प्रमाण में – ग्रंथि, अपची, अर्बुद, श्लीपद, गलगण्डाधिष्ठाना

M सप्तमी – मांसधरा – ब्रीही द्वय भाग प्रमाण में –भगन्दर, विद्रधि, अर्शाधिष्ठाना

– ✓ कुष्ठ का अधिष्ठान वेदिनी व ताम्रा दोनों को माना है।

- **विषवेग –**

वेग	**चरक**	**सुश्रुत**
प्रथम	रस विकृत्ति	जिव्हा श्याववर्णी व श्यास की उत्पत्ति
द्वितीय	रक्तविकृत्ति (तमकश्वास)	आमाशय में विष, वेपथु
तृतीय	मांसविकृति	तालूशोष, तीव्रआमाशय शूल
चतुर्थ	सर्वदोष प्रकोप	हिक्का, आमाशय व पक्वाशय में पीडा
पंचम वेग	नीलादीनांतमसो	सर्वदोष प्रकोप, पर्वभेद, वैवर्ण्य दर्शन
षष्टम वेग	हिक्का	तीव्रातिसार, बुद्धि व प्राणों का नाश
सप्तम वेग	स्कन्ध भंग	स्कन्ध, कटिपात व मृत्यु
अष्टम	मृत्यु	×

- विषवेगो की चिकित्सा –

	चरक	सुश्रुत
प्रथम वेग	दाहकर्म, वमन	वमन, मधु व धृत से अगदपान
द्वितीय वेग	विरेचन	वमन, विरेचन
तृतीय वेग	क्षारागदपान	अगदपान, नस्य, अंजन
चतुर्थ वेग	गौमयरस, कपित्थ मधु प्रयोग	स्नेहमिश्रित अगदपान
पंचम वेग	काकाण्ड व शिरीष प्रयोग	मधुयष्ठी क्वाथ+अगद प्रयोग
षष्टम वेग	संज्ञास्थापक औषध प्रयोग	अवपीड नस्य व अतिसार की चिकित्सा
सप्तम वेग	स्थावर में जंगमविष प्रयोग व सर्पदष्ट, काकपद चीरा	काकपदचीरा
अष्टम वेग	पलाश बीज चूर्ण व मोरपित्त का प्रयोग	×

- गर्भिणी की मासानुमासिक परिचर्या –

मास	चरक	सुश्रुत
प्रथम मास	शीतल दुग्ध	1–3 मास तक मधुर, शीत व द्रव आहार दे।
द्वितीय मास	मधुर गण से सिद्धक्षीर	1–3 मास तक मधुर, शीत व द्रव आहार दे।
तृतीय मास	दूध + मधु + धृत	1–3 मास तक मधुर, शीत व द्रव आहार दे।
चतुर्थ मास	दूध+मक्खन या 1 अक्ष प्रमाण में मक्खन	पयोनवनीत संसृष्ट आहार या जांगलमांस युक्त आहार
पंचम मास	दूध में धृत मिलाकर	दूध में धृत मिलाकर
षष्टम मास	मधुरगण से औषध सिद्ध दूध में धृत मिलाकर	श्वदंष्ट्रा सिद्ध यवागु प्रयोग
सप्तम मास	मधुरगण से औषध सिद्ध दूध में धृत मिलाकर	पृथकपर्णी से सिद्ध धृत प्रयोग
अष्टम	यवागु, दूध व धृत प्रयोग	बदरोदक क्वाथ से आस्थापन वस्ति तदन्तर मधुर गण व दूध से अनुवासन वस्ति
नवम	अनुवासन वस्ति	×

- स्रोतस मूल –

चरक – 13 स्रोतस

सुश्रुत – 11 जोड़े स्रोतस

	नाम स्रोतस	चरक	सुश्रुत
1.	प्राणवह	हृदयं मूल महास्रोतश्च	हृदयं रसवाहिन्यश्च धमन्य
2.	उदकवह	तालूमूलं क्लोमं च	तालूमूलं क्लोम च
3.	अन्नवह	आमाशयो मूलं, वामं च पार्श्व	आमाशयोऽन्नवाहिन्यश्च धमन्यः
4.	रसवह	हृदयं मूलं दशधमन्यश्च	हृदयं रसवाहिन्यश्च धमन्यः
5.	रक्तवह	यकृन्मूलं प्लीहा च	यकृत प्लीहानों रक्तवाहिन्यश्च धमन्यः
6.	मांसवह	स्नायुर्मूलं त्वक च	स्नायु त्वचं रक्तवाहिन्यश्च धमन्यः
7.	मेदोवह	वृक्कौमूलं वपावहनं च	कटिवृक्कौ च
8.	अस्थिवह	मेदो मूलं जघनं च	×
9.	मज्जावह	अस्थिनी मूलं सन्धयश्च	×
10.	शुक्रवह	वृषणौमूलं शैफश्च	स्तनौवृषणौ च
11.	मूत्रवह	वस्तिमूलं, वंक्षणौ च	वस्तिमेढ्रं च
12.	स्वेदवह	मेदोमूलं, लोमकूपश्च	×
13.	पुरीषवह	पक्वाशयोमूलं, स्थूल गुदं च	पक्वाशयो गुदं च
14.	आर्त्तववह	×	गर्भाशय आर्त्तव वाहिन्यश्च धमन्यः

- **स्रोतोविद्ध लक्षण (सुश्रुत) –**

प्राणवह – आक्रोशन विनमनमोहन वेपनानि मरणं वा
अन्नवह – आध्मानं शूलोऽन्नद्वैषश्छर्दि पिपासा आन्ध्यं मरणं च ।
उदकवह – पिपासा, सद्योमरणं च।
रसवह – प्राणवहविद्धवत मरणं तत् लिंगानि च।
रक्तवह – श्यावांगता ज्वरो दाहः पाण्डुता शोणितागमनं रक्तनैत्रता च।
मांसवह – श्वयर्थु मांसशोष सिराग्रंथयो मरणं च
मेदोवह – स्वेदागमनं स्निग्धांगता तालुशोषः स्थूलता शोफ पिपासा च।
मूत्रवह – आनद्धवस्तिता, मूत्रनिरोध, स्तब्ध मेढ्रता
पुरीषवह – आनाहर्दुगन्धता, ग्रथितांत्रता च
शुक्रवह – क्लीबता चिरात प्रसेको रक्त शुक्रता च।
आर्त्तव वह – बन्ध्यत्वं, मैथुनासहिष्णुत्वं, आर्त्तवनाशश्च

- रक्तवाहिन्यश्च धमन्य मूल है – रक्तवह व मांसवह स्रोतस का
- पिपासा लक्षण है – अन्नवह, उदकवह व मेदोवह स्रोतोविद्ध का
- मरण लक्षण है – प्राणवह, अन्नवह, उदकवह, रसवह व मांसवह स्रोतोविद्धी के
- सद्योमरण लक्षण है – उदकवह स्रोतोविद्ध
- आन्ध्य लक्षण है – अन्नवह स्रोतोविद्ध

– आध्मान लक्षण है – अन्नवह स्रोतोविद्ध
– आनाह लक्षण है – पुरीषवह स्रोतोविद्ध

- **स्रोतोदुष्टि के कारण (चरकानुसार)**

प्राणवह – धातुक्षय, वेग संधारण, व्यायामक्षुधितस्य च।
उदकवह – अतिशुष्कान्नसेवन, मदिरापान
रसवह – गुरू आहारं, चिन्त्यानां च अतिचिन्तनाच्च (अधिक सोचना)
रक्तवह – विदाही अन्नपान
मांसवह – भुक्त्वा च स्वपतां दिवा (खाने के बाद दिवास्वाप)
मेदोवह – भयात, वारूण्यां च अतिसेवनात, अव्यायाम, अतिव्यायाम
मज्जावह – आघात, विरूद्धानां च सेवनात
अस्थिवह – संक्षोभ, व्यायाम
शुक्रवह – वेगावरोध, शस्त्रक्षाराग्नि
मूत्रवह – वेगावरोध
पुरीषवह – वेगावरोध, अध्यशन, अत्यशन
स्वेदवह – व्यायाम, अतिआतप, क्रोध, शोक व भय

- स्रोतोदुष्टिकारक आहार होता है – दोषों के समान व धातुओं के विपरीत

- **स्रोतोदुष्टि चिकित्सा – (चरक)**

प्राणवह स्रोतोदुष्टि में – श्वास की चिकित्सा
उदकवह स्रोतोदुष्टि में – तृष्णा की चिकित्सा
अन्नवह स्रोतोदुष्टि में – आमदोष की चिकित्सा
मूत्रवह स्रोतोदुष्टि में – मूत्रकृच्छ्र की चिकित्सा
मलवह स्रोतोदुष्टि में – अतिसार की चिकित्सा
स्वेदवह स्रोतोदुष्टि में – ज्वर की चिकित्सा

- **अर्न्तविद्रधियों के लक्षण –**

	नाम	चरक	सुश्रुत
1.	हृदय	धड़कन, तमकश्वास, कास	हृदय में जकड़ाहट
2.	क्लोम	पिपासा, गलग्रह	श्वास, पिपासाधिक्य
3.	यकृत	श्वासवृद्धि	श्वास व पिपासा
4.	प्लीहा	उच्छवास में वृद्धि	उच्छवासरोध
5.	उदर	पार्श्व, स्कन्धशूल	वातप्रकोप
6.	वृक्क	पार्श्व पृष्ठकटिग्रह	पार्श्व संकोच
7.	नाभि	हिक्का	हिक्का, आटोप
8.	वंक्षण	पैरो में अवसाद	पार्श्व, पृष्ठकटिग्रह
9.	मूत्राशय	मूत्रकृच्छ्रता, मूत्रप्रवृत्ति	मूत्रावरोध
10.	गुदा	×	वात व मलावरोध

- **संग्रहकाल –**

चरकानुसार –
मूल – शिशिर व ग्रीष्म में
नूतन पत्र व शाखा – वर्षा व वसन्त
छाल, कन्द व क्षीर – शरद
(स्नूही क्षीर–शिशिर में)
सार – हेमन्त
पुष्प व फल – यथा ऋतु में

शार्ंगधर -
वमन विरेचनार्थ – वसन्त के अन्त में ग्राह्य
अन्य सभी कार्यो हेतु – शरद ऋतु में ग्राह्य

राजनिघण्टु
कन्द – हिम ऋतु में
मूल – शिशिर
पुष्प व फल – वसन्त
प्रवाल पत्र – निदाघ काल
पंचांग – शरद

- ***सिराओं का मूल -***
सुश्रुत – नाभि
वाग्भट – हृदय

- ***व्रणाश्रय -***
सुश्रुत (8) – त्वचा, मांस, सिरा, स्नायु, अस्थि, संधि, कोष्ठ, मर्म
चरक (8) – त्वचा, मांस, सिरा, स्नायु, अस्थि, मेद, कोष्ठ, मर्म

- आमाशयस्थ श्लेष्मा शेष (4) कफो को पोषण देता है – सुश्रुत
त्रिकस्थ श्लेष्मा शेष (4) कफो को पोषण देता है – चरक

- **श्रेष्ठ अंजन –**
चरक – सौवीरांजन
सुश्रुत – स्रोतोजंन

- **वर्षा ऋतु में सेवन योग्य –**
चरक – अम्ल, लवण व स्निग्ध सेवन (कूप के जल का सेवन) 23
सुश्रुत – कटु, तिक्त, कषाय सेवन (आन्तरिक्ष जल का सेवन) 456

- वातिक शोथ – दिवावली V
कफज शोथ – रात्रिवली K

- कर्णिनी व उपप्लूता योनिव्यापद – वात कफज VK
परिप्लूता व वामिनी योनिव्यापद – वात पित्तज VP

- प्रतिमार्गहरण चिकित्सा – रक्तपित्त में
प्रतिद्वन्द चिकित्सा – उन्माद में
जुगुप्सा चिकित्सा – राजयक्ष्मा में
व्यत्यासात चिकित्सा – श्वास, कास, अर्श, पित्तावृतवात में

- एको महागद – अत्तत्वाभिनिवेश
महादोष महागदम् – मद्य
महागदं महावेगं अग्निवत शीघ्रकारी – रक्तपित्त
महामूला, महावेगा, महाशब्दा, महाबला – हिक्का
महाव्याधि – हलीमक

- सर्ववहा संज्ञा – सिरा की
जीवनसाक्षिणी संज्ञा – धमनी की
- मूत्रमार्गगत शल्य निर्हरणार्थ यंत्र –
सुश्रुत – बडिश
वाग्भट – सर्पफण मुख
- मूढगर्भ की गति – 8
मूढगर्भ के भेद – 4
- बालग्रह –चरक – वर्णन नही
  सुश्रुत – 9
  हारीत – 8
  काश्यप – 10
  वाग्भट, भावप्रकश, योगरत्नाकर व माधव – 12
- त्रिरात्रं परमं तस्य जन्तोभर्वति जीवति "कथन का संदर्भ है–
चरक – रोहिणी
काश्यप – कूटपाकल सन्निपात हेतु
माधवकर – त्र्याहात जीवितं भैषज्यं – शंखक हेतु
- **नैत्र मण्डल –**
सुश्रुत – 5, वाग्भट – 4
- नाभि व हृदय के मध्य गौपुच्छवत उभार – बद्धगुदोदर का लक्षण
नाभि के नीचे गौपुच्छाकार उभार – परिस्राव्युदर (छिद्रोदर) का लक्षण
- "मुष्कवत" आकृति – गलगण्ड का सामान्य लक्षण
"अलाबूवत" आकृति – मेदोज गलगण्ड का लक्षण
- आध्मान में चिकित्सा – फलवर्ति
प्रत्याधमान में चिकित्सा – वमन
- नूतन गुग्गुलु – मांस व वीर्यवर्धक
पुराण गुग्गुलु – मांस व वीर्यक्षपण करने वाली
- अभ्यंग – कफवात शामक VK↓
उद्वर्तन – कफ मेदो विम्लापक
- सुश्रुत – पादप्रक्षालन – चक्षुप्रसादन, पादाभ्यंग – चक्षुष्य
चरक – पादाभ्यंग – दृष्टि प्रसाधन, पादुकाधारण – चक्षुष्य
- औषधीनां पति – सोम
औषधाधिपती – चन्द्रमा
- स्पर्शाज्ञत्वमतिस्वेदो न वा.............. – कुष्ठ का पूर्वरूप
स्वेदोऽत्यर्थं न वा कार्ष्णयं स्पर्शाज्ञत्वं .... – वात रक्त का पूर्वरूप
- स्पर्शघ्नानाम् – कुष्ठ
उदरामय – अतिसार
- ....समुत्पत्तौ विज्ञेया सप्त धातवः – विसर्प
...........सप्तकौ द्रव्य संग्रह – कुष्ठ

- चरक ने भृष्ट मृत्तिका का वर्णन किया है – पुरीषविरजनीय महाकषाय में
- जम्बुपत्र, आम्रपल्लव, लाजा, मृत्तिका व अनार का वर्णन है – छर्दि निग्रहण महाकषाय में
- गैरिक व मृत्तिका के कपाल का वर्णन है – शोणितस्थापन महाकषाय में
- अशोक का वर्णन वेदनास्थापन महाकषाय में मिलता है न कि शोणितस्थापन में
- अर्जुन का वर्णन उर्दद प्रशमन महाकषाय में है हृद्यमहाकषाय में नहीं।
- **कर्णक्ष्वेड लक्षण –**
  सुश्रुत – अतीवक्ष्वेड
  अन्यत्र – वेणुघोषोपमम स्वन् (वात + पित्त)
- **कर्णनाद लक्षण –**
  सुश्रुत – श्रृणोति शब्दान विविधान
  अन्यत्र – भेरी, मृदंग, शंखानां (वातज)
- सर्वगात्रप्रकम्पिनी लक्षण – महाहिक्का का
  विप्लूताक्ष लक्षण – व्यपेता हिक्का का
  सधः प्राणहरा मताः – महाहिक्का का
  प्राणान्तिकी मताः – गम्भीरा का
  प्राणोपरोधिनी – व्यपेता हिक्का
- कपोत इव कूजन लक्षण है – अपतंत्रक का
  पारावत इव कूजन लक्षण है – क्षतज कास का
- **संसर्जन क्रम मे देय आहार का क्रम –**
  पेया → विलेपी → अकृत यूष → कृत यूष → अकृत मांसरस → कृत मांस रस
- **संसर्जन मे देय रसो का क्रम –**
  स्निग्ध, अम्ल व मधुर → अम्ल, लवण → मधुर, तिक्त → कषाय, कटु
- **कर्म वस्ति – (30)** अन्त मे 5 अनुवासन – आदि में 1 अनु0–मध्य में 12 अनु0 व 12 निरूह
  काल वस्ति – (16) अन्त मे 3 अनुवासन – आदि में 1 अनु0–मध्य में 6 अनु0 व 6 निरूह
  योग वस्ति – (8) अन्त में 1 अनुवासन – आदि में 1 अनु0–मध्य में 3 अनु0 व 3 निरूह
- महाभर्म – हृदय, वस्ति व नाभि
  त्रिमर्म – हृदय, वस्ति व शिर
- **१२ प्रसृत (२४ पल) की निरूह वस्ति के घटक –**

दोष	**क्वाथ**	**कल्क**	**स्नेह**	**मधु**	**सैंधव**
वातज	5 प्रसृत	1 प्रसृत	12/4=3 प्रसृत	1½ प्रसृत	1½ प्रसृत
पित्तज	5 प्रसृत	1 प्रसृत	12/6=2 प्रसृत	2 प्रसृत	2 प्रसृत
कफज	5 प्रसृत	1 प्रसृत	12/8=1½ प्रसृत	3 प्रसृत	1½ प्रसृत

- निरूह की मात्रा अनुवासन से 4 गुना होती है (मनुष्यो में)
  निरूह की मात्रा अनुवासन से 8 गुना होती है (जानवरों में)
- **निरूह वस्ति संख्या –**
  वात दोष – 1, पित्त दोष – 2, कफ दोष – 3
- **निरूह वस्ति निर्माण क्रम**
  मधु + सैंधव → स्नेह → कल्क → क्वाथ मिलावे
- **पशुओं में वस्ति क्रम –**

नाम पशु	प्रयुक्त वस्ति	नैत्र की लम्बाई	मात्रा
हाथी	भेड़ व बकरी की वस्ति से दे	1 अरत्नि (22 अंगुल)	4 आढक
ऊँट	बकरी की वस्ति से दे	18 अंगुल	2 आढक
घोड़ा व गाय	भैंस की वस्ति से दे	16 अंगुल	2/3 प्रस्थ
बकरी व भेड़	बूढ़े बैल की वस्ति से दे	10 अंगुल	1 प्रस्थ

- महादोषकर भाव संख्या – 8
- **शिरोविरेचन संख्या –**
  उत्तम दोष में – 3 बार
  मध्यम दोष में – 2 बार
  हीन दोष में – 1 बार
- प्रतिमर्श नस्य की मात्रा – 2–2 बूंद
  मर्श नस्य की मात्रा – तर्पणी – 10 बिन्दु
  मध्यम – 8 बिन्दु
  हीन – 6 बिन्दु
- **शस्त्रो के प्रमुख कर्म –**
  मण्ड़लाग्र व करपत्र – छेदन व लेखन
  वृद्धिपत्र, नखशस्त्र, मुद्रिका, उत्पलपत्र, अर्धधार – छेदन व भेदन
  कुठारिका, ब्रीहीमुख, आरा, वेतस पत्र – वेधन
  बडिश, दन्तशंकु – आहरण
  ऐषणी – अनुलोमन
  शेष शस्त्रों से – विस्रावण कर्म करते है।

  · वेतसपत्र, सूची - वेधन
  ऐषणी - अनुलोमन + एषण
- **विभिन्न कर्मो हेतु शस्त्र की धार का प्रमाण** – A.I.C अ.स.
  छेदन हेतु – अर्द्धकैशिकी CAK मासूरी
  वेधन व विस्रावण हेतु – केशिकी V_2K कैशिकी
  लेखन – अर्द्धमासूरी LAM अर्द्धमासूरी
  भेदन – मासुरी BM
- **शस्त्रो की लम्बाई**
  मुद्रिका शस्त्र – तर्जनी के अग्रिम पर्व के बराबर

नख शस्त्र व ऐषणी – 8 अंगुल
शारीरमुख – 10 अंगुल
शेष शस्त्र – 6 अंगुल लम्बाई के होने चाहिए

- बाल, नख, क्षार व अग्नि, अंगुली उपयन्त्र एवं अनुशस्त्र दोनो है।
- शस्त्रानुशस्त्राणां श्रेष्ठः – क्षार (सुश्रुत)
  अनुशस्त्रों में श्रेष्ठ – जलौका (चरक)
- श्रृंग – वातज दुष्टि मे प्रयोग – 10 अंगुल तक रक्तमोक्षण करती है
  – 18 अंगुल लम्बा व 3 अंगुल परिधी होती है
  – सर्षपवत छिद्र होता है
  V

  अलाबू – – कफज दुष्टि में प्रयोग
  – 12 अंगुल तक रक्तमोक्षण संभव
  – 12 अंगुल लम्बा व 18 अंगुल चौडा होता है
  K

  जलौका – – पित्तज दुष्टि में उपयोगी
  – एक हस्त परिमाण तक रक्तमोक्षण
  P
- **अंगोत्पत्ति –**
  यकृत व प्लीहा – रक्त से
  फुफ्फुस – रक्त फेन से
  उण्डुक – रक्त के किट्ट से
  वृषण – मांस, मेद, कफ व रक्त से MMdKR
  वृक्क – मेद व रक्त से
  अपरा – आर्त्तव से
  हृदय व जिव्हा – मांस, रक्त व कफ से MRK
  पेशी – पित्तयुक्त वायु व मांस से
  हृदय – शोणित, कफ RK
  आन्त्र, गुद व वस्ति – त्रिदोष + रक्त
- **अर्श – (सुश्रुत)**
  वातार्श – कदम्ब पुष्प, तुण्डीकेरी, नाडीमुकुल, सुची मुखाकृतानि
  पित्तार्श – यकृतप्रकाशानि, शूकजिव्हा संस्थानी, यव मध्यानि जलौकावक्त्र सदृश्यानि
  श्लेष्मार्श – करीरपनसास्थि, गौस्तनाकाराणि
  रक्तार्श – न्योग्रोध प्ररोह, विद्रुम, काकणन्तिका फल सदृश्यानि
  चिकित्सा –
  औषध साध्य – नवीन व अल्प दोष युक्त
  क्षार साध्य – मृदु व प्रसृत अर्श
  अग्नि साध्य – कर्कश, स्थिर व पृथु अर्श
  शस्त्र साध्य – तनुमूल, उच्छ्रितानि व क्लेदयुक्त अर्श
- **शलाकायंत्र एवं उनके कार्य –**
  गण्डुपदमुख – 2 – ऐषण कर्म, सर्पफणमुख – 2 – व्यूहन कर्म
  शरपुंख – 2 – चालन कर्म, बड़िश – 2 – आहारण कर्म
  कार्पास कृतोष्णी – 6 – व्रण पौंछने हेतु / प्रमार्जन

मसूर दल – स्रोतोगत शल्य निर्हरण
दर्व्याकृति – 3 – क्षारकर्म एवं औषध प्रणिधान हेतु
जाम्बवोष्ठ व अंकुशमुख – 3, 3 – अग्निकर्म हेतु क्षार
कौलास्थिदल – 1 – नासार्बुद हरणार्थ + आहरण
कलाय परिमण्डल – 1 – अंजनार्थ - अंजन लगाना
मालतीपुष्प वृन्ताग्र – 1 – मूत्र मार्गविशोधनार्थ - मूत्रमार्ग विशोधन

- **शस्त्र को पकड़ने का स्थान –**

भेदन शस्त्र – फल व वृन्त के संयोग स्थल से
विस्रावण हेतु – वृन्ताग्र से पकड़े
एषणी, आरा व करपत्र को – मूल से पकड़े

- **जौंके –**

सविष	निर्विष
कृष्णा–अंजन सदृश्य व कृष्णवर्णी	कपिला–मनःशिला व मूँग सदृश्य
कर्बूरा – वर्मी मछली सदृश्य	पिंगला–रक्तवर्णी व आशुगामी
अलर्गदा – रोमयुक्त	शंकुमुखी–यकृदवर्णी व शीघ्रपायी
इन्द्रायुधा – इन्द्रधनुष सदृश्य	मूषिका – अनिष्ठ गंध वाली
गौचन्दना – गौवृषणवद (अधोभाग द्विधाकृत)	पुण्डरीक मुखी–मुद्गवर्णी
सामुद्रिका –	सावरिका–पद्मपत्रवर्णी,18 अंगुल लम्बी व पशुओं में उपयोगी।

- **दोषानुसार रक्त का लक्षण –**

V वातिक – अरूणवर्णी व नहीं जमनेवाला
P पैत्तिक – विस्रगंधि
K कफज – गैरिकोदक व मांसपेशी सदृश्य
S सान्निपातिक – कांजी सदृश्य
R रक्तज – पित्त सदृश्य मगर अधिक काला

- **असम्यक कर्णवेधन पर विभिन्न सिराओं पर आघात के लक्षण –**

कालिका – ज्वर, दाह, श्वयथु व वेदना
मर्मरिका – ज्वर, वेदना, ग्रंथि
लोहितिका – मन्यास्तम्भ, अपतानक, शिरोग्रह व कर्णशूल

- **कर्ण वेधन से पूर्व दोषानुसार सिंचन –**

वातिक – कांजी + गर्म जल से
पैत्तिक – दुग्ध + शीतल जल से
कफज – सुरा मण्ड + उष्णजल से

- **विभिन्न बंधन व उनके प्रयोग स्थल –**

कोशबंध – अंगुली व अंगुली पर्व पर
दाम बंध – सम्बाधांग
स्वस्तिक – सन्धि, कूर्चक, भ्रू, स्तन व कर्णतल पर
अनुवेल्लित – हस्त व पाद पर

मुत्तोली – ग्रीवा व लिंग पर
मण्डल – उदर, उरू व बाहू पर
स्थगिका – अंगुष्ठ, अंगुली व शिश्नाग्र पर
यमक – संयुक्त व्रणो पर
खट्वा – हनु, शंख व गंड पर
चीन – नैत्र व अपांग पर
विबन्ध – पीठ, उदर व छाती पर
वितान – सिर पर
गोफणा – ठोडी, नासा, ओष्ठ, वस्ति
पन्चांगी – जत्रुर्ध्व
उत्संग – बाहु पर (वाग्भट)

- **अहोरात्र काल – सदृश्य ऋतु लक्षण**

प्रत्यूष	–	हेमन्त के सदृश लक्षण
पूर्वान्ह	–	वसन्त के सदृश लक्षण
मध्यान्ह	–	ग्रीष्म के सदृश लक्षण
अपरान्ह	–	प्रावृट के सदृश लक्षण
संध्या	–	वर्षा के सदृश लक्षण
रात्रि	–	शरद के सदृश लक्षण

- **विभिन्न ऋतुओं में प्रवाहित वायु की दिशा –**

हेमन्त – उत्तरी वायु वसन्त में – दक्षिणी वायु
ग्रीष्म में – नैऋत दिशा से वायु प्रावृट – पश्चिम दिशा से

हे - उ
व - द
ग्री - नै
प्रा - प

- **दोष प्रकोप काल –**

वात प्रकोप – प्रत्यूषकाल, अपरान्ह व जीर्णेऽन्ने, घर्मान्ते
पित्त प्रकोप – मध्यान्ह, अर्द्धरात्रि व जीर्यत्यऽन्ने, मेघान्ते
कफ प्रकोप – प्रदोष, पूर्वान्ह व भुक्तमात्रे, बसन्त

दोष	संचय	प्रकोप	प्रसर
वात	स्तब्ध पूर्ण कोष्ठता	कोष्ठतोद, संचरण	वार्योविमार्गगमन आटोप
पित्त	पीतावभासता मन्दौष्मताचांगानां	अम्लिका, पिपासा, परिदाह	ओष,चोष, धूमायनानि
कफ	गौरवमालस्य, चय कारण विद्वैष	अन्नद्वैष हृदयोत्क्लेद	अरोचक, अविपाक अंगसाद, छर्दि

- **विभिन्न स्थानों पर होने वाले व्रणो का स्राव –**

त्वचा पर व्रण – जल सदृश्य, पीतवर्णी स्राव
मांस में व्रण – धृत सदृश्य, श्वेतवर्णी स्राव
सिरा पर व्रण – तत्काल – रक्तातिप्रवृत्ति
कालान्तर में – ओस सदृश्य स्राव
स्नायु – सिंधाणक सदृश्य स्राव
अस्थि – अस्थिसीप सदृश्य, पूय व मलयुक्त स्राव

संधि पर व्रण – आकुंचन पर चासनी सदृश्य स्राव

कोष्ठ में व्रण – मूत्र, पुरीष, पूय व रक्त की प्रवृत्ति

- भस्म कपोतास्थि वर्णी व्रण – वातिक व्रण
- असाध्य व्रण – मांसपिण्डवद, अश्वापान (घोडी के भगौष्ठ सदृश), गौ श्रृंगवत
- **मुख्य व्याधियाँ व उनके निवारणार्थ कृत शस्त्रकर्म –**

छेदन कर्म – भगन्दर (शतपोनक), श्लैष्मिक ग्रंथि, नाड़ीव्रण, अर्श, गलशुण्डिका, वल्मीक व उपदंश में।

भेदन कर्म – विसर्प, वृद्धि, प्रमेहपिड़का, व्रणशोफ, नाडीव्रण, प्रायः सभी क्षुद्ररोग, तालुपुप्पुट, तुण्डीकेरी

लेखन कर्म – रोहिणी, उपजिव्हिका, अधिजिव्हिका, अर्श, मण्डलकुष्ठ, किलास

ऐषण कर्म – शल्ययुक्त नाडी व उन्मार्गी व्रणों में

वेधन – मूत्रवृद्धि, जलोदर

विस्रावण – सान्निपातिक के अतिरिक्त शेष विद्रधियाँ, श्लीपद, कर्णपाली के रोग, स्तनरोग, तालुकण्टक, कृमिदन्त, दन्तवेष्ट, उपकुश, शीताद।

- **मर्माघात के लक्षण –**

मर्म विद्ध का सामान्य लक्षण – मांसोदकाभं रूधिर प्रवृत्ति

सिरा पर आधात – सुरेन्द्रगोपप्रतिमं प्रभूतं रक्तं

स्नायु पर आधात – कौब्जयं, तीव्रपीडा, देर से व्रण का भरना

संधि पर आधात – तीव्र रूजा

अस्थि पर आधात – घोरा रूजो यस्य निशादिनेषु, सर्वासुअवस्थासु न शान्तेऽस्ति

मांस पर आधात – स्पर्श न जानाति, विपाण्डुवर्णी

- **व्याधिभेद – (सुश्रुत)**

औपसर्गिक रोग – प्रथम उत्पन्न व्याधि के उत्तरकाल में उत्पन्न व्याधि

प्राक्केवल रोग – इसमें पूर्वरूप व उपद्रव नहीं होते है

अन्य लक्षण रोग – इसमें केवल पूर्वरूप उत्पन्न होते है।

- **सुश्रुतानुसार कुछ प्रमुख गण व उनके कर्म –**

विदारीगंधादि – पित्त + वात शामक

आरग्वधादि – कफ + विष नाशक (व्रणशोधक)

वरूणादि – कफ + मेद नाशक (आभ्यान्तर विद्रधि नाशक)

वीरतर्वादि – मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी व शर्करा नाशक

सालसरादि – प्रमेह व पाण्डु नाशक

रोध्रादि – अतिसार नाशक

अर्कादि – कृमि, कुष्ठ नाशक

पिप्पल्यादि – आमपाचक

वचादि व हरिद्रादि – दुष्ट स्तन्य शोधक

श्यामादि – उदावर्तनाशक

काकोल्यादि – जीवनीय व वृंहणीय

गुडुच्यादि – सर्व ज्वरहर

अम्बवष्ठादि – पक्वातिसार नाशक

एलादि – विष नाशक
श्वदंष्ट्रादि गण – शर्करा नाशक + वीरतर्वादि
मूषकादि गण – शर्करा नाशक
ऊषकादि गण – अश्मरी, शर्करा व मूत्रकृच्छ्र नाशक + वीरतर्वादि
आमलक्यादि गण – नेत्ररोग नाशक
सुरसादि गण – प्रतिश्याय, कास, श्वासनाशक

- **सुश्रुतानुसार कुछ विशिष्ट मात्राऐं –**
क्वाथ – 1 अंजली (4 पल)
चूर्ण – 1 विडालपदक (1 कर्ष)
कल्क – 1 अक्ष (1 कर्ष)

- **कर्मानुसार महाभूत प्राधान्य (सुश्रुत)**
विरेचन – पृथिवी + जल PJ
वमन द्रव्य – वायु + अग्नि VT
संशमन – आकाश
सांग्राही – वायु (शार्ङ्गधर – तेज)
दीपन – अग्नि महाभूत प्रधान
लेखन – वायु + अग्नि प्रधान VT

- **सुश्रुतानुसार विरेचनार्थ श्रेष्ठ –**
मूल – अरूण त्रिवृत की,
फल – हरीतकी का,
दुग्ध – स्नूही का
त्वचा – तिल्वक की
तैल – एरण्ड का

- **विभिन्न ऋतुओं के अनुसार ग्राह्या जल (सुश्रुत)**
वसन्त में – कुऐं व झरने का जल
ग्रीष्म में – कुऐं व झरने का जल
प्रावृट – चौण्ड्य जल
वर्षा – आन्तरिक्ष व औदभिद जल
शरद – सभी जल ग्राह्या है।
हेमन्त – सरोवर का जल ग्राह्या है।

- **मधातिरेक का क्रम –**
कफ < वात < पित्त (शीघ्रतम)

- **सुश्रुतानुसार मांसवर्ग** – (6) जलेशाय, आनूप, ग्राम्य, क्रव्यभुज, एकशफ जांगलाश्चा
पुनः दो भेद – (1) जांगला – 8 प्रकार के – जंधाला, विष्कर, प्रतुद, गुहाशय, प्रसह्या, पर्णभृत व ग्राम्या (8)
(2) आनूप – 5 प्रकार – कूलचरा, प्लवा, कोषस्थ, पादिन व मत्स्या (5)

- **ऋतु के अनुसार भोजन ग्रहण काल (सुश्रुत)**

  हेमन्त व शिशिर में → रात्रि लम्बी → भोजन प्रातः काल ग्राह्य

  ग्रीष्म व प्रावृट में → दिन लम्बे → भोजन अपरान्ह में ग्राह्य

  शरद व वसन्त में → दिन व रात समान → भोजन मध्यान्ह में ग्राह्य

- अहंकार भेद – (सुश्रुत)

  वैकारिक (सात्विक), तैजस (राजस) } 11 इन्द्रियो की उत्पत्ति

  भूतादि (तामस), तैजस (राजस) } पंचतन्मात्रा व पंचमहाभूत की उत्पत्ति

- **महाभूतों व मानस गुणों में सम्बन्ध (सुश्रुत)**

  आकाश – सत्व बहुल

  वायु – रजो बहुल

  अग्नि – सत्व + रज

  जल – सत्व + तम

  पृथिवी – तम बहुल

- सर्वचेष्टासमूहकर – वायु

  सर्व द्रव समूह – जल

  सर्वमूर्त्त समूह – पृथिवी

  सर्वच्छिद्र समूह विविक्तता – आकाश

- **भोजन में उत्तरोतर गुरूता का क्रम –**

  पेय < लेह < अक्ष < भक्ष्य

- **गर्भ का पोषण –**

  असंजातसार अवस्था में – तिर्यकगामी धमनियो के उपस्नेह से

  संजातसार अवस्था में – गर्भनाडी/रसवहा के उपस्नेह से

  (चरक – उपस्नेह व उपस्वेद दोनों से)

- द्वादश प्राण – अग्नि + सोम + अनिल + सत्व + रज + तम + पंचेन्द्रियाँ + भूतात्मा

- मेद के मृदुपाक से निर्माण – शिरा का

  मेद के खरपाक से निर्माण – स्नायु का

- दिवास्वप्न है – सर्वदोष प्रकोपक KP.(च) T.(सु)

  रात्रि जागरण है – वात पित्त प्रकोपक VP↑

- **त्वचागत दोष की गंभीरता में रक्तमोक्षणार्थ क्रम –**

  सिरा > विषाण > तुम्बी > जलौका > प्रच्छान

  अर्थात सर्वाधिक गहराई में दोष की स्थिति होने पर सिरा वेधन से रक्तमोक्षण करना चाहिए।

- **औषध मात्रा (सुश्रुत)**

  क्षीरप हेतु – अंगुली पर्व पर आ सकने वाले प्रमाण में

  क्षीरान्नाद – कोलास्थि प्रमाण में

  अन्नाद – कोल प्रमाण में

- वातज व्रण – कृष्णवर्णी

  पैत्तिक व्रण – किंशुकोदकाभ, उष्णस्रावी (किंशुकोदकाभ स्राव - कन्या)

  कफज व्रण – प्रततचण्ड, कण्डुबहुल

  रक्तज व्रण – प्रवालदलनिचय प्रकाशः ।

- सुश्रुत तमक श्वास में केवल प्रतमक का समावेश करते है जबकी चरक सन्तमक व प्रतमक दोनों का करते हैं।
- "समवायि" शब्द – द्रव्य की परिभाषा में है।
  समवायी शब्द – गुण की परिभाषा में है।
- प्रकीर्या – लताकरंज
  उदकीर्या – डिठौरी
- ग्राही द्रव्य – उष्णवीर्य, कटु रस प्रधान, वातशामक व अग्नि महाभूत प्रधान होते है यथा शुण्ठी व जीरक
  स्तम्भन द्रव्य – शीतवीर्य, कषाय रस प्रधान व वातवर्धक होते है।
- – सुखविरेचक/अनुलोमन – अपक्व मल की प्रवृत्ति नहीं करवाते है – हरीतकी, त्रिवृत
  – मृदुविरेचक/स्रंसन–पक्व व अपक्व मल की प्रवृत्ति होती है – आरग्वध
  – तीक्ष्ण विरेचक/भेदन – कुटकी, जयपाल
- अरिष्ट रूप में प्रवृत्त निद्रा – आगन्तुकी
  तमो रूप में प्रवृत्त निद्रा – तमोभवा
- मूत्रकृच्छ्र व अरोचक को संतर्पणोत्थ एवं अपतर्पणोत्थ दोनों व्याधियों में रखा गया है।
- स्वेदन द्रव्यों में रूक्ष व स्निग्ध तथा स्थिर व सर दोनों गुण उपस्थित होते हैं।
- दीपन, पाचन + आनाहप्रशमन – पिपरामूल
  + अर्शोघ्न – चित्रक
  + संग्राहक – नागरमोथा, सोनापाठा
  + दाहप्रशमक, छर्दि व अतिसारनाशक – सुगंधबाला
  + सर्वदोषहर – अतिविषा
- संग्राहक, वातहर, वृष्य – पृश्निपर्णी
  संग्राहक, सर्वदोषहर, वृष्य – शालपर्णी
- आमदोष वर्धक – अतिमात्राशन
  अजीर्णोत्पादक – गुरू भोजन
- आयुह्रासकर – अनशन
  आयुनाशन – परदाराभिगमन
- वृंहण – मांस
  तर्पण – मांसरस
- तृप्तिकर – हष
  पुष्टिकर – निवृत्ति
- सुखकारक – एक काल भोजन
  आरोग्यकर – यथा काल भोजन
  शरीरकर्षक – प्रमिताशन
- KP श्लेष्मपित्त प्रशमन – मधु
  PK पित्त श्लेष्म प्रशमन – दुरालभा
  KP श्लेषमपित्त जनन – आविदुग्ध, शष्कुली व माष

- परिहार विरूद्ध है – सूअर के मांससेवनोपरान्त उष्ण जल सेवन
उपचार विरूद्ध है – घृतसेवनोपरान्त शीतल जल सेवन
- विरूद्ध की चिकित्सा में वस्तिकर्म का निर्देश नहीं है।
- अन्नक्लेदक – जल
कफक्लेदक – लवण
- आर्द्र पिप्पली – कफकारक
शुष्क पिप्पली – कफवात शामक
- वातानुलोमक – विड् नमक
त्रिदोष शामक – सैंधव नमक
- संख्या संप्राप्ति – अन्वय रहित होती है
विधि संप्राप्ति – अन्वय युक्त होती है
- तुषार – हेमन्त ऋतु
घर्म – वर्षा ऋतु
घनात्यय – शरद ऋतु
तापात्यय – प्रावृट ऋतु
शीतात्य – वसन्त ऋतु
- पैत्तिक व श्लेष्मिक गुल्म वस्ति में नहीं होते है।
- गुल्म में कोई दूष्य नहीं होता है।
- मधुर, शीत व आविल मूत्र की प्रवृत्ति – इक्षुबालिकारस प्रमेह
मधुर व शीत मूत्र की प्रवृत्ति – शीतमेह में
- पर्युषितं मूत्रं सान्द्रीभवति भाजने – सान्द्रमेह
संहन्यते मूत्रं किंचिद–किंचिद प्रसीदयति – सान्द्र प्रसाद मेह
- मसीवर्ण मूत्र – कालमेह
चाषपक्षिनिभ मूत्र – नीलमेह
- उष्ण गुण कालमेह व रक्तमेह दोनों में मिलता है
- गर्भ का मूल कारण है – आत्मज भाव
गर्भ का औपपादक कारण है – सत्वज भाव
- सान्निपातिक प्रदर का लक्षण – धृत, तैल, वसा, मज्जा सदृश गंध (चरक)
कफज स्तन्य दुष्टि का लक्षण – धृत, तैल, वसा, मज्जा सदृश्य गंध(चरक)
- अभेषज भेद – (2)
बाधन – तत्काल कष्टकारक – यथा विष व अग्नि
सानुबाधन – कालान्तर में कष्टदायक – यथा दूषिविष
- नागबला ग्रहण – माघ, फाल्गुन में (तप, तपस)
आमलक ग्रहण – माघ, फाल्गुन में (तप, तपस)
भल्लातक ग्रहण – ज्येष्ठ व आषाढ़ में (शुचि, शुक्र)
भल्लातक प्रयोग – अगहन व पूस में (सह, सहस्य)

- **भल्लातक कल्प प्रयोग –**
  चरक – रसायन – 10 भल्लातक से शुरू
  सुश्रुत – अर्श रोगाधिकार – 1 भल्लातक से शुरू
  वाग्भट – 8 भल्लातक से शुरू
- **शिलाजीत प्रयोग – (चरक)**
  प्रवर मात्रा – 4 तौला (1 पल) – 7 सप्ताह तक
  मध्य मात्रा – 2 तौला (1/2 पल) – 3 सप्ताह तक
  अवर मात्रा – 1 तौला (1 कर्ष) – 1 सप्ताह तक

नाम शिलाजीत	रस	स्वरूप	दोषकर्म
स्वर्ण शिलाजीत	मधुर, तिक्त	जपापुष्प सदृश	वात पित्त शामक
रजत शिलाजीत	कटु	श्वेतवर्णी	कफपित्त शामक
ताम्र शिलाजीत	तिक्त	मयूरकण्ठ सदृश	कफ शामक
लौह शिलाजीत	तिक्त, लवण	गुग्गुलाभास	त्रिदोषशामक

  – ताम्र शिलाजीत उष्णवीर्य है शेष सभी शीतवीर्य है।
  – रजत शिलाजीत मधुर विपाकी है शेष सभी कटु विपाकी है।
- मुर्हुदाहो मुर्हुशीतं लक्षण है – श्लैष्म पैत्तिक ज्वर का
  क्षणे दाहे क्षणे शीतं लक्षण है – सान्निपातिक ज्वर का
- वातपूर्णदृति स्पर्शः शोथः – सन्धिगत वात (चरक)
  "आध्मात दृति शब्दवत भवति" लक्षण है – वातोदर (चरक)
  "यथा दृत्ति क्षुभ्यते कम्पते च" लक्षण है – जलोदर (सुश्रुत)
  "उदक पूर्ण दृति क्षोभ संस्पर्श" लक्षण है – जलोदर (चरक)
  "जलवस्ति सम स्पर्शः" लक्षण है – ~~पच्यमान व्रणशोफ~~ (चरक)
  "आध्मात वस्तिरिव" लक्षण है – पच्यमान व्रणशोफ (सुश्रुत)
  "अम्बूपूर्णादृत्तिरिव क्षुभ्यति मूत्रकृच्छ्रं" लक्षण है – मूत्रज वृद्धि (सुश्रुत)
- "जीर्णेजीर्यति आध्मानं भुक्तै स्वास्थयमुपैति" लक्षण है–वातिक ग्रहणी (चरक)
  "भुक्तेऽन्ने लभते शान्तिं जीर्णमात्रे प्रताम्यति" लक्षण है – तीक्ष्णाग्नि (भस्मक) चरक
  "जीर्णे जीर्यत्यजीर्णे वा पथ्यापथ्य प्रयोगेण" लक्षण है – अन्नद्रव शूल (माधवकर)
  "भुक्ते जीर्यति यत्शूलं तदेव परिणामजम" लक्षण है – परिणाम शूल (माधवकर)
  "आहारपरिणामान्ते भूयश्चलभते बलम्" – व्यपेता हिक्का (चरक)
- "हरितः शीर्ण लोमा" लक्षण है – पाण्डु का
  "हरि अर्जुन लोमवत" शिर के बाल होना लक्षण है – दुष्ट प्रतिश्याय का
- "न वेत्ति गंधरसाश्च" लक्षण हैं – अपीनस का
  "न वेत्ति गंधम्" लक्षण है – दुष्ट प्रतिश्याय का
- वात + पित्त (अधिक मात्रा में) – खालित्य
  वात + पित्त (अल्प मात्रा में) – पालित्य
  वात + पित्त (अत्यल्प मात्रा में) – हरीकेशता

- प्राण वायु के अधीन है – जीवन
  उदान वायु के अधीन है – बल
- प्रधानतमं यंत्रं – हस्त
  प्रधानं यंत्रं – कंकमुख
- बालाम्र – वात पित्तवर्धक VP↑
  बद्धकेसर आम्र – पित्तवर्धक P↑
  पक्व आम्र – वातशामक V↓
- कच्चा बिल्व – कफ वात शामक KV↓
  पक्व बिल्व – विदाह जनक, पूतिमारूत कारक
- आर्द्र मरीच – मधुर रस, मधुर विपाक, कफवर्धक ।M K↑
  शुष्क मरीच – कटुरस, अवृष्य, कफ वात शामक KV↓
- कच्ची मूली – सर्वदोषनाशक
  पक्व मूली – त्रिदोष जनक
- **अव्यक्त तत्व है –**
  चरकानुसार – बुद्धि
  सुश्रुतानुसार – महान
- चिकित्सार्ध – सिरावेध (सुश्रुत), वस्ति (चरक)
  शल्यविषयार्ध – मर्म (सुश्रुत)
- वैद्यकृत व्रण – आयताश्च विशालश्च **सुविभक्तो निराश्रय**
  अवैद्यनिमित्त – आयताश्चतुरस्राश्च त्र्यस्रा मण्डलिनस्तथा
- शिरोवस्ति अवदान है – सुश्रुत का
  विडालक अवदान है – वाग्भट का
  पिण्डी अवदान है – शार्गधर का
- नष्टार्त्तवा – बन्ध्या योनि व्यापद
  अनार्त्तवा – षण्डी योनि व्यापद
  दुष्प्रजाता – प्रस्रंसिनी योनि व्यापद
  दुष्प्रजातामय – सूतिका रोग (काश्यप)
  कर्णिनी योनि – कफ + रक्त की दुष्टि से उत्पन्न KR

कुछ अन्य बिन्दु –

- जातहारिणी संख्या (काश्यपानुसार)
  जीवित माताओं में – 10
  कुल – 35 (साध्य–11, याप्य–16, असाध्य – 8)
- चरक संहिता में वर्णित कुल रसायन योग – 63 APKA 6, 37, 16, 4
  अभयामलकीय पाद में – 6, प्राणकामीय पाद में – 37
  कर प्रचितीय पाद में – 16, आयुर्वेदसमुत्थानीय में – 4
- चरक में वर्णित कुल वाजीकरण योग – 50 SAMA - 15 8 15 12
  संयोगशरमूलीय वाजीकरण पाद – 15, आसिक्त क्षीरीय वाजीकरण पाद – 8
  माषपर्णभृतीय वाजीकरण पाद – 15, आयुर्वेद समुत्थानीय पाद – 12

- **कुछ विशेष ज्वर –**
  मन्थरज्वर – यो०र० में वर्णित
  वातबलासक ज्वर – अष्टांग संग्रह में वर्णित
  प्रलेपक – सुश्रुत संहिता
  विषज/औषधगंधज – माधवकर
  अपप्रजाताजन्य स्त्री ज्वर – सुश्रुत
  ऐषाण ज्वर – काश्यप
- **आगन्तुज ज्वरों में दोष सम्बन्ध –**
  अभिघातज ज्वर – वात + रक्त VR
  अभिषंग ज्वर – वात + पित्त VP
  अभिचार व अभिशापज – सान्निपातिक
- **वाग्भटानुसार भगन्दर में दोष संबंध –**
  – शतपोनक – वातिक V
  – उष्ट्रग्रीव – पैत्तिक P
  – परिस्रावी – कफज K
  – शम्बुकावर्त्त – सान्निपातिक S
  उन्मार्गी – आगन्तुज
  परिक्षेपी – वात + पित्त VP
  ऋजू – वात + कफ VK
  अर्शोभगन्दर – पित्त + कफ PK
- **भगन्दर चिकित्सा – (सुश्रुतानुसार)**
  शतपोनक – अर्द्धलांगलक, लांगलक, गौतीर्थक, सर्वतोभद्रक भेदन + अग्निकर्म
  उष्ट्रगीव – क्षारकर्म निर्दिष्ट, (अग्निकर्म का निषेध), तिल कल्क + घृत लेपन
  परिस्रावी – खर्जूरपत्र, अर्द्धचन्द्राकार, अवांगमुख, सुचीमुख भेदन + क्षार व अग्निकर्म निर्दिष्ट
- **श्वास में दोषभेद व साध्यासाध्यता – (चरक)**
  महाश्वास – वायु – असाध्य V
  उर्ध्वश्वास – वायु – असाध्य V
  छिन्न श्वास – वायु+कफ – असाध्य VK
  तमक श्वास – कफ – याप्य K
  क्षुद्र श्वास – वायु – साध्य V
- ज्वरातिसार व रक्तातिसार का वर्णन मिलता है – माधव निदान में
- **विसर्प मे दोष सम्बन्ध (चरक)**
  आग्नेय विसर्प – वात+पित्त VP
  ग्रंथि विसर्प – कफ + वात KV
  कर्दमक विसर्प – पित्त + कफ PK
- कीट संख्या – 67 (वातिक–18, पैत्तिक – 24, कफज–13, सा०–12)
- मूषक विष संख्या – 18
- वृश्चिक संख्या – 30 (मन्द:मध्य:तीक्ष्ण: – 12:3:15)
- लूता संख्या –
  – सुश्रुत – 16 (8 असाध्य व 8 कृच्छ्रसाध्य)
  – वाग्भट – 28

- लूता में विष के अधिष्ठान – 7
- लूता विष के चिकित्सा उपक्रम – 10 (वस्ति रहित)
- लूता विष से मृत्यु –

  तीक्ष्ण विष – 7 दिन में मृत्यु
  मध्य विष – 10 दिन में मृत्यु
  हीन विष – 12 दिन में मृत्यु

- गोजर व मेंढक भेद – 8
- चींटी, मक्खी व छिपकली भेद – 6
- मच्छर व गोधेरक भेद – 5
- **चरकानुसार दोषाधिक्य –**

  वात प्रधान – उच्चिटिंग व वृश्चिक विष V
  वात पित्त प्रधान – कीटविष V P
  कफ प्रधान – कुणभ विष K

- **चरकानुसार –**

व्रण प्रकार – 2	व्रणगंध – 8
व्रण भेद – 20	व्रणस्राव – 14
दुष्टव्रण – 12	व्रणोपद्रव – 16
व्रणदोष – 24	व्रणोपक्रम – 36 (सुश्रुत– 60)

- **शुक्रदोषो में दोष सम्बन्ध –**

  चरक – 8
  सुश्रुत – 11
  वा० पै०, श्लैष्मिक –
  रक्तज – कुणप गंधि
  ग्रंथि – वात + कफ VK
  पूतीपूय – पित्त + कफ PK
  क्षीण – वात + पित्त VK
  मुत्र, पुरीष – त्रिदोषज

  कृच्छ्रसाध्य–(4) (5) कुणपगंधि, ग्रंथि पूतिपूय, क्षीण
  असाध्य – (2) मूत्र, पुरीषगंधि
  साध्य – 5 (4) शेष

- आर्त्तव दोष – (8)

  असाध्य – कुणप, ग्रंथि, पूतिपूय, मूत्रपुरीष गंधि

- **मैथुनास्थिति के अनुसार दोष प्रकोप –**

  स्त्री उत्तान – दोष समावस्था में,
  R दक्षिण करवट – कफ कुपित, K
  न्युब्ज – वात कुपित
  L वाम करवट – पित्त कुपित P

- दशेमानि में एकाधिक बार प्रयुक्त द्रव्य –

  मधुक – सर्वाधिक 11 बार आया है
  पिप्पली – 9 बार आया है।

- विरेचनाश्रय – (6) मूलं पत्रं फलं पुष्पं त्वक क्षीरं
- वमन के योग – 355

  विरेचन के योग – 245

वमन के योग	विरेचन के योग
मदनफल – 133 योग (Max.)	निशोथ – 110
जीमूतक – 39	अमलतास – 12
इक्ष्वाकु – 45	लोध – 16
धामार्गव – 60	स्नूही – 20
कुटज – 18 (min)	सप्तला संखिनी–39
कृतवेधन – 60	दन्ती द्रवन्ती – 48
355	245

- वातकलाकलीय अध्याय – संभाषा परिषद में 8 ऋषियों ने भाग लिया।
  कुश – वात के गुण बताये
  कुमारशिराभरद्वाज – वातप्रकोपक कारण बताये
  कांकायन – वात शमन के कारण बताये
  बडिश – अमूर्त्त वात के शमन व कोपन की क्रिया बतायी
  वार्योविद – प्राकृत वायु के कर्म व भेद बताये
  मरीचि – पित्त संबंधी वर्णन किया
  काप्य – कफ संबंधी वर्णन किया
- यज्जपुरूषीय संभाषा परिषद – 9 ऋषियों ने भाग लिया
  मौद्गल्य पारीक्षि – आत्मवाद
  शरलोमा – सत्ववाद
  वार्योविद – रसवाद
  हिरण्याक्ष – षड्धातुवाद
  कौशिक (शौनक) – मातृपित्तृवाद
  भद्रकाप्य – कर्मवाद
  भारद्वाज – स्वभाववाद
  कांकायन – प्रजापतिवाद
  आत्रेय भिक्षु – कालवाद
- **रस विषयक संभाषा** – आत्रेय भद्रकाप्य अध्याय में – 10 ऋषियों ने भाग लिया
  भद्रकाप्य – एक रस माना (जल व रस एक ही है)
  शाकुन्तेय ब्राह्मण – दो रस (छेदनीय व उपशमनीय)
  मौद्गल्य पूर्णाक्ष – तीन रस (छेदनीय, उपशमनीय, साधारण)
  हिरण्याक्ष– चार रस (स्वादु हितकर, अहितकर, अस्वादु हितकर, अहितकर)
  कुमार शिरा भारद्वाज – पाँच रस (पंचमहाभूतो के अनुसार)
  वार्योविद – छः रस (गुरू, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष)
  निमी – सात रस (मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कषाय, क्षार)
  धामार्गव– आठ रस (मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कषाय, क्षार, अव्यक्त)
  कांकायन – असंख्य रस
- **1–1 रस के भेद** – 6
  2–2 रसो का संयोग – 15
  3–3 रसो का संयोग – 20

4–4 रसो का संयोग – 15
5–5 रसो का संयोग – 6
6 रसो का संयोग – 1
कुल रसभेद – 63
रसो के संयोग – 57

- **दृढ़बल वर्णित संभाषा परिषद** – फलमात्रा सिद्धि अध्याय में
  शौनक – जीमूतक श्रेष्ठ,
  गौत्तम – धामार्गव श्रेष्ठ,
  काप्य – कृतवेधन श्रेष्ठ
  वामक – इक्ष्वाकु श्रेष्ठ
  बडिश – कुटज श्रेष्ठ

- **आसव की योनियाँ** – 9,
  कुल पथ्यतम आसव संख्या – 84
  शर्करासव – 1
  पत्रासव – 2
  काण्डासव – 4
  त्वगासव – 4
  धान्यासव – 6
  पुष्पासव – 10
  मूलासव – 11
  सारासव – 20
  फलासव – 26
  84

- **गर्भोत्पादक भाव भेद** – 6 (4 – मुख्य, 2– सहायक)
  मातृज – 20
  पितृज – 10
  आत्मज – 22 (चरक–19)
  सत्वज – 18
  रसज – 5
  सात्म्यज – 8
  स्मृत्ति – आत्मज व सत्वज दोनों भावों में है।
  स्वरवर्ण – आत्मज व सात्म्यज दोनों भावों में है।
  मुख्य भाव– मातृज, पितृज, आत्मज, सत्वज
  सहायक भाव – रसज, सात्म्यज

- यन्त्र प्रकार – 6
  गुण – 6
  दोष – ~~6~~ 12
  कार्य – 24

- शस्त्र – संख्या – 20 (वाग्भट – 26)
  गुण – 6
  दोष – 8
  भेद – 8

- कर्ण संधान विधियाँ – 15
  कर्णपाली के उपद्रव – 10
  कर्णपाली के रोग – 5

- शल्य प्रकार – 2
  शल्य की गतियां – 5
  शल्य भेद – 2
  शल्य निर्हरणोपाय – 15

- कण्डरा संख्या – (16) हाथ, पैर, ग्रीवा व पृष्ठ में – 4X4
  जाल – (16) मांस, सिरा, स्नायु, अस्थि में – 4X4
  कूर्च – (6) हस्तपाद में 2–2, ग्रीवा व मेढ्र में 1–1
  रज्जू – (4)

सेवनी – (7) शिर में 5, जिव्हा में 1 तथा मेढ्र में 1
सीमन्त – (14) (वाग्भट – 19)
संघात – (14) हस्तपाद में 3–3, गुल्फ, जानु व वंक्षण में 2–2, त्रिक व शिर में 1–1

- मूल सिरायें – 40 (वात, पित्त, कफ व रक्त की 10–10)
  कुल सिरायें – 700 (175X4)
  - शाखा में – 100x4 = 400
  - कोष्ठ में – 136
  - ग्रीवा से ऊपर – 164
  - अवेध्य सिरायें – 98 (शाखा–16, कोष्ठ–32, ग्रीवा से ऊपर –50)
- गुदा का परिमाण – अर्द्धपंचांगुल (4½ अंगुल)
  - गुदवलियों का परिमाण – चतुरंगुलायतम – 4 अंगुल (गज तालुनिभम्)
  - प्रवाहणी, विसर्जनी व संवरणी (प्रथम गुदवली) – 1½-1½ अंगुल के अन्तर पर स्थित होती है।
  - गुदौष्ठ से 1 अंगुल ऊपर एवं गुदौष्ठ रोमवली से 1½ यव ऊपर प्रथम वली की स्थिति मानी गयी है।
- 1 वर्ष पुराना गलगण्ड व श्लीपद – असाध्य
  1 वर्ष पुराना अर्श – कृच्छ्रसाध्य, 1 वर्ष पुराना वातरक्त – याप्य
  3 वर्ष पुराना अर्दित – असाध्य, 13 वर्ष पुराना उन्माद – असाध्य
- **खरनाद के अनुसार रोहिणी की मारकता –**
  त्रिदोषज – सद्यः मारक, कफज – तीन दिन में मारक
  पैत्तिक – पाँच दिन में मारक, वातिक – सात दिन में मारक

VPKR-7430
अष्टाहात्
VPKR-7530

- **सुश्रुतानुसार अधिमन्थ की मारकता –**
  कफज – सात रात्रि में, रक्तज – पाँच रात्रि में
  वातज – छः रात्रि में, पैत्तिक – सद्यः मारक

VPKR-6075
वा. VPKR-5073

- मूलविष – 8
  पत्रविष – 5
  फलविष – 12
  त्वक व सार विष – 7
  क्षीर विष – 3
  धातु विष – 2
  कन्दविष – 13
  55 स्थावर विष
- **मद्य की प्रशस्त मात्रा**
  प्रातः – 2 पल
  मध्यान्ह – 4 पल
  रात्रि – 8 पल
- **व्रणगंध में दोषभेद**
  K कटु गंध – वातज V
  T तीक्ष्ण – पैत्तिक P
  V विस्र – कफज K
  L लोह – रक्तज R
- **कर्णपालीगत रोग व उनमें दोष प्राधान्य –**
  परिपोट – वातिक V
  उत्पात – पित्त + रक्त PR
  उन्मथ – वात + पित्त VP

लाजा सदृश्य – वात+पित्त VP
अतसी सदृश्य – वात+कफ VK
तैल सदृश्य – पित्त+कफ
दुःखवर्धन – त्रिदोष T
परिलेही – कफ+रक्त+कृमि K₂R

- **मर्म** :

(क) सकावैविरु

नाम	महाभूत	संख्या
सद्यःप्राणहर	आग्नेय	19
कालान्तर प्राणहर	आग्नये+सौम्य	33
वैकल्यकर	सौम्य	44
विशल्यघ्न	वायव्य	3
रूजाकर	आग्नेय+वायव्य	8
		107

(ख)

मांसमर्म – 11	शाखागत मर्म – 44
सिरामर्म – 41	मध्य शरीरगत – 26
स्नायु मर्म – 27	ग्रीवा के ऊपर 37
अस्थिमर्म – 8	107
सन्धिमर्म – 20	
107	

- वाग्भट ने 9 धमनी मर्म भी माने है।
- **मर्म परिमाण –**

1–1 अंगुल – उर्वी, कूर्चशिर, विटप, कक्ष, पार्श्व व स्तनमूल का
2–2 अंगुल – मणिबंध व गुल्फ मर्म का
3–3 अंगुल – जानू व कूर्पर मर्म का
हथेली के गर्त के समान – हृदय, वस्ति, कूर्च, गुदा, नाभि, शृंगाटक, सीमन्त, नीला, मण्या व मातृका मर्म
शेष मर्मो का परिमाण ½–½ अंगुल

- **दोष प्राधान्य –**

मूर्च्छा – पित्त + तम, P
तन्द्रा – वात+कफ+तम, VK
भ्रम – वात+पित्त+रज VP
निद्रा – कफ+तम K

- वनस्पति – फलैवनस्पति
- वानस्पत्य – पुष्पैवानस्पत्य फलैरपि
- मूलिनी द्रव्य – 16 (वमनहेतु – 3, विरेचन – 11, शिरोविरेचन–2)
फलिनी द्रव्य – 19 (वमन व आस्थापन हेतु – 8, शिरोविरेचन–1, विरेचन–10)
- "शीतेन शान्ति लभते कदाचित उष्णेनजन्तु सुखमाप्नुयात "लक्षण है – सूर्यावर्त का
  - "सर्वात्मकं कष्टतंर विकारं" लक्षण है – सूर्यावर्त का
  - "व्याधि वदन्ति उदगत मृत्यु कल्प भिषक सहस्रेऽपि दुर्निवारं" लक्षण है– शंखक का

- चरकानुसार प्रकृत्ति भेद– (6) जाति, कुल, देश, काल, वय व प्रत्यात्मनियता
- विकृत्ति भेद – (3)

(1) लक्षण निमित्ता – पूर्व जन्मकृत कर्मानुसार विकृति होना यथा नखों पर कमल पुष्पाकृत्ति का बनना।

(2) लक्ष्य निमित्ता – कारण प्राप्त विकृत्ति यथा लघु, रूक्ष व शीत निदान से वायु का कुपित होना

(3) निमित्तानुरूपा – निमित्त ना हो मगर फिर भी निमित्त का कार्य करें यथा रूक्ष, लघु व शीत से वायु की शान्ति होना।

- प्राकृत वर्ण – (4) कृष्ण, श्याम, श्यामवदात, अवदात
- **कुछ मुख्य अरिष्ट –**

6 दिन का अरिष्ट – बालों में अकस्मात सीमन्त बन जाना।
– बाल खैंचने पर भी वेदना ना होना
– तैल न लगाने पर भी तैल की प्रतीती होना

7 दिन का अरिष्ट – स्वाभाविक अग्नि को नीली या काली देखना

15 दिन का अरिष्ट – शय्या से उठने पर बार–बार मूर्च्छित होना
– अनुलोम व प्रतिलोम रोगों का मिल जाना

1 मास का अरिष्ट – गौमय चूर्ण का शिर से गिरना
– मूत्र, पुरीष व वीर्य का जल में डूब जाना
– ललाट व वस्ति पर कुटिल रेखाओं का निर्माण

6 मास का अरिष्ट –
– भक्ति व स्मरण शक्ति का अकस्मात नाश हो जाना
– मस्तक पर धमनीयों का सुन्दर जाल बन जाना
– शरीर पर चन्दन का लेप करने पर पहले छाती के लेप का सूख जाना।

1 वर्ष का अरिष्ट –
– पुरूष का पुष्पित हो जाना
– अरून्धती नक्षत्र को न देख पाना

- सार्था/इन्द्रिय गुण – 5
गुर्वादि/शारीर गुण – 20
अध्यात्म/आत्मगुण – 6
परादि/सामान्य गुण – ~~10~~ 8
41
- शाखागत रोग संख्या – 14, मध्यम मार्गगत रोग – 12
कोष्ठ गत रोग संख्या – ~~15~~ 16
- करण संख्या – 13 (बाह्य–10, अन्तः–3)

ज्ञानोपाय – 3,
परिषद भेद – 2,
जल्पक के अवगुण – 5,
अहेतु – 3,
संभाषा भेद – 2
जल्पक के गुण – 5
हेतु – 4
विपक्षी (परः) – 3

सिद्धान्त – 4, शब्द – 4

हेत्वाभास – 3 (न्याय–5), वाक्यदोष – 5 (अरूणदत्त – 15)

छल – 2 (न्याय–3), निग्रह स्थान 3/15 (न्याय – 22)

- सार–8 (श्रेष्ठ – सर्वसार) (काश्यप – 9 सार, ओजसार अतिरिक्त)

  संहनन – 3, सात्म्य – 3, सत्व – 3

- **अंजली प्रमाण –**

जल, स्वेद व लसिका	–	10 अंजली
रस	–	9 अंजली
रक्त	–	8 अंजली
पुरीष	–	7 अंजली
कफ	–	6 अंजली
पित्त	–	5 अंजली
मूत्र	–	4 अंजली
आर्त्तव	–	4 अंजली
वसा	–	3 अंजली
मेदा	–	2 अंजली
स्तन्य	–	2 अंजली
मज्जा	–	1 अंजली
मस्तिष्क, शुक्र व अपर ओज	–	½ अंजली

- काश्यप ओज का प्रमाण कफ के समान छः अंजली मानते है।
- ओज प्रमाण –

  पर ओज – 8 बिन्दु

  अपर ओज – ½ अंजली
- डल्हण अपर ओज का प्रमाण 1 अंजली एवं वाग्भट 1 प्रसृत मानते हैं।
- अ०ह्र० – पर ओज 6 बिन्दु

- **षडधात्वात्मक पुरूष के भाव – 56**

  पार्थिव – 18

  आप्य – 15

  आग्नेय – 5

  वायवीय – 11

  आंतरिक्ष – 5

  आत्मज – 2

  56

- **हरितक्यादि चूर्ण सेवनोपरान्त संसर्जन काल**

  हीन शुद्धि – 3 दिन

  मध्य शुद्धि – 5 दिन

  प्रवर शुद्धि – 7 दिन

  357

- **चक्रपाणि मतानुसार**

  तरूण ज्वर – 7 रात्रि तक

  मध्य ज्वर – 7–12 रात्रि तक

  जीर्ण ज्वर – 12 दिन पश्चात

चक्रपाणि मतानुसार कुष्ठ में कृतकर्म

वमन – 15–15 दिन के अन्तर पर

विरेचन – 1–1 मास के अन्तर पर

नस्य – 3–3 दिन के अन्तर पर

रक्तमोक्षण – 6–6 मास के अन्तर पर

- "नरः पतति काष्ठवत" लक्षण है – मूर्च्छा का

  "काष्ठीभूतो मृतोपमम" लक्षण है – सन्यास का

  "भग्न दार्विविव निष्क्रिय" लक्षण है – मद्य की अन्त्यावस्था का

- संसर्जन काल –
  प्रधान शुद्धि – 12 अन्नकाल – 7 दिन का समय
  मध्य शुद्धि – 8 अन्नकाल – 5 दिन का समय
  अवर शुद्धि – 4 अन्नकाल – 3 दिन का समय
  अवर शुद्धि में अकृत यूष व अकृत मांस का प्रयोग नहीं कराते है।
- उपशय के अठारह भेद किये – चक्रपाणि ने

	औषध	अन्न	विहार
हेतु विपरीत	शीतकफज ज्वर में शुण्ठी प्रयोग	श्रमजन्य ज्वर में मांस व रसोदन प्रयोग	दिवास्वाप से उत्पन्न कफ में रात्रि जागरण
व्याधि विपरीत	अतिसार में स्तम्भनार्थ पाठा का प्रयोग	अतिसार में स्तम्भनार्थ मसूर प्रयोग	उदावर्त में प्रवाहण करना
हेतु व्याधि विपरीत	वातज शोथ में वातहर एवं शोथहर दशमूल का प्रयोग	शीतोत्थ ज्वर में उष्ण एवं ज्वर नाशक यवागु प्रयोग	स्निग्ध दिवास्वाप जन्य कफ में रूक्ष रात्रि जागरण
हेतु विपरीतार्थकारी	पैत्तिक पच्यमान शोथ में पित्तकारक उष्ण उपनाह का प्रयोग	पच्यमान पित्तज शोथ में विदाही अन्न पान	वातोन्माद में डराना
व्याधि विपरीतार्थकारी	वमनरोग में वमनार्थ मदनफल प्रयोग	अतिसार में विरेचनार्थ दुग्ध प्रयोग	वमन रोग में वमनार्थ प्रवाहण करना
हेतु व्याधि विपरीतार्थकारी	अग्नि से जलने पर प्लुष्ट दग्ध में अगुरू का लेप	मद्यपान जन्य मदात्य में मद्य का प्रयोग	व्यायामजनित संमूढ वात में जल में तैरना

- **मूढगर्भ की गति – 8 भेद**
  मूढ़गर्भ के भेद – 4
  – कील – उर्ध्व बाहु शिरपादो
  – प्रतिखुर – निसृत हस्तपाद शिरः कायसंगी
  – परिध – यस्तु परिध इव
  – बीजक – योर्निगच्छते एक शिरोभुज.....
- शतपोनक – भगन्दर व शूक दोष दोनो है
  तिलकालक – क्षुद्ररोग व शूक दोष दोनो है
  सर्षपिका – प्रमेहपिडिका व शूकदोष दोनो है
- **नाम अस्थि** — **भग्न प्रकार**
  तरूणास्थि — नम्यते (भुज्यन्ते वा)
  कपालास्थि — विभिद्यन्ते

नलकास्थि भञ्जयते
रूचकास्थि स्फुटयन्ति

- **विभिन्न भग्नों के सामान्य लक्षण –**

उत्पिष्ट – दोनो पार्श्वों पर पीडा, रात्रि में विशेष वेदना
विश्लिष्ट – अल्पशोफ व सतत वेदना होना
विवर्तित – विषमांगता व वेदना
अवक्षिप्त – सन्धिविश्लेष व तीव्र पीडा
अतिक्षिप्त – दोनो संधियो का दूर–दूर हो जाना
तिर्यक – अस्थि का एक पार्श्व में गिर जाना
कर्कटक – उभयतो उभार, मध्य में भग्न
अश्वकर्ण – घोडे के कर्ण सदृश्य भग्न
पिच्चित – पृथु व अल्पशोफ युक्त
अस्थिछल्लित – एक तरफ से ऊँचा व एक तरफ से नीचा
काण्डभग्न – हिलाने पर प्रकम्पमान
मज्जानुगत – अस्थि में अस्थिप्रवेश
अतिपातित – निशेषतः छिन्न
वक्र – आभुग्नमुख मगर अमुक्त
छिन्न – एक तरफ से जुड़ा हुआ मगर दूसरी तरफ से पूर्णतः छिन्न
पाटित – अनेक रेखाओं से युक्त
स्फुटित – शूकपूर्ण व आध्मान से युक्त

- **भग्न बंधन काल** – सौम्य ऋतु में –7–7 दिन पर
  – साधारण ऋतु में –5–5 दिन पर
  – आग्नेय ऋतु में –3–3 दिन पर
- चूर्णित, छिन्न, अतिपातित व मज्जानुगत भग्न असाध्य माने गये है।
- **श्लीपद में सिरावेध –**

वातज श्लीपद में – गुल्फ के 4 अंगुल ऊपर
पैत्तिक श्लीपद में – गुल्फ के नीचे सिरावेध
कफज श्लीपद में – अंगुठे की प्रसिद्ध सिरा का

- सान्निपातिक ग्रंथि, वृद्धि, अर्बुद्ध व अधिमन्थ नहीं होते है
- सान्निपातिक ग्रहणी होती है मगर सान्निपातिक प्रवाहिका नही होती है
- **कुछ प्रमुख रोगो का प्रमाण :**

तालुपुप्पुट, कदर – कोलप्रमाण में TK
कंठशालुक – कोलास्थि प्रमाण में KK
गिलायु व अपची – आमलकास्थि प्रमाणवत GA

- **कुछ प्रमुख क्षुद्र रोगो के लक्षण –**

बालानाम – अजगल्लिका
मुखरहित – अन्धालजी
पक्वोडुम्बर सन्निभम – विवृता

पंचषट, कच्छपोन्नता – कच्छपी
पद्मपुष्करवत मध्ये – इन्द्रवृद्धा
शालूकवत – पनसिका
कक्षाभागेषु स्फोटा, जायन्ते मांसदारणा – अग्निरोहिणी
विदारी कन्दवत – विदारिका
पद्मिनी कण्टकवत – पद्मिनी कण्टक
शाल्मली कंटकप्रख्या – मुखदूषिका

- पिण्ड तैल – वातरक्त में VR

पिण्डासव – ग्रहणी में
पिण्ड रस – वृष्य है

- बाहुशाल गुड़ – अर्श में

गुडार्द्रक – शोथ में
गुडौदन – वातज स्वरभेद में
सर्पि गुड़ – क्षतः क्षीण में

- कंस हरीतकी – शोथ में

गुड़ हरीतकी – वातरक्त में (सुश्रुत), अर्श (चरक)
चित्रक हरीतकी – नासारोग व प्रतिश्याय में (चरक में वर्णित नही है)
अगस्त्य हरीतकी – कास व श्वास में
दन्ती हरीतकी – अर्श व गुल्म में
व्याधि हरीतकी – नासारोग व प्रतिश्याय

- सिद्धार्थक अगद – उन्माद में देय, सिद्धार्थक घृत – अपस्मार

सिद्धार्थक स्नान – कुष्ठ में देय, सिद्धार्थक तैल – अपरापातन

- जेन्ताक स्वेद का सेवन कौनसी ऋतु में निर्दिष्ट है – हेमन्त
- चक्रपाणि मतानुसार मृदु, मध्य व तीक्ष्ण वीर्य द्रव्यो की मात्रायें –

तीक्ष्ण वीर्य – 1 कर्ष मात्रा में – यथा शुण्ठी
मध्य वीर्य – 1/2 पल की मात्रा में – यथा बिल्व
मृदु वीर्य – 1 पल में – यथा आमलक

- **प्रमेहानुसार विशिष्ट द्रव्य –**

उदकमेह – पारिजात
मधुमेह – श्वेत खदिर व पूगफल

- रक्तार्शोघ्न द्रव्य – कुटज, इन्द्रयव, दारूहरिद्रा, नागकेसर, चांगेरी, यवासा

वातार्शोघ्न द्रव्य – चित्रक, भल्लातक, सूरण, महानिम्ब, अतिविषा, बिल्व

- **कुछ विशिष्ट कृमिघ्न द्रव्य –**

स्फीतकृमि – दाडिमत्वक, कम्पिल्लक, पूग
अंकुश कृमि – भल्लातक तैल, यवानी सत्व
स्नायुक कृमि – निर्गुण्डी व शिग्रु
श्लीपद कृमि – शाखोटक
गण्डूपद कृमि – पलाश बीज, विड़ंग, चौहार, पारिभद्र, इन्द्रयव

शि बं ग्री - त म शु
व श हे - न ध स

- गण्डूष – असंचारी
  कवल –संचारी

ऋतु	आधुनिक माह	चरकानुसार माह	सुश्रुतानुसार माह	शार्ग० के अनुसार राशि
शिशिर	जन0–फर0	माघ–फाल्गुन	तप–तपस्य	मिथुन–कर्क (प्रावृट)
वसन्त	मार्च–अप्रैल	चैत्र–वैशाख	मधु–माधव	मीन–कुम्भ
ग्रीष्म	मई–जून	ज्येष्ठ–आषाढ़	शुचि–शुक्र	मेष–वृष
वर्षा	जुलाई–अग0	श्रावण–भाद्रपद	नभ–नभस्य	सिंह–कन्या
शरद	सित–अक्टुबर	आश्विन–कार्त्तिक	इष–उर्ज्ज	तुला–वृश्चिक
हेमन्त	नव0–दिस0	अगहन–पौष	सह–सहस्य	धनु–मकर

- ऋतु संधि – वाग्भट (अवधि– 14 दिन)
  यमदंष्ट्रा – शार्गधर (अवधि–16 दिन)
- भल्लातकास्थि – कटु स्कंध में वर्णित
  भल्लातक – कषाय स्कंध में वर्णित
- **चरकोक्त एवं सुश्रुतोक्त गणो में साम्य –**

चरकोक्त वर्ग	**सुश्रुतोक्त वर्ग**
जीवनीय गण	काकोल्यादि
वृंहणीय गण	विदारीगन्धादि
दीपनीय गण	पिपल्यादि
बल्य गण	लघु पंचमूल
हृध गण	परूषकादि
अर्शोघ्न	मुष्ककादि
कृमिघ्न	सुरसादि व लाक्षादि
कासहर	विदारीगन्धादि
श्वासहर	पिपल्यादि व सुरसादि
शोथहर	दशमूल
स्तन्यजनन	काकोल्यादि
वयः स्थापन	काकोल्यादि, विदारीगन्धादि
प्रजास्थापन	काकोल्यादि, विदारीगन्धादि
उदर्द प्रशमन	सालशरादि
अंगमर्दप्रशमन	विदारीगन्धादि
श्रमहर	परुषकादि
शोधन	उभयतोभागहर
शुक्रशोधन	वल्ली पंचमूल व कण्टक पंचमूल

- दशमूल व त्रिफला गण का प्रथमतः वर्णन किया – सुश्रुत ने
  त्रिजात, चातुर्जात, मध्य व जीवन पंचमूल का प्रथमतः वर्णन किया – वाग्भट ने

- **क्षीरत्रय** – र०त० – अर्क, वट व स्नूही
  चरक – अर्क, अश्मन्तक व स्नूही
- पर्यायरत्नमाला व द्रव्यगुणरत्नमाला के लेखक – माधवकर
  गुणरत्नमाला के लेखक – भावमिश्र
- जनपदोध्वंस – चरक
  मरक – सुश्रुत
  जनमार – भेल
- प्रधान इन्द्रिय – चक्षुरेन्द्रिय
  व्यापक इन्द्रिय – स्पर्शनेन्द्रिय
- अध्यात्म द्रव्य गुण संग्रह – मन, मन का अर्थ, बुद्धि व आत्मा – (4)
  अध्यात्म द्रव्य – मन व आत्मा – (2)
-

	चरक	**वाग्भट**
कर्म वस्ति संख्या	30	30
काल वस्ति संख्या	16	15
योग वस्ति संख्या	8	8

- **वाग्भटानुसार कालमर्यादा –**
  प्रतिमर्श नस्य – 7 से 80 वर्ष के बीच देय
  धूमपान – 18 वर्ष के ऊपर देय
  कवल – 5 वर्ष के ऊपर देय
  वमन, विरेचन – 10–70 वर्ष के बीच देय
  शार्गंधर –
  कवल व गण्डूष – 5 वर्ष से ऊपर देय
  नस्य – 8 वर्ष से ऊपर देय
  विरेचन – 16 वर्ष से ऊपर देय
  स्त्रीसंग – 20 वर्ष से ऊपर योग्य
  धूमपान – 12–80 वर्ष तक देय
- **उपनाह स्वेद को –**
  चरक – निराग्नि स्वेद मानते है।
  सुश्रुत – साग्नि स्वेद मानते है।
  चक्रपाणि – साग्नि व निराग्नि दोनों मानते है
- न्याय चन्द्रिका/वृहत पंजिका – गयदास कृत (सुश्रुत संहिता पर)
  पदार्थ चन्द्रिका – चन्द्रनन्दनकृत (अष्टांग हृदय पर)
  चरक चन्द्रिका – गयदासकृत (चरक संहिता पर)
- **त्रिफला सेवन काल –**

	चरक	**भेल**
भोजन के पूर्व	विभीतकी	आमलकी
भोजन के पश्चात	आमलकी	हरीतकी
अन्न के जीर्ण होने पर	हरीतकी	विभितकी

- विपाक का सर्वप्रथम लक्षण वाग्भट (अ०ह्र०) ने दिया है।
- व्यवायी द्रव्यो में केवल भूताग्नि पाक होता हैं।
- यकृत को भूताग्नि एवं धात्वाग्नि का अधिष्ठान माना गया है।
- आहार द्रव्यों में विशेष रूप से धात्वाग्नि व्यापार एवं औषध द्रव्यो में भूताग्नि व्यापार द्वारा कार्य होता है।
- आचार्य चरक ने ग्रहणी प्रकरण में "प्रपाक" शब्द का प्रयोग किया है।
- चक्रपाणि ने रात्रि में गरम दधी का सेवन निषिद्ध किया हैं।
- वाग्भट ने मूत्र वेगावरोध से अंग भंग एवं अश्रु के वेगावरोध से गुल्म की उत्पत्ति मानी हैं।
- साधारण काल में प्रायः मिथ्यायोग ही होता है अतियोग या अयोग नहीं।
- कुष्ठ को कर्मज रोग भी कहा गया हैं।
- प्राणाचार्य के गुण होते है – (5)
- परत्व एवं अपरत्व गुण आकाश में नही रहते हैं।
- मर्श नस्य का प्रमाण –
  उत्तम – 10 बूंद, मध्यम – 8 बूंद, कनिष्ठ – 6 बूंद
- **कुछ प्रमुख व्याधियों में वर्जित कर्म –**
  अपतन्त्रक में निषेध – अपतर्पण, वमन, आस्थापन व अनुवासन कर्म का
  अवबाहुक में निषेध – रक्तमोक्षण का
  प्रमेह पिडिका व प्रमेह – स्वेदन का
  उदररोग – वमन व अनुवासन का
  छिद्रोदर – स्वेदन का
  क्षयज शिरोरोग – नस्य, वमन, स्वेदन, धूमपान, रक्तमोक्षण (पंचकर्म)
- अश्मरी व भगन्दर शस्त्रकर्म के पश्चात 1 वर्ष तक स्त्री सेवन का निषेध सुश्रुत ने बताया हैं।
- नवायस लौह के घटक – त्रिफला + त्रिकटु + विडंग, चित्रक, मोथा + लौह
- सुश्रुत ने सम्यक स्निग्ध के लक्षणों में ग्लानि का होना एवं अतिस्निग्ध के लक्षणों में प्रवाहिका एवं गुददाह का होना चरक से अतिरिक्त माना हैं।
- **विशेष परिस्थितियों के अनुसार स्वेदन –**
  कफनाशनार्थ – ताप व उष्म स्वेद विशेषतः हितकर
  वातनाशनार्थ – उपनाह स्वेद विशेषतः हितकर
  कफ या वात के साथ पित्त का अनुबंध होने पर – द्रव स्वेद हितकर
  वायु के कफ व मेद से युक्त होने पर – निराग्नि स्वेद हितकर
- **पूर्व में स्वेदन योग्य परिस्थितियाँ** – नस्य, वस्ति व शोधनीय पुरूष
  पश्चात में स्वेदन कर्म – मूढगर्भा व सामान्य प्रसव के बाद
  पूर्व व पश्चात स्वेदन योग्य – अश्मरी, अर्श व भगन्दर
- सम्यक स्नेहन के एक दिन पश्चात वमन एवं तीन दिन पश्चात विरेचन दिया जाता है।

व —15D→ वि —7D→ अनुवासन
व —16D→ नि —तत्काल पश्चात→ अनुवासन

- वमन के 15 दिन पश्चात विरेचन एवं विरेचन के 7 दिन पश्चात अनुवासन का विधान है।
- वमन के 16 दिन पश्चात निरूह एवं निरूह के तत्काल पश्चात अनुवासन दिया जाना चाहिए ।
- अनुवासन वस्ति हेतु श्रेष्ठ काल – प्रदोष काल
  आस्थापन वस्ति हेतु श्रेष्ठ काल – मध्यान्ह काल
  वमन व विरेचन हेतु श्रेष्ठ काल – पूर्वान्ह
- **वस्ति प्रत्यागमन काल –**
  आस्थापन – 1 मुर्हुत / 2 घडी पश्चात / 48 मिनट
  अनुवासन – अहोरात्र पश्चात चिकित्सा करते है. निकलने का सामान्य समय 3 याम ही है।
- अनुवासन वस्ति – भोजन के तुरन्त पश्चात देय
  आस्थापन वस्ति – निराहार/भोजन के जीर्ण होने पर देय
- **स्नेहन नस्य की मात्रा –**
  प्रथम – 8 बिन्दु
  द्वितीय – शुक्ति – 32 बिन्दू
  तृतीय – पाणिशुक्ति – 64 बिन्दू
- शिरोवैरेचनिक स्नेह की मात्रा – 4, 6, 8 बूंद प्रति नासा रंध्र
- प्रतिमर्श नस्य के काल – 14
- **प्रतिमर्श में दोषानुसार स्नेह प्रयोग –**
  VK कफयुक्त वात – तैल, V वात प्रकोप – वसा
  P पित्त प्रकोप – घृत, VP वातपित्त – मज्जा
- **कवल भेद – 4**
  वातिक – स्नेहन कवल, पैत्तिक – प्रसादन कवल
  श्लैष्मिक – शोधन कवल, व्रण में – रोपण कवल
- **प्रतिसारण भेद** – (4) कल्क, रसक्रिया, क्षौद्र, चूर्ण (सुश्रुत)
  (3). कल्क, अवलेह, चूर्ण, (शार्गधर)
- दूषीविष का लक्षण है – दूष्योदर
  दूषीविष का कार्य है – दकोदर
- **सर्पविष के 7 वेगो के लक्षण –**
  प्रथम वेग – रक्त दुष्टि, द्वितीय वेग – मांस दुष्टि (शोथ)
  तृतीय वेग – मेद दुष्टि, चतुर्थ वेग – विष कोष्ठ में आश्रित
  (7) पंचम वेग – अस्थि आश्रित (प्राण व आग्निदूषित)
  षष्ठम वेग – मज्जा आश्रित (ग्रहणी दूषित)
  सप्तम वेग – शुक्रधातु आश्रित (व्यान वायु प्रकोप)
- **पशुविष चिकित्सा में औषध मात्रा –**
  बकरी व भेड़ में – मनुष्य सदृश्य, घोड़ा व गाय में – दो गुनी
  भैंस व ऊँट में – तीन गुनी, हाथी में – चार गुनी

- **प्रमुख विषाक्त जीव व उनसे दष्ट होने पर लक्षण** –
  कणभ – तीव्र वेदना
  गलगोलिका – हृदयपीडा व अतिसार
  मण्डूक – मुख से पीतफेन प्रवृत्ति
  पिपीलिका – अग्निदग्धवत पीडा
  कृकालक (गिरगिट) – पुरीष भेद
  उच्चिटिंग – स्तब्ध लिंगता
  गृहगोधिका – स्वेदातिप्रवृत्ति
- "कृष्ण व्यक्ति स्वप्न में अपने को गौरवर्णी व गौरा व्यक्ति अपने को स्वप्न में कृष्णवर्णी देखता है" लक्षण है – गरविष का
- गरविष चिकित्सा (चरक) –
  ताम्र चूर्ण से वमन तदन्तर 1 शाण की मात्रा में स्वर्ण का सेवन करावे।
- वैदुर्य, हीरा व पन्ना को विषनाशक बताया गया है।
- "स्वर्ण सेवन किये व्यक्ति पर विष का प्रभाव उसी तरह नहीं होता है जैसे कमल की पंखुडियो पर जल रूक नही पाता है" कथन है – चरक का
- **असाध्य विषाक्त जीव** –
  गलगोलिका – सर्षपिका नामक
  मक्षिका – स्थालिका व काषायी
  मशक – पार्वतीय नामक
  – गोधेरक, श्वेता, अग्निप्रभा, भृकुटी व कोटिक नामक विषाक्त जीव भी असाध्य माने गये हैं।
- **वृश्चिक लक्षण** –
  मन्दविष – अनेक पर्व वाले – दाह व शोथकारक
  मध्यविष – तीन पर्वो वाले, कृष्णवर्णी – जिव्हा शोथ व मलावरोध कारक
  तीव्र विष – 1 या 2 पर्व युक्त या पर्वरहित, नानावर्णी – नासा व रोमकूप से रक्त प्रवृत्ति कारक
- **अधिमन्थ का दोषानुसार लक्षण (सुश्रुत)**
  वाताधिमन्थ – मथ्यतेऽरणिवच्च यत, शिरसोऽर्धञ्च
  पित्ताधिमन्थ – रक्तराजिचितं स्रावि, वन्हिनेवऽवदाह्यते, यकृत्पिण्डोपमं, क्षारेणाक्तिमिव दाहे
  कफाधिमन्थ – नासाध्मान पांशुपूर्णामिवालिम्
  रक्तज – बन्धुजीवप्रतिकाशं, स्पर्शनाक्षम, रक्तमग्न अरिष्टवत शुक्ल भागश्च लक्ष्यते ।
  (नतं कृष्णमुन्नतं शुक्ल मण्डलं – कफज अधिमन्थ – वाग्भट)
- केवल लेखन कर्म योग्य रोग – श्याववर्त्म, कदर्मवर्त्म
  छेदन पूर्वक लेखन योग्य रोग – उत्संगिनी, कुंभिका व वर्त्मशर्करा
- पित्त विदग्ध दृष्टि में देय – त्रिफला धृत
  श्लेष्म विदग्ध दृष्टि में देय – त्रिवृत धृत

- **दोषानुसार प्रतिश्याय लक्षण –**
  वातज प्रतिश्याय – तनुस्रावप्रर्वतिनी गलतालुओष्ठ शोष
  पैत्तिक प्रतिश्याय – सधूमं सहसा वन्हिं वमति च मानवः
  कफज प्रतिश्याय – शूनाक्षो, गलतालुओष्ठ कण्डु
  सान्निपातिक प्रतिश्याय – भूत्वा–भूत्वा प्रतिश्यायो योऽकस्मातनिवर्तते
  रक्तज प्रतिश्याय – ताम्राक्षश्च, गन्धात न वेति, कृमि मूर्ध विकारेण
  दुष्ट प्रतिश्याय – प्रक्लिधती पुर्ननासापुनश्चः परिशुष्यति, मुर्हरानाह्याते चापि मुहुर्विव्रियते तथा।
- पंचसार – दुग्ध, शर्करा, पिप्पली, शहद, धृत
- **दोषानुसार प्रमुख अतिसार लक्षण –**
  पित्तातिसार – वेगान्मांसतोय
  कफंज अतिसार – वेगाशंकी, सृष्टविटकोऽपि भूयः, निस्वनः हृष्टरोमा ।
  शोकज अतिसार – काकणन्ती प्रकाशम्, सगन्धं र्निगंधम वा
- दुर्निवारणीय रोग (सुश्रुत) – श्वास, कास, विलम्बिका KSV
- प्रतिमर्श नस्य के काल – 14 (सुश्रुत), 15 (वाग्भट)
  मात्रा – 2 या 1 बूंद
- रात्रि में नस्य कर्म का निषेध है।
- "ओजक्षय" होता है – मधुमेह, ग्रहणी एवं क्षतक्षीण व्याधि में
- सुश्रुत ने आन्त्रवृद्धि को असाध्य व्याधि माना है।
- विषातुरो में स्वेदन निषिद्ध माना हैं। (केवल कीट विष व दूषी विष को छोड़कर)
- लूताविष में वंसत्वगादि अगद देते हैं।
- उष्णवीर्य हिमस्पर्शी – अम्ल रस (वाग्भट)
- प्लेग की जड़ी है – काण्डीर
- सर्व दोष प्रकोपक ऋतु है – वर्षा ऋतु
- विषमज्वर के भेद – चरक, सुश्रृत – 5
  काश्यप – 5
- बंध्यास्त्री भेद – हारीत – 6, र.र.स. – 9
- "चरकाचार्य" उपाधि दी गयी है – धर्मदास वैद्य को
- आयुर्वेद को षोड़षांग में विभक्त किया – पं0 जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल ने।
- गौरक्ष संहिता के लेखक है – शतसाहस्री
- आग्नेय आयुर्वेद के लेखक है – गंगाधर राय
- वाग्भट ने स्नेह का सर्वश्रेष्ठ अनुपान माना है – लाजा
- सुश्रुत ने कर्षू एवं कूप स्वेद नहीं बताया है।
- गदोद्वेग, ताण्डवरोग, उरस्तोय, औपसर्गिक मेह, खञ्जनिका एवं क्लोम रोग का वर्णन गोविन्द दास सेन ने किया है।
- नाभिकुण्डल का वर्णन आया है – र0र0स0 में RRS
- सदंशी जातहारिणी – पारिगर्भिक

पिशाची जातहारिणी – कामला
- दन्तसम्पत है – 15, अप्रशस्त दन्त है – 5
- पुत्रजननी पर्याय है – लक्ष्मणा का
- नवायस लौह में घटकों की संख्या व अनुपान है–दस, मधु व घृत (10)
- "कालमेध नवायस लौह" का वर्णन किया है – यादव जी आचार्य ने
- Qualitative and Quantitative analysis कौनसी संप्राप्ति है– विकल्प
- शूक धान्य के भेद है – 15
- शहद सेवन का निर्देश है – वर्षा ऋतु में
- मन्थ सेवन का निर्देश है – ग्रीष्म ऋतु में
- **शिवदास सेन की टीकाऐं –**

  चरक संहिता पर – चरक तत्व प्रदीपिका
  चक्रदत पर – तत्व चन्द्रिका
  अष्टांग.हृदय पर – तत्व बोध (उत्तर तन्त्र पर)
  RRS रस.रत्नसमुच्चय पर – तत्वबोधनी
- वृन्दमाधव (8th cent A.D.) – स्नायुकरोग, पारसीक यवानी का कृमि रोग में वर्णन किया है।
- सोढ़ल – अर्क कल्पना एवं कुमार्यासव निर्माण का वर्णन मिलता है।
- योग रत्नाकर (17th cent A.D.) – शीतप्रमेह, उत्फुल्लिका तथा मन्थर स्वर एवं भीमसेनी कपूर का नैत्ररोगों में प्रयोग बताया हैं।
- भाव प्रकाश ने हंसादेक के लिए "अंशुदक" शब्द का प्रयोग किया हैं।
- राजनिघण्टु – अभिधान चूड़ामणि (17th cent A.D.) – नरहरि

  निघण्टु शेष – अभिधान चिन्तामणि (12th cent A.D.) – हेमचन्द्रकृत
- शस्त्र, अनुशस्त्रों में श्रेष्ठ – क्षार

  अनुशस्त्रों में श्रेष्ठ – जलौका
- तालुपात – सुश्रुत – वातज – मस्तुलुंगक्षय भी कहते हैं।

  तालुकण्टक – वाग्भट – कफज – इसमें स्तनपान निषिद्ध है।
- शल्य चिकित्सक के गुण है – 6
- कुमारागार का वर्णन मिलता है – चरक व अष्टांग संग्रह में
- सान्निपातिक ज्वर के भेद – चरक–13, काश्यप–13, सुश्रुत–1
- पागल कुत्ते की जड़ी है – नीलिका
- क्षार निर्माण करना चाहिए – शरद ऋतु में
- हारीत संहिता का वास्तविक नाम है – वैधक सर्वस्व
- तुलसी शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग अष्टांग संग्रह में हुआ है।
- "सर्वार्थसिद्ध" अंजन का वर्णन वाग्भट ने किया है।
- "धातुओं" में यशद का वर्णन सर्वप्रथम शार्गंधर में आया हैं।
- भैषज्य रत्नावली में 4 स्थान एवं 216 अध्याय है। यह ग्रंथ गोविन्द दास सेनकृत है।

VPk प्राकृत - 641
VPk वैकृत - 423

- उर्ध्व गुद का वर्णन अष्टांग संग्रह में मिलता है।
- सबसे प्राचीन संहिता है – क्षारपाणि संहिता
  सबसे बड़ी संहिता है – ब्रह्म संहिता.
- चिकित्सा में विषों के उपयोग का वर्णन सर्वप्रथम वाग्भट में आया हैं।
- आयुर्वेद पंचानन कहा गया है – पं0 जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल को
- अर्वाचीन काल की अन्तिम संहिता है – आयुर्वेद विज्ञानम्
- अष्टांग संग्रहकार रसवृद्धि से श्लेष्म विकारो की एवं रक्तवृद्धी से पित्तज विकारो की उत्पत्ति मानते हैं।
- वाग्भट धातुओं में विशिष्ट दोषों की उत्पत्ति मानते हैं।
  यथा – अस्थि में – वायु दोष की
  रक्त एवं स्वेद में – पित्त की
  व अन्य सभी में – कफ की उत्पत्ति होती है।
- ''सुवर्णद्वीप'' शब्द आया है – मलेशिया के लिए
  ''रत्नद्वीप'' शब्द आया है – श्री लंका के लिए
- चाय के लिए ''श्यामपर्णी'' शब्द का प्रयोग आया है – आयुर्वेद विज्ञानम् में।
- पाचनक्रम में अग्नियाँ – जाठराग्नि → भूताग्नि → धात्वाग्नि
- वात का प्राकृत रस व वर्ण है – कषाय एवं अव्यक्त वर्ण या श्याव वर्ण 6
  पित्त का प्राकृत रस व वर्ण है – कटु व पीत 4
  कफ का प्राकृत रस व वर्ण है – मधुर व श्वेत 1
- वात का वैकृत रस कटु, पित्त का अम्ल एवं कफ का लवण रस हैं। 423
- 'त्रिफला के पर्याय है – फलत्रिक, वरा, श्रेष्ठा व उत्तमा
- ''अमृत संभवा'' पर्याय है – अमृता का (ध0 निघण्टु)
- कपिपिप्पली पर्याय है – अपामार्ग का
- ग्रहणीहर पर्याय है – लवंग का
- CHF में प्रयोग करते है – करवीर व डिजिटेलिस का
  IHD में प्रयोग करते है – अर्जुन व अमृतकलश का
  C.C.F. में प्रयोग करते है – करवीर का
  Hyperlipidaemia में प्रयोग करते है – लहसुन का
- श्रेष्ठ वायु है –
  चरक व वाग्भट – प्राणवायु
  सुश्रुत – उदान वायु
- रंजक पित्त का स्थान है –
  आमाशय – वाग्भट, हृदय – शार्ंगधर, यकृत, प्लीहा – सुश्रुत
- हृद्रोग का कारण है – रस दुष्टि
- ऋतु काल में शरीर का भार – बढ़ता है।
- ''उल्वक'' रोग की तुलना कर सकते है – Aspiration pneumonia

- 'उल्वा' है – Vernix caseosa
- त्रिविध परीक्षा वर्णित है – चरक व भाव प्रकाश मे 3
  षडविध परीक्षा वर्णित है – सुश्रुत में 6
  अष्टविध परीक्षा वर्णित है – योग रत्नाकर में 8
  दशविध परीक्षा वर्णित है – चरक में 10
  चतुर्विध परीक्षा – भा०प्र० 4
- तैल बिन्दु परीक्षण योगदान है – योग रत्नाकर का
- "रोगा : सर्वेऽपिमन्दैग्नौ" कथन है – वाग्भट का
- त्रिविध क्रियाकाल का वर्णन किया है – चरक ने
  षड़विध क्रियाकाल का वर्णन किया है – सुश्रुत ने (व्रण प्रश्नीय अध्याय में)
- वृंहण चिकित्सा भी शमन चिकित्सा है किसका कथन है – वाग्भट का
- काश्यप "आम" को भी कफज नानात्मज विकार मानते है।
- "प्रतिश्याय" एवं 'कास' में किस धातु की दुष्टि होती है – रस की
- रक्तपित्त में किस पित्त की दुष्टि होती है – रंजक पित्त की
  पाण्डु मे किस पित्त की दुष्टि होती है – साधक पित्त की
- देवनागरी में 'क' का अर्थ जल, 'ख' का अर्थ आकाश एवं 'च' का अर्थ पित्त से लिया गया है।
- "अथ रोगाधिकारं धन्वन्तरिणाम क्रियाविधौ" का उल्लेख मिलता है – चरक संहिता गुल्म चिकित्सा अध्याय में ।
- वात व्याधि एवं क्षतक्षीण में पूर्वरूप वर्णित नहीं है –
  अव्यक्त लक्षणं तस्यां पूर्वरूमिति स्मृतम – क्षतक्षीण
  अव्यक्त लक्षणं तेषां पूर्वरूपमिति स्मृतम – वातव्याधि
- चक्रपाणि ने ओज को अष्टम धातु कहा हैं।
- हेम चूर्ण का प्रयोग विषनाशनार्थ बताया है – चरक ने
- मुक्ताद्य चूर्ण का रोगाधिकार है – श्वास (चरक)
- मन्त्र का सम्बन्ध ब्रह्मा से है एवं तंत्र का संबंध शिव से हैं।
- "शुक्रायतं बलं पुंसा 'किसका कथन है – भैषज्य रत्नावली का
  "अग्निमूलं बलं पुंसां रेतोमूलं च जीविताम' कथन हैं – योग रत्नाकर का
- गर्दभास्थि भस्म प्रयोग – श्वित्र में लेपनार्थ
  गजास्थि भस्म प्रयोग – अर्श में लेपनार्थ
- चरक ने ध्वजभंग का, सुश्रुत ने उपदंश का एवं माधव ने फिरंग रोग का वर्णन किया हैं।
- औपसर्गिक मेह का उल्लेख मिलता है – भैषज्य रत्नावली में
- बाह्या स्रोतस की मलायन भी संज्ञा हैं।
- अर्वाचीन मतानुसार कुल पेशी संख्या है – 519
- अष्टांग हृदयकार ने मर्मो के 6 प्रकार बताये है। उन्होंने धमनी मर्म को अतिरिक्त मानते हुए धमनी मर्मो की संख्या 9 बतायी हैं।

- **अग्नियाँ –13**

चरक	सुश्रुत
जाठराग्नि–1	दोषो की अग्नियाँ – 3
भूताग्नि – 5	धातुओं की अग्नियाँ – 7
धात्वाग्नि – 7	मलों की अग्नियाँ – 3
13	13

- स्वरभेद 'व्याधि' एवं लक्षण दोनों हैं।

रोग	दोष	दूष्य	अधिष्ठान	पीड़ा
वातरक्त	वात,रक्त	त्वक, मांस, TMR रक्त	त्वक, मांस, TMS संधि	आखुविष के समान
आमवात	वात, आम	रस	सन्धि	वृश्चिकदंशवत
उरुस्तम्भ	त्रिदोष, आम	मेद	उरू	–
संधिवात	वात	संधि	संधि	–
कोष्टुक शीर्ष	वात, रक्त	रक्त	जानुसंधि	–

- पुरूष के गुण है–
  चरक – 22, सुश्रुत – 16
- स्नायुक रोग का वर्णन मिलता है – वृन्दमाधव में
  स्नायुक कृमि का वर्णन मिलता है – शार्ंगधर में
- कालीयक शब्द का प्रयोग हुआ है – अग्नाश्य हेतु
  कालखण्डा शब्द का प्रयोग हुआ है – यकृत हेतु
- काश्यप ने सर्वप्रथम ओज को "पंचरस" कहा है।
- गर्भ पोषण हेतु मान्य न्याय है – केदारी कुल्या न्याय
- उरूस्तम्भ को चरक ने कफजन्य तथा सुश्रुत ने वातजन्य माना है।
- अम्बर पीयूष शब्द की तुलना कर सकते हैं – ऑक्सीजन से
- अन्धपूतना ग्रह का वर्णन मिलता है – सुश्रुत में
  गन्धपूतना ग्रह का वर्णन मिलता है – योग रत्नाकर में
  दृष्टि पूतना ग्रह का वर्णन मिलता है – अष्टांग हृदय में
- सोमरोग में कदली घृत का प्रयोग किसने बताया है – योग रत्नाकर ने
- कुरण्ड रोग है – वेदना रहित अण्डवृद्धि
- बिल्व फल एवं मूली कच्ची तथा हरीतकी एवं द्राक्षा का फल शुष्कावस्था में लेना चाहिए।
- नाभिपाक एवं नाभिकुण्डल का वर्णन मिलता है – रस रत्न समुच्चय में RRS
- हारीत संहिता में "अर्ध चन्द्रानन" नामक शस्त्र का प्रयोग मृतगर्भ के बाहर निकले हुए बाहु को काटकर निकालने के लिए किया गया है।
  शीर्षाम्बु रोग का वर्णन मिलता है – भैषज्य रत्नावली में
  चन्दन के लिये मलयज शब्द का प्रयोग सुश्रुत ने किया है।
  सूची कर्म की व्यापत्तियाँ – चार होती है

- कर्शनीयानां – गवेधुकान्नं
- मूत्रजननानां – इक्षु
- वातजननानां – जम्बु
- सुख विरेचनानां – त्रिवृत
- कृमिघ्नानां – विडंगं
- कुष्ठघ्नानां – खदिर
- वयः स्थापनानां – आमलक
- वृष्यवातहराणां – एरण्डमूलं
- स्तम्भनीयानां – जल
- रसायनानां – क्षीर धृताभ्यासो
- शोषकराणां – अति स्त्री प्रसंग
- पथ्यानां – प्रशमः
- आयुष्याणां – ब्रह्मचर्य
- वृष्याणां – संकल्पो
- रोगवर्धनानां – विषादौ
- प्रीणनानां – हर्षः
- पुष्टिकराणां – निवृत्ति
- तन्द्राकराणां – अतिस्वप्न
- आहार्याणाम् – गर्भ शल्य
- मृदुभेषजीयानां – बालो
- गर्भधारणानां – सौमनस्य
- विषमचिकित्सानाम् – आम
- दीर्घ रोगाणां – कुष्ठ
- अनुषंगिणां – प्रमेह
- तन्त्राणां – वस्ति
- ओषधीनां – सोम
- अहितदेशानां – आनूप
- चिकित्सांगानां – भिषक
- क्लेशकराणां – लौल्य
- निःसंशयकराणां – वैध समूह
- भयकराणां – असमर्थता
- अमृतानां – आयुर्वेद
- सुखानां – सर्वसन्यास
- विरूक्षणीयानां – उददालक
- पुरीषजननानां – यव
- अम्लपित्त जननानां – कुलत्थ
- मृदु विरेचनानां – चतुरंगुल
- विषघ्नानां – शिरीष
- वातहराणां – रास्ना
- पथ्यानाम् – हरीतकी
- प्राणसंज्ञाप्रदान हेतुनां – वायु
- आहारगुणानां – तृप्ति
- सौमनस्यजननानां – मद्यं
- षाण्ड्यकराणां – शुक्रवेग निग्रह
- सर्व अपथ्यानां – आयास
- अनायुष्याणां – पर दाराभिगमन
- अवृष्याणां – दौर्मनस्य
- श्रमहराणां – स्नानं
- शोषणानां – शोकः
- स्वप्नकराणां – पुष्टि
- बलकराणां – सर्वरसाभ्यासों
- उद्धार्याणां – अजीर्ण
- याप्यानां – वृद्धौ
- दुश्चिकित्स्यानाम् – सन्निपात
- रोगाणां – ज्वर
- रोगसमूहानां – राजयक्ष्मा
- अनुशस्त्राणां – जलौका
- भूमीनां – हिम पर्वत
- आरोग्यदेशानां – मरूभूमि
- आतुरगुणानां – निर्देशकारित्वम्
- वर्ज्यानां – नास्तिक
- वार्त्तलक्षणानां – अर्निवेदो
- औषधीनां – विज्ञानम्
- बुद्धिवर्धनानां – तद्विद्य संभाषा
- अनुष्ठेयानाम् – सदवचन
- तीक्ष्ण विरेचनानां – स्नुक पयः
- शिरोविरेचनानां – प्रत्यकपुष्पा (अपामार्ग)
- हिक्का, श्वास कास पार्श्वशूलहराणां – पुष्कर मूल
- सांग्राही, दीपन, पाचनानां – मुस्तं
- दीपनीय, सांग्राहि सर्वदोषहराणां – अतिविषा
- वृष्यसर्वदोषहराणां – विदारीगन्धा
- ग्रहणीदोषशोषऽर्शोघ्नानां – क्रव्याद मांस

- तृणपंचमूल – पित्तशामक P↓
  वल्ली व कंटक पंचमूल – कफशामक K↓
  वृहत पंचमूल – कफ वात शामक KV↓
  लघु पंचमूल – वात पित्त शामक VP↓
  दशमूल – त्रिदोष शामक T
  मध्यम पंचमूल – कफवातहर KV↓
  जीवनीय पंचमूल – वातपित्त शामक VP↓

वर्ग	श्रेष्ठ हितकर द्रव्य	श्रेष्ठअहितकर द्रव्य
शूक धान्य	रक्तशाली	यवक
शमीधान्य	मुद्ग	माष
जलवर्ग	आन्तरिक्ष जल	वर्षा का जल
लवण	सैंधव	ऊसर लवण
शाक वर्ग	जीवन्ती	सर्षप शाक
मृगमांस	एण	गौमांस
पक्षिमांस	लाव	काणकपोत
बिलेशय मांस	गोधा	भेक
मत्स्य मांस	रोहित मत्स्य	चिलचिम
घृत वर्ग	गौघृत	आविक घृत
क्षीरवर्ग	गौ दुग्ध	आविक्षीर
स्थावरस्नेह	तिलतैल	कुसुम्भ स्नेह
आनूप मृग वसा में	वराहवसा	माहिष वसा
मत्स्य वसा	चुलूकी वसा	कुम्भीर वसा
जलचर पक्षी वसा	पाक हंस	काकमुद्ग
विष्किर वसा	कुक्कुट वसा	चटकवसा
शाखामेद (पत्र भक्षी)	अज मेदः	हस्तिमेद
कन्दो में	श्रृंगवेर (अदरक)	आलुक
फलों में	मृद्विका (द्राक्षा)	निकुच
इक्षु विकारो में	शर्करा	फाणित

– भाव प्रकाश कन्दो में सूरण को श्रेष्ठ मानते है।

- **कुछ प्रमुख अग्रय द्रव्य –**
  - वृत्तिकराणां – अन्नं – आश्वासकराणां – उदक
  - श्रमहराणां – सुरा – जीवनीयानां – क्षीरं
  - वृंहणीयानां – मांसं – तर्पणीयानां – मांस रस
  - ह्रद्यानां – अम्ल – बल्यानां – कुक्कुट
  - वृष्याणां – नक्ररेत – श्लेष्मपित्त प्रशमनानां – मधु
  - वातपित्त प्रशमनानां – सर्पि – वात श्लेष्म प्रशमनानां – तैलं
  - पुंसत्वोपघातिनां – क्षारः – अकण्ठ्यानाम – आम कपित्थं
  - अह्रद्यानाम – आविक सर्पि – अन्न द्रव्य रूचिकराणां – लवण
  - स्वप्नजननानां–माहिष क्षीर – अभिष्यन्दकराणां–मन्दक दधि

- वृष्य उदावर्तहराणां – समधृत सक्तु प्राशाभ्यासो
- अनारोग्यकराणां – वेग संधारणम्
- सर्व अहितानां – असद् ग्रहणं
- शास्त्र अधिगम हेतुनां – आचार्य
- निःसंशयकराणां – दृष्टकर्मता
- दौर्बल्यकराणां – एकरसाभ्यासों
- ग्रहणी दूषणानां – अजीर्णाध्यशनं
- धी, धृति, स्मृति हराणां – मद्याक्षेप
- निन्दित व्याधि कराणां – विरूद्धवीर्य अशन
- अलक्ष्मी मुखानां – रजःस्वलाभिगमन
- वमन, आस्थापन, अनुवासनोपयोगिनां – मदनफल
- अन्नद्रव्य अरूचिकराणां – तिन्दुक
- शोषघ्न, स्तन्यसात्म्यकर – अजाक्षीर
- अग्निवैषम्यकराणां – विषमाशन
- तीक्ष्ण औषध व्यायाम व्यवाय वर्जनीयानां – गर्भिणी
- व्याधिकराणां – मिथ्यायोगो

- **रसक्षय** –
  चरक – ऊँचे शब्दों को सहन नहीं कर पाना, (घट्टते असहते शब्द)
  सु० – हृत्पीडा, कम्प, शून्यता, तृष्णा

- **रक्तक्षय** –
  च० – स्फुटित, म्लान व रूक्ष त्वचा
  सु० – त्वक पारूष्य, अम्लशीत प्रार्थना, सिराशैथिल्यं

- **मांसक्षय** – च० – स्फिक उदर ग्रीवा शुष्कता
  सु० – स्फिक उदर ग्रीवा शुष्कता + धमनी शैथिल्यं

- **मेदोक्षय** – च० – संधीनां स्फुटनं, ग्लानि, तनुत्वं च उदरस्य
  सु० – प्लीहा वृद्धि, सन्धिशून्यता, मेदुर मांस प्रार्थना
  वाग्भट – प्लीहा वृद्धि, कटि शून्यता

- **अस्थिक्षय** – च० – केश, लोम, नख पतनं, संधिशैथिल्यं
  सु० – अस्थिशूलं, दन्त नख भंगे

- **मज्जाक्षय** – च० – प्रततं वातरोगिणे (सदैव वातरोगों से पीडित रहता है)
  सु० – अल्पशुक्रता, अस्थिशून्यता
  वा० – भ्रम, तिमिर दर्शन

- **शुक्र क्षय** – च० – दौर्बल्य, मुख शोष, पाण्डुता, क्लैब्य, शुक्रऽविसर्गश्च
  सु०–मेढ्र वृषण वेदना, चिराद्वा प्रसेक, प्रसेके चाल्परक्त शुक्र दर्शनम

च - V
सु - P
वा - K

- पित्त –

रंजक पित्त –

सुश्रुत – यकृत प्लीहा में स्थिति, वाग्भट – आमाशय

साधक पित्त – सुश्रुत – हृदय में (प्रार्थित मनोरथ की प्राप्ति)
वा0 – हृदय (बुद्धि, मेधा व अभिमान का कारण)

सु.

आलोचक पित्त – सु0 – नैत्र में (रूप ग्रहण)
वा0 – नैत्र में (रूप ग्रहण)
भेल – चक्षुवैशैषिक – चक्षु में
बुद्धि वैशेषिक – श्रृंगाटक (मस्तिष्क) में

भ्राजंक पित्त – सु0 – त्वचा में (छाया, प्रभा का कारण, अभ्यंग परिषेक के स्नेह का पाचन)
वाग्भट – त्वचा में

- पाचक पित्त –

सु0 – पक्वामाशय मध्यं, वाग्भट – पक्वामाशय मध्यं

- कफ –

वा

क्लेदक कफ – वाग्भट – आमाशय में (अन्न संघात व क्लेदन)

अवलम्बक कफ – वाग्भट – उरः प्रदेश में रहकर त्रिक को बल देता है।

बोधक कफ – वा0 – जिव्हा में (रस बोधन)

तर्पक कफ – वा0 – शिरस्थ (ज्ञानेन्द्रिय तर्पण)

श्लेषक कफ – वा0 – संधियों में स्थित (संधि संश्लेषण)

- प्रथमतः चरक ने वात के, सुश्रुत ने पित्त के व वाग्भट न कफ के 5–5 भेदों का नामतः वर्णन किया है।

- वात का विशेष स्थान – चरक – पक्वाशय, सुश्रुत – श्रोणि व गुद
वाग्भट – पक्वाधान, काश्यप – अस्थि मज्जा

- पित्त का विशेष स्थान – चरक – आमाशय
सुश्रुत – पक्वामाशय मध्य
वाग्भट – नाभि
काश्यप – आमाशय

- कफ का विशेष स्थान – चरक – उरः
सुश्रुत – आमाशय
वाग्भट – उर
काश्यप – हृदय

लक्षण		धातुक्षय
सिराशैथिल्य	–	रक्त क्षय (सु0)
सिरापूर्णता	–	रक्त वृद्धि (सु0)
धमनी शैथिल्य	–	मांस क्षय (सु0)
संधिशून्यता	–	मेदोक्षय (सु0)
कटिशून्यता	–	मेदोक्षय (वाग्भट)
संधिशैथिल्य	–	अस्थिक्षय (चरक) व कफ क्षय
अस्थिशून्यता	–	मज्जाक्षय (सु0)
संधिविश्लेष	–	कफवृद्धि व ओजोविस्रंस में
सन्धि वेदना	–	मांसक्षय
संधि स्फुटन	–	मेदक्षय

- सुश्रुत ने वस्ति तोद लक्षण मूत्रवृद्धि व मूत्रक्षय दोनों स्थितियो में माना है।

- **प्राणवायु –**
  चरक – मूर्धा, शिर, कान, जिव्हा, नासिका (क्षवथु, उदगार, श्वसन एवं आहार को निगलना कर्म)
  सु0 – मुख संचारी (प्राणो का अवलम्बन एवं आहार निगरण कर्म)
  वा0– मूर्धा में स्थित, उरः व कंठप्रदेश में विचरण (ष्ठीवन, क्षवथु व निःश्वास कर्म)
  शार्ग0 – हृदय में स्थित

- **उदान वायु –**
  चरक – नाभि व कण्ठ में स्थिति (वाक्प्रवृत्ति, प्रयत्न, ओज व बलवर्णादि का सम्पादन)
  सुश्रुत – ऊपर की ओर गमन करने वाला (भाषण, गान आदि क्रियाऐं)
  वाग्भट– उरः मे स्थान, नाभि, नासा व कण्ठ में गमन (वाक्प्रवृत्ति, प्रयत्न, ओजो, बलवर्ण कर्म)

- **व्यान वायु –**
  चरक – सम्पूर्ण शरीर व्यापी (गति, प्रसारण, आक्षेपादि कर्म)
  सु0 – सर्वशरीर व्यापी (स्वेद व रक्त का स्रवण एवं रससंवहन)
  वाग्भट – हृदय में स्थिति (सम्पूर्ण शरीर चर, गति प्रसारणाक्षेप निमेषादि क्रिया)

- **समान वायु –**
  चरक– स्वेद, अम्बु व दोष वह स्रोतस में आश्रित व अन्तराग्नि के पार्श्व में स्थिति
  सु0 – आमाशय व पक्वाशय में संचरण करती है (अन्न पाचन व मल का पृथक्करण)
  वाग्भट – पाचकाग्नि के समीप स्थिति

- **अपान वायु –**
  चरक – वृषण, वस्ति, मूत्रेन्द्रिय, नाभि, उरू, वंक्षण व गुदा में स्थिति (वीर्य, मूत्र, पुरीष, आर्त्तव व गर्भ का धारण व निष्कासन)
  सु0 – पक्वाधान में स्थिति
  वाग्भट – श्रोणि, वस्ति, मेढ्र में स्थिति

नाम रोग/उपक्रम	चरक	सुश्रुत	वाग्भट व अन्य
लंघन	10		12, हा0 – 6
विपाक	3	2	3, पाराशर–3
द्रव्यों का वर्गीकरण	आहार द्रव्य – 12	द्रव द्रव्य – 10 अन्य द्रव्य – 13	द्रव–6 अन्न–6
स्वेदन	साग्नि– 13 निराग्नि – 10	4/7	काश्यप–8
आमवात	ग	–	मा0–2,3 शा0–4
मधु के भेद	4	8	4
शूक रोग	–	18	मा0–18, शा0 24
आवरण	42	13	22
अग्नि कर्म	–	4	7
व्रण शोथ	–	3, अवस्थानुसार–6	9
पुरूष की लम्बाई	84 अंगुल	120 अंगुल	84 अंगुल
रस से शुक्र बनने में लगा समय	6 दिन	30 दिन	1 दिन
सर्वसर मुख रोग	–	3	भा0प्र0–5, शा0–8
त्वचा	6	7	7, का0–6
सूतिका काल	–	1) मास	का0–6, भा0प्र0–4
प्रमेह पीड़िका	7	10	7,का0–8, भोज–9 शा0–10, मा0–10
शस्त्र कर्म	6	8	13
सर्प भेद	3	5	5
स्थावर विष	21	अधिष्ठान–10 प्रकार – 55	55
औषध सेवन काल	10	10	11,शा0–5,का0–10
व्रण चिकित्सोपक्रम	36	60	–
अन्न प्राशन संस्कार	–	6 मास में	का0–10 मास में
वीर्य दोष	8	11	–
क्रियाकाल	3	6	–
शोष	4	4	4 मा0–7 , शा–6
अर्बुद	–	6	मा0–6, शा0–6
विषम ज्वर	5	5	5, का0–5
गलगण्ड	–	3	मा0–3

निद्रा	6	3	7, शार्ग0–1
उन्माद	5	6	मा0, शार्ग–6
सोमरोग	–	–	शा0–1
संप्राप्ति भेद	6	–	वा0–5, मा0–5
ग्रहणी दोष	4 (ग्रहणी रोग–3)	4	मा0–4
नाडी व्रण	–	8	भा0प्र0–5, मा0–5, शा0–5
अश्मरी	1	4	मा0–4, शा0–4
वातरक्त	दोषानुसार–8, 2	दोषानुसार–4, 1	2, शा0–8
शूल	–	4	मा0–8, हा0–10
क्षय	18	2	शा0–5, हा0–10
वमन, विरेचन व्यापद	10	15	12
वस्ति व्यापद	12	9 (कुल–76)	–
सद्यो या आगन्तुज व्रण	–	6	अ0ह्व0–8, अ0स0–3, मा0–6, शा0–8
स्तन रोग	–	5 व 8	मा0–5
भग्न	–	2 (संधि भग्न–6, काण्ड भग्न–12)	शा0–9
उदावर्त	6	9 व 13	भेल–4, मा0–13, वा0–6
सन्निपातज ज्वर	13	1	मा0–1
परिणाम शूल	–	–	मा0–1
विद्रधि	अभ्यन्तर – 9	बाह्य–6 आभ्यन्तर–10	–
आर्तव दोष	8	11	शा0–8
बाल ग्रह	–	9	12, यो0र0–9, हा0–8
श्वित्र या किलास	3	3	3
रोहिणी	–	5	भोज–2, मा0–3
प्लीहा रोग	5	–	–
गृध्रसी	2	–	–
विष वेग	8	7	–
तृष्णां	5	7	7, मा0–7, शा0–6
छर्दि	5	5	मा0–5, शा0–7
मूर्च्छा	4	6	शा0–4, मा0–6
स्तनपान का निर्देश	जन्म के प्रथम दिन से	चौथे दिन	चौथे दिन

	च.	सु.	वा/इतर
तंत्र युक्ति	36	32	36
अजीर्ण	–	4	शा0–3, मा0–6, का0–3
अरोचक	5	5	मा0–5
अर्श	2 व 8	2 व 6	2, मा0–6
अतिसार	6	6	मा0–6, शा0–7
हिक्का	5	5	मा0–5, शा0–5
अम्ल पित्त	–	–	मा0–2, 3, शा0–3
स्वर भेद	6	6	6, का0–8, शा0–6, मा0–6
श्वासरोग	5	5	मा0–5
तमक श्वास	2	1	–
कास	5	5	शा0–5
हृदरोग	5	4	मा0–5
मद की अवस्थाएँ	3	3	3, मा0–4
मदात्यय	4	4	7, शा0–7
पाण्डु	5	4	5, हा0–8, मा0–5, शा0–5
कुष्ठ	7 व 18, असंख्य	18	18, मा0–18
कामला	2	2	शा0–1
विसर्प	स्थान भेद–3 दोषानुसार–7	5	मा0–7, शा0–9
मूत्रकृच्छ्र	8	8	4, मा0–8
मूत्राघात	13 व 8	12	20*, मा0–13
भगन्दर	–	5	8, शा0–8
प्रतिश्याय	4	5	र0र0स0–6
शिरोरोग	5	11	10, शा0–10, मा0–11
गुल्म	सूत्र स्थान – 5 चिकित्सा स्थान–8	8	मा0–5, शा0–8
रक्तपित्त	दोष भेद से–3 मार्ग भेद से–2	दोष भेद से– 4,7 मार्ग भेद से–2	मा0–मार्ग भेद से–3, भेल–2, शा0–3
वृद्धिरोग (व्रध्न)	3	7	7, मा0–7
श्लीपद	वर्णन है	3	मा0–3
शोथ	2,3,7,4	6	9, मा0–9
प्रमेह	2 व 20	2 व 20	2 व 20

	च.	सु.	वा/इतर
नेत्र रोग	4,96	76	94, भा0प्र0–78, शा0–94, कराल–96, यो0र0–76
नासा रोग	10 का वर्णन है संख्या निश्चित नही है।	31	18, शा0–18, भा0प्र0, यो0र0–34
शिरोरोग	5	11	10, (मा0, विदेह, भा0प्र0, यो0र0, शा0–10)
मुख रोग	4,64 64	65	75, शा0–74, भा0प्र0–67, भोज–65
कर्ण रोग	4	28	25, भा0प्र0, यो0र0–28, शा0–18
धूम्रपान	3	5	शा0–6
क्षुद्ररोग	–	44	36, मा0–43, शा0–60, ब्रम्हदेव–48
अर्श	2,8	2,6	2
ग्रन्थि	6	5	9, शा0–9, मा0–5
शस्त्र	–	20	26
यन्त्र	–	101	115
अनुशस्त्र	–	14	17
नाडी यन्त्र	–	20 (मूल नाड़ी यंत्र–12)	23 व 26
शोथ उपद्रव	7	9	–
कर्णपालीगत रोग	–	5	7
उपयन्त्र (वा०–अनुयंत्र)	–	15 25	21, भोज–9
नपुंसक	4 /8	5	8
गण	–	37	25
महाकषाय	50	–	45
विपाक	3	2	3
वीर्य	2,8	2,8	2 व 8, निमि–15
यन्त्रदोष	–	12	8
अग्रय द्रव्य	152	–	155
प्रायोगिक धूमपान के काल	8	12 4	8

		3	7
निद्रा के भेद	6	6	काश्यप – 7
औषध कल्पनाऐं	5	—	भा0 प्र0 – 6 शा. – 6
आहार भेद	4	—	4, का0 – 4
कुक्षि के भाग	3		
आर्त्तवकाल	5 रात्रि	3 दिन	3 दिन, हारित – 7 दिन
शरीर वृद्धिकर भाव	4	—	17
कोष्ठांग	15	8	8, का0 – 13
विष के गुण	10	10	11
व्रण बन्धन भेद	2	14	15
ऋतुकाल	12 दिन	12	16, भा0प्र0 –16, काश्यप – 12
रजोदर्शन आयु	–	12 वर्ष	का0 – 16 वर्ष, भा0प्र0–12 वर्ष
अस्थि संख्या	360	300	का0 – 360, भेल – 300, आधुनिक – 206
संधि संख्या	200	210	–
स्नायु संख्या	900	900	–
पेशी संख्या	400	500 पुरूष में 520 स्त्री में	आधुनिक – 519
गर्भस्राव संज्ञा	–	4 मास तक	3 मास, भोज – 3 मास तक
नैत्रमण्डल	–	5	4
दौहृदावस्था	तृतीय मास में	चतुर्थ मास में	3 पक्ष से 5 मास तक, का0 – तृतीय मास
अन्नप्राशन संस्कार	–	–	6 मास, का0–10वाँ मास
उपवेशन संस्कार	–	–	5 वाँ महीना, का0 6 वाँ मास
नाभिनाल कर्तन जन्य व्यधियाँ	4	–	2

* वाग्भट चार प्रकार के मूत्रकृच्छ्र, चार प्रकार की अश्मरी व बारह प्रकार के वस्तिदोषों (मूत्राघात) को सम्मिलित मानकर 20 प्रकार के मूत्राघात बताते है।